समय-संकेत

१

कमला चौधरी

जेना कतरल-छाँटल, सजल-बनल फुलवाड़ी उद्यान कहबैत अछि आ जेना-तेना छिड़िआयल फूल-पात, गाछ-वृक्ष जंगलक संज्ञा पबैत अछि, ओहिना जीवनक सुव्यवस्थित स्वरूप उद्यान थिक आ विखंडित रूप जंगल । अपन जीवनकेँ उद्यान बनायब हमरा सभक कर्तव्य थिक । एकरा स्वस्थ मानसिकताक संग व्ररण करी, आनन्द ली । सत्य तऽ ई थिक जे स्त्री-पुरुषमे कियो छोट-पैघ नहि । हँ, स्त्रीक किछु नैसर्गिक गुण हुनका महान बनबैत छनि, जे पैघ-पैघ विद्वान स्वीकार कैने छथि ।

(लेखकीयसँ)

समय–संकेत

(कथा-संग्रह)

आयुष्मान गजेन्द्र जीकेँ
सस्नेह,
कमला चौधरी

कमला चौधरी

अध्यक्ष
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फरपुर

अभिलाषा प्रकाशन
लहेरियासराय, दरभंगा–846001

SAMAY-SANKET
(A Collection of Maithili Short Stories)
By **Kamala Chaudhary**

सर्वाधिकार : लेखिका

प्रकाशक : अभिलाषा प्रकाशन
लहेरियासराय, दरभंगा-846001

संस्करण : पहिल, 2010

मूल्य : 250/-

पोथी प्राप्ति स्थान :
1. **डा० कमला चौधरी**
क्वाटर न०-6, कॉलेज कैम्पस
महंत दर्शन दास महिला महाविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (मिथिला)
दूरभाष : 0621-2246582
मोबाइल : 9905029611

2. **श्री अनुराग कमल (मुकुलजी)**
अधिवक्ता
बलभद्रपुर, लहेरियासाराय
दरभंगा
मोबाइल : 9835486030

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर चौक, दरभंगा

समर्पण



संघर्षक पर्याय प्रातः स्मरणीया मातामही
श्रीमती दुर्गा देवी (दाई)क
ममतामयी आँचरमे ई
शब्द-पुष्प समर्पित

—नुनुआँ

नारी-विमर्शक नारी-लेखनी

मैथिली साहित्यमे महिला-लेखिकाक नितान्त अभाव रहल अछि । किन्तु जहिना-जहिना मिथिला क्षेत्रक महिला लोकनिमे उच्च शिक्षा दिस रुझान बढ़लनि अछि, तहिना-तहिना महिलागणमे मैथिली- लेखन दिस प्रवृत्ति क्रमशः बढ़ैत जा रहलनि अछि । गत शताब्दीक अन्तिम चरणमे अनेक महिला लेखिका सभक मैथिली साहित्यमे अवतरण भेल । ओहिमे एकटा नाम अबैत छनि डा० कमलाचौधरीक ।

श्रीमती चौधरी दीर्घकाल धरि महन्थ दर्शनदास महिला कॉलेज, मुजफ्फरपुरमे मैथिली विभागक अध्यक्ष पदपर रहैत छात्रा लोकनिमे मैथिली-प्रेम जगबैत रहलीह अछि । सम्प्रति बिहार विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक अध्यक्ष ओ उपाचार्यक पदपर कार्यरत छथि ।

आकाशवाणीक दरभंगा केन्द्रक आरम्भिक कालमे मैथिलीक 'गाम-घर' आ 'घर-आङन' कार्यक्रममे कम्पीयरक रूपमे अपन स्वर-परिचय देनिहारि कमलाचौधरी 'स्वाती' नामक त्रैमासिक पत्रिकाक सफल सम्पादन कऽ मैथिली जगतमे अपन साहित्यिक परिचिति स्थापित कयलनि । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक रचना सब छपैत रहलनि आ विभिन्न सेमिनार-संगोष्ठीमे हिनक सहभागिता चलैत रहलनि अछि । हालहिमे हिनक शोध परक विशिष्ट ग्रन्थ 'मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली' प्रकाशित भेलनि अछि जे मैथिली भाषाक भाषातत्त्व ओ कोष-विमर्शक क्षेत्रमे एकटा महत्वपूर्ण योगदान मानल गेल अछि । एहि ग्रन्थमे लेखिकाक वैदुष्य, एकाग्रता, अध्ययनशीलता एवं धैर्य सहित कठिन श्रमक परिचय भेटि जाइत अछि । परन्तु प्रतिभाक वास्तविक परिचय आ साहित्य क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण अवदान सर्जनात्मके साहित्य द्वारा होइत छैक । एहू क्षेत्रमे कमलाजी पछुआयल नहि रहलीह अछि, भनहि पुस्तक रूपमे हिनक सर्जनात्मक कृति विलम्बसँ आबि रहल हो । हिनक कथा सब समय -समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहलनि अछि ।

अत्यन्त प्रसन्नताक बात जे हिनक प्रकाशित-अप्रकाशित चौदह गोट कथाक संग्रह 'समय संकेत' नामसँ प्रकाशित भऽ रहल छनि ।

महिला लेखिकाक लेखनीसँ जेहन आशा कयल जाइत रहल अछि तदनुरूपे कमलाचौधरीक कथा सभमे नारी-चेतनाक स्वर मुखरित होइत देखल जाइत अछि । पारम्परिक सामाजिक मानसिकता ओ नव जीवनमूल्यक बीच चलैत अन्तर्द्वन्द्वक अभिव्यंजनाक संगहि अस्मिताक उत्कर्ष एवं आत्मनिर्भरताक हेतु नारीक संघर्ष-संकल्प आधुनिक साहित्यक सम्पोषक तत्त्व मानल जाय लागल अछि, जे समकालीन वैश्विक सन्दर्भमे स्वाभाविको अछि । निरन्तर आगू-आगू पड़ायल जाइत युगक गति दिस पीठ राखि कऽ आगाँ नहि बढ़ल जा सकैत अछि । साहित्यकेँ जीवन्त ओ गतिमान रखबाक लेल ओहिमे युग-सापेक्षता आवश्यक, सतत समकालीन मनोगतिक अवक्षेपण आवश्यक । साम्प्रतिक घटना-संकुल भारतीय समाजमे नारी-विमर्शक जे प्रवाह चलि रहल अछि, तदनुरूपे कमलाचौधरीक कथा सभमे दू-एक केँ छोड़ि प्राय: सर्वत्र कोनो ने कोनो रूपमे नारिएक प्रधानता देखल जाइत अछि ।

'समय-संकेत'क बिलटी निम्नवर्गक होइते उदात्त विचारक अछि आ गामक आर्थिक विषमता ओ किछु घनी लोकक निसरठतासँ खिन्न भऽ गामसँ पड़ा जयबा लय सन्नद्ध अपन पतिकेँ गामक उज्ज्वल पक्षक प्रतीति करा कऽ रोकि लैत अछि । उजड़ैत गामकेँ नारी वर्ग द्वारा पुनर्वासित करबाक दिशामे ई एकटा संकेत थिक । 'अपराजिता'क यशोधरा अदम्य साहस आ धैर्यक प्रतीक अछि जे बेर-बेर प्रतियागितामे भाग लैत अछि, हारैत अछि, उपहासकेँ हँसीमे उड़ाय फेर भाग लैत अछि । आ अन्तत: लोकगीत प्रतियोगितामे प्रथम स्थान प्राप्त करैत अछि । तेँ ने ओ बेर-बेर पराजित भैयो कऽ अपराजिता अछि । 'बदला' कथाक प्रेमी-पति द्वारा प्रवंचिता पत्नी रीता भादुड़ीक बदला लेबाक संकल्प अंतत: दया ओ क्षमामे परिणत भऽ जाइत छनि, जे हुनका नारीक कोमलतम संवेदनाक प्रतीक बना दैत छनि । 'युद्ध' कथाक नायिका मिसेज दास आ 'गुणन फल'क नायिका मीरा बदलैत सामाजिक मूल्यक सामना करैत अपन पैर पर ठाढ़ भऽ अपना रीतिसँ जीवन जीबाक सन्देश दैत अछि ।

निम्नवर्गक गरीब प्रीताक सोच, आत्मविश्वास आ आचरण ओकरा अपन मालकिन मेमसाहेबसँ उच्च व्यक्तित्व प्रदान कऽ कऽ वास्तवमे 'पैघलोक' ओकरे बना दैत छैक । 'कालचक्र' क मंजू 'धूरी' क शीला तथा 'आकांक्षा' क छवि जीवनान्धकार मे एकटा किरण-रेखा पकड़ि अपन भावी जीवनक प्रशस्त-पथक निर्माण कऽ नारी-समाजकेँ अन्धकारसँ प्रकाश दिस बढ़बाक प्रेरणा दैत छथि । 'बाटे बिलायल पानि' क मालती पति एवं पुत्रक मध्य निरन्तर सौमनस्य ओ सामंजस्य स्थापित करबाक चेष्टा करैत छथि । परन्तु अन्तत: युवा पुत्र परिमलेक कमजोरो विचारक आगाँ झुकऽ पड़लनि । परिमलक पिता देवकीबाबूकेँ परिमलक विचारानुसार डेग उठबऽ पड़लनि । बाल विधवा 'गुलाब काकी' सब दिन समाजक समक्ष अनुन्तरित प्रश्न बनि कऽ ठाढ़ि रहैत अयलीह अछि ।

दू गोट कथा 'अहिबातक हाट' तथा 'दृष्टिकोण' कन्या-विवाहक समास्यापर केन्द्रित अछि । विखण्डित अन्धविश्वास, ध्वस्त होइत नीक-अधलाह सामाजिक परम्परा, वैचारिक विस्तार, भौतिक विकास, तीव्र वैश्वीकरणक एहू युगमे कन्यादान एकटा जटिल समस्या बनि कऽ अचल रूपमे ठाढ़े अछि । स्थिति नित्यश: विकरालसँ विकरालतरे भेल जा रहल अछि । एहन स्थितिमे 'अहिबातक हाट'क अमोला रूढ़िवादी व्यवस्थाक विरोधमे अविवाहित रहबाक अत्यन्त साहसिक निर्णय करैत अछि । दोसर दिस 'दृष्टिकोण'क नायिका रंजना बैसाखीक आश्रय लऽ चलनिहार एकटा सिद्धहस्त सहृदय गुणी चित्रकार राकेशक प्रस्तावकेँ स्वीकार कऽ विवाह कऽ लैत अछि । आ एहि तरहेँ समाजक समक्ष एकटा नव दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत अछि । 'निर्णय' कथामे 'गुलाब काकी'क यक्षप्रश्नक एकटा साहसिक उत्तर ताकल गेल अछि विधवाक पुनर्विवाहमे ।

एहि संग्रहक अधिकांश कथाक परिवेश ओ वातावरण नगरीय अछि । परन्तु अवश्ये किछु कथाक सम्पूर्ण एवं कतिपय कथाक आंशिक भाग ग्राम्य परिवेशमे घटित होइत अछि । ग्राम्य परिवेशक कतोक बिन्दु अवश्ये मनकेँ छूबि जाइत अछि । 'गुलाब काकी'मे वर्णित कोनो विधवाक दुरागमन आँचरमे लोटा बान्हि कऽ कयल जयबाक विधि एखनुक बहुतो वृद्धो महिला लोकनिकेँ साइते बूझल होइनि ।

लेखिकाक ई प्रथम कथा-संग्रह थिकनि जे प्रकाशमे आबि रहल छनि । परन्तु एतबहिसँ ओ अपन लेखकीय बुभुक्षाक सन्तृप्ति-सन्तुष्टि-बोध नहि कऽ कथा-लेखनकेँ निरन्तर गतिशील बनौने रहथि । कथाक वास्तु-शिल्प, चरित्र-मूर्त्तिक गढ़नि, वातावरणीय कैनवासक रंग-रेखमे निखार अनैत नारीवर्गक विरोध-अनुरोध, प्रवंचना-प्रबोध, अपमान-सम्मान, जय-पराजयक अभिव्यंजना करैत जाथि, एहन अपेक्षा लेखिकासँ राखब अनुपयुक्त नहि मानल जायत ।

आशा अछि जे मैथिली साहित्य जगतमे श्रीमती कमलाचौधरीक एहि कथा-संग्रहक हार्दिक स्वागत द्वारा लेखिकाक उत्साहवर्द्धन अवश्य कयल जायत ।

श्रीरामदेवझा
पूर्व विश्वविद्यालय प्राचार्य (मैथिली)
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
तथा
पूर्व मैथिली-प्रतिनिधि-सदस्य
साहित्य अकादेमी
नई दिल्ली

कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
30 नवम्बर, 2010

लेखकीय

कथा कहब आ सुनब सभ दिनसँ लोककेँ एकटा विशेष आनन्द प्रदान करैत आयल आछि आ तेँ कथा रचना साहित्यक सभ विधासँ बेसी लोकप्रिय भेल । हमरो कथा पढ़ब ओ सुनब बेसी रुचिगर लगैत अछि आ तेँ किछु कहबा लेल यैह विधा पसिन पड़ैए । आइ मोन पड़ैत छथि मैथिलीक वरद पुरुष स्व० कृष्णकान्त मिश्र (संपादक, वैदेही), ओ बेर-बेर तगेदा करैत किछु कथा हमरासँ लिखा लेने रहथि, जे वैदेहीमे छपल रहए । हमर कथाक केन्द्रमे प्रायः एहन स्त्री-पात्र सभ छथि जे स्वाभिमानक संग अपन कोमलता ओ स्त्रीत्वक रक्षा करैत परिवार ओ समाजक प्रति दायित्वक निर्वाह करय जनैत छथि ।

ओना स्त्रीकेँ सभ दिनसँ देवीक रुप मानल गेल अछि मुदा वास्तविक धरातल पर बहुतो स्त्री जाहि परिस्थितिकेँ जीवैत-भोगैत छथि ओ बहुत कारुणिक रहल अछि । इहो सत्य अछि जे समाजमे पैघ परिवर्तन आयल अछि, दोसर शब्दमे कही तँ बिहाड़ि उठल अछि । स्त्री शिक्षाक दिशामे जे जागृति भेल अछि से प्रशंसनीय थिक मुदा जहिना परिवारक प्रति स्त्रीक दायित्व बनैत छनि, तहिना परिवारोक दायित्व स्त्रीक प्रति छनि । बिना एहि सोचक ई परिवर्तन सफलीभूत नहि भऽ सकत ।

एकटा बात आओर जे स्त्री स्वतंत्रताक तात्पर्य उन्मुक्तता नहि होयवाक चाही । पारिवारिक महत्वकेँ बूझैत ओकर आदर्श स्वरुप उपस्थापित करबाक दिशामे स्त्री ओ पुरुष दुनूमे समान रुपसँ कर्त्तव्य-बोध होयब आवश्यक ।

जेना कतरल-छाँटल, सजल-बनल फुलवाड़ी उद्यान कहबैत अछि आ जेना-तेना छिड़िआयल फूल-पात, गाछ-वृक्ष जंगलक संज्ञा पबैत अछि, ओहिना जीवनक सुव्यवस्थित स्वरूप उद्यान थिक आ विखंडित रूप जंगल । अपन जीवनकेँ उद्यान बनायब हमरा

सभक कर्त्तव्य अछि । एकरा स्वस्थ मानसिकताक संग वरण करी, आनन्द ली । सत्य तऽ ई थिक जे स्त्री-पुरुषमे कियो छोट-पैघ नहि । हँ, स्त्रीक किछु नैसर्गिक गुण हुनका महान बनबैत छनि, जे पैघ-पैघ विद्वान स्वीकार कैने छथि ।

अपना देशमे, प्रमुखतः बहुसंख्यक हिंदुमे, तैंतीस करोड़ देवी-देवताक अस्तित्व मानल गेल अछि, जाहिमे भगवानक रूपमे प्रायः पुरुषेकेँ देखल गेल अछि । ओ विष्णु होथि, शिव होथि अथवा राम वा कृष्ण । मुदा आश्चर्य जे कोनो कामना हेतु लिंग-भेद पूर्णतः समाप्त भऽ जाइछ । भक्त चाहे पुरुष होथि वा स्त्री, कामना पूर्ति हेतु भगवती शरणमे जाइत छथि । धनक कामना हेतु लक्ष्मी, विद्याक कामना हेतु सरस्वती आओर शक्तिक कामना हेतु दुर्गा अथवा कालीक पूजन कयल जाइछ । एही देशमे इहो कहल गेल अछि- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः, अर्थात् जतय नारीक पूजा होइछ, ओतय देवता निवास करैत छथि ।

मुदा एहीठाम कन्या भ्रूणहत्या सन जघन्य अपराधक घटना देशक कोन-कोनसँ सुनवा ओ देखबामे अबैछ । एकर दुष्परिणामक सम्बन्धमे सेहो बहुतो कहल ओ पढ़ल जाइत अछि, तथापि की ई समाप्त भेल ? बिहारक की कहल जाय जे हरियाणा ओ पंजाब सन उद्योग-प्रधान राज्यमे सेहो कन्या भ्रूणहत्याक खबरि साधारण बात अछि । एहन परिस्थितिमे कोनो सरकार केहनो कानून बना कऽ हमरा सभक मदति नहि कऽ सकैए । महिलाक सम्मान करब हमरा सभक संस्कार रहल अछि, आगूओ रहबाक चाही, कारण माय, बहिन, पत्नी, बेटी सभ परिवारकेँ चाही ।

इहो सुनल-पढ़ल जाइत अछि जे स्त्रीक दुश्मन स्त्रीए होइत छथि मुदा एकरो कारक तथ्य विचारणीय, कारण कोनो व्यक्ति विशेषक नीक अधलाह सोचक पाछाँ हुनक शिक्षा-दीक्षा, वातावरण ओ संस्कार काज करैत छनि । कोनो एहन स्त्री जिनका फुलवा-फलबाक हेतु सही वातावरण नहि भेटि सकलनि, जिनका स्नेह ओ सम्मानक कोनो स्पर्श नहि भऽ सकलनि, हुनका तँ कोनो सम्पूर्ण व्यक्तित्वक संग जिबैत शिक्षित स्त्रीकेँ देखि ईर्ष्या होयब स्वाभाविक छनि । एहन स्त्री प्रायः अंधविश्वासी आ घोर परम्परावादी होइत छथि । कहि सकैत छी जे एहि तरहक स्त्रीक जीवन संशय आ द्वन्द्वक बीच फँसल रहैत छनि । आत्मविश्वासक कमी रहबाक कारणें ओ अपन कोनो स्वतन्त्र सोच नहि राखि पबैत छथि । ई एक प्रकारक मनोरोग थिक । एहि सभ बात बिचारमे हुनकर कोनो दोष नहि । दोष अछि ओहि वातावरणक, ओहि कुंठित संस्कारक जे हुनकामे कुंठा आ वैमनस्य भरि दैत छनि ।

अपन चारू कात जे किछु देखलहुँ अथवा अनुभव कयलहुँ, सएह हमर कथाक आधार थिक। स्त्री-पात्र हमरा विशेष आकृष्ट करैत छथि आ तेँ हुनकहिसँ सम्बन्धित घटना ओ समस्या कथाक मूलमे अछि। ओना कहबा लेल आओर बहुत किछु अछि, जे सम्भवतः आगाँ कहि सकब। मुदा जे किछु एहिमे कहलहुँ अछि से जँ पाठकके नीक लागि सकलनि तऽ हमर श्रम सार्थक होयत।

गुरुवर डा० रामदेव झाक प्रेरणा आ आशीर्वाद हमरा सतत भेटैत रहल अछि। हुनका प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करब मात्र औपचारिकता होयत। डा० झा एहि कथासंग्रहक भूमिका लिखि एकर गरिमा बढ़ाओल अछि।

एहि समय मोन पड़ैत छथि आदरणीय मंत्रनाथ झा 'हंसराज', जनिकासँ सर्वप्रथम अपन कथाक मादे गप्प कयने रही। ओ हमर किछु कथाकेँ पढ़ि अपन सुझाओ दऽ हमरा कृतार्थ कयने रहथि। श्रद्धेय डा० भीमनाथ झाक सहयोग आ प्रोत्साहन हेतु आभार शब्द छुछुआओन लगैत अछि।

डा०योगानन्दझा एवं सहपाठी डा०मुरलीधरझाक सहयोग बिसरबा योग्य नहि अछि। अनुजवत डा० नरेन्द्रनाथझाक सहयोग अविस्मरणीय रहत। अपन परिवारक सदस्य सभक जे बहुमूल्य सहयोग हमरा भेटल अछि, तकर प्रतिदान सम्भव नहि। पौत्र चिरंजीवी सुमुख आनन्दक आकुलता देखितहि बनैत अछि। ओ पोथीक आकार-प्रकार एवं मुखपृष्ठक हेतु सेहो रंग ओ चित्रक सुझाओ हमरा दैत रहैत छथि। दौहित्री हर्षा ओ दीपाकेँ पोथी प्रकाशनक मादे सदैव जिज्ञासा रहैत छनि।

आभारी छी ओही स्त्री-पात्र सभक, जिनक स्वरूप ओ परिस्थिति हमर कथाक आधार बनल। पुस्तक प्रकाशनमे सहायक समस्त गुरुजन ओ सुहृदजनक प्रति कृतज्ञ छी। श्री संजु जी (प्रिंटवेल, दरभंगा) केँ सहयोग हेतु धन्यवाद।

विवाह पंचमी

10 दिसम्बर 2010

कथा-क्रम

समय-संकेत

सुखनाक स्वरसँ बिलटीक निन्न उचटि गेलैक । नहिञो चाहैत उठि कऽ फड़की खोलि देलकैक मुदा सुखनाक लटपटाइत बोल आ चढ़ल आँखिसँ बुझबामे भांङठ नहि रहलैक जे ओ फेर निसाँ-पानि चढ़ा कऽ अयलैक अछि। तामसेँ नहि रहल गेलैक बिलटीकेँ ।

-फेरो निशाँमे भेर छै की ? जाउक दारू भट्टीएमे राति बितबौ गऽ । कोन खगता छै घर अबैक ...! आइसँ ने तोँ हमर भतार ने हम तोहर मौगी .....।'

ओहिना ठाढ़ भेल पत्नीक फटकार सुनैत रहल सुखना । आन दिन रहैत तँ ओहो चिकरि कऽ देखा दितय । मुदा, आइ तँ जीह जेना तारुएमे सटि कऽ रहि गेलैक अछि । मुरुत जकाँ ठाढ़ रहलैक सुखना । बिलटी बड़बड़ाइत आङनमे ओछाओल पटियापर सुतल डोमरा लग जा कऽ पड़ि रहलैक ।

सुखनाकेँ पिआसे कंठ सुखाइत रहैक, मुदा पानि मङबाक साहस नहि भेलैक । लटपटाइत डेगेँ आङनसँ बाहर भऽ दलानपर लागल सरकारी कल लग ठाढ़ भेल । तीरो घैलमे पानि भरैत रहैक । सुखनाकेँ देखलक तँ घैल हटा पानि पीबाक आग्रह कयलकैक । सुखना कल जोड़ि पानि पिबए लागल । गट-गट, गटा-गट ।

-मर, नोन फँकलकैए की ? ' तीरो विस्मित होइत पुछलकैक ।

कंठतर पानि गेने जेना सुखनाक जीह तारु परसँ हँटलैक ।

हमरा आउर के नोनो भेटि जाय तँ बहुत छै, तीरो । हमरा आउर मनुक्ख थोड़े छी, जानवर छी जानवर -ने पढ़ल ने गुनल, ने कोनो पूजा ने पाठ । देखही

ने...एगो मनुक्ख छै राजा बाबू .... दू सेर सुच्चा दूधक खोआ जलखै करै छै । एगो हमरा आउर भरि दिन रौदमे घास छिलैत चानि पका लैत छी ... मुदा कंठमे दूधक एक घोँट जायब मोसकिल ....।'

–तोहूँ करह पूजा-पाठ.........अगिला जनम पैघ लोक होयबह........सुच्चा खोआ जलखै करिहह । हुँः, सूती खड़तरपर आ सपना देखी महल के, भने कहलकै जे.......' –डाँड़पर घैल लैत तीरो बाजलि ।

–ऐ जनम किए ने मिलत तीरो ? मेहनति मजूरी करी हम आ मौज करय दोसर ?' –नेता जकाँ तेज स्वरमे बाजल सुखना ।

– सुतौ गऽ...., राजा बाबूक कानमे केओ सुनगा देतै। तोरा एखनी होस-हवास नहि छौ ।'– तीरो झटकल डेगे आङन विदा भेलि ।

सुखना डगमगाइत बढ़ल आ सड़कक ओहि कातक दलानपर जा कऽ नीचाँमे ओंघरा गेल ।

–रे सुखना, खेत दिस जाइक छौ कि नहि ?' –महंथा बड़द खोलैत जोरसँ हाक देलकैक ।

सुखना टटैनी मोड़ लैत डाँड़मे हथोड़िया देलक । खैनीक डिब्बी नहि भेटलैक । चारूभर नजरि दौड़बैत आङन दिस गेल । स्वर अनायास मिठा गेल छलैक ।

–डोमरा माय! चारि आना पैसा छौ ? दे तँ .....।' आगाँ किछु नहि बाजि भेलैक। अङनाक दृश्य देखि ठकमूड़ी लागि गेलैक ।

बिलटी कोरामे दू बरखक डोमराकेँ लेने कनैत रहैक । रधिया माय सेहो ओतहि बैसलि रहय ।

–डोमराक हालति नीक नै छौ सुखना ! जो मालिकसँ सय-पचास नेने आ । एकरा डागडर ओतऽ लऽ जाय पड़तौ .....।' –रधियामाइक स्वर छलैक ।

किछु क्षण सुखना ओहिना ठाढ़ रहल ।

–सभ एही अलच्छीक चलते होइ छै । कतेक बेर कहली एकरा जे चल डिल्ली, छोड़ गाम । मुदा एकरा मालिक बाबू आ मलिकाइनक गोड़ नै छोड़ल

जाइ छै । आब लबौ जा कऽ रुपैया । देखिऐ जे भरि दिन छौंड़ाकेँ छोड़ि राजा बाबूक बच्चाकेँ जे दूध पिऔलकै, तकर कनियो आँखिमे पानि छै कि नहि !'

सुखनापर जेना किछु सवार भऽ गेल छैक ।

फेर किछु सोचि झटकल डेगेँ आङनसँ बाहर भेल । दौड़ल निछोहे जाने ....आ राजा बाबूक दलान लग आबि ठाढ़ भेल ।

आँङनसँ गीत आ ढोल बजबाक स्वर अबैत रहैक । दुरुखा लग जा देखलक तँ आङनमे पमरिया बच्चाक बधाइ गाबि रहल अछि । राजा बाबूक माय, पितिआइन आ बहिन ओकरापर पाइ लुटबैत छलीह । पमरियाक आगाँ नूआ, बर्त्तन आ पाइक ढेरी लागल जाइत रहैक । बड़ ध्यानसँ देखलक ओहि ढेरीकेँ आ फेर ध्यान गेलैक दलान दिस । राजा बाबू दोस-महिमक संग बैसल मिसरी बदामक संग भांगक शर्बत पिबैत रहथि ।

सुखनाकेँ ने आगाँ बढ़ल होइक ने पाछाँ । बड़ी कठिन घड़ी छलैक । आँखिक आगाँ डोमरा नाचि गेलैक । कहुना कऽ साहस जुटबैत मालिक लग ठाढ़ भेल ।

–के सुखना ? बिलटी आइ हबेलीपर किए ने अयलौ ? तोँ सभ बड़ ढीठ भऽ गेल छैँ । मुदा हमरा चिन्हि राख.....' –राजा बाबूपर भांगक रंग चढ़ि चुकल छलनि ।

–डोमराक हालति नीक नै छै मालिक ! किछु पैँच दिती....सधा देब ।'

–चुप । तोँ की सधयबेँ ? तोरा सभकेँ रीन देबापर रही तँ घरक खपड़ो उठा कऽ लऽ जयबेँ । '– राजा बाबूक उपेक्षित स्वर छल ।

–नहि मालिक ! सत्त मानू । एखन काज चला दिअऽ । दूध दिते छी ....।' –सुखनाक तीतल स्वर छल ।

आङनसँ गीतक स्वर घनगर भेल जाइत रहैक । तखने दलानपर एकटा जीप आबि रुकल । ओहि परसँ एक व्यक्ति उतरैत कहलनि– चलल जाओ सरकार ! सभ व्यवस्था भेल अछि । माछक फरीसँ गाड़ी भरि जायत ।'

–अहाँ लोकनिक आग्रह तँ चलल जाय ।' राजा बाबू ठाढ़ होइत बजलाह ।

–मालिक ! हमर ....विनती ......।' –सुखनाकेँ आगाँ नहि बाजि भेलैक ।

तखने जीप घड़घड़ा उठलैक । सुखनाक आँखिक आगाँ धुआँ भरि गेलैक । आब की करत ? ककरा आगाँ हाथ पसारत ? परशुराम बाबू तँ पहिनहिसँ आमिल पीने छथि ।

छौ माससँ ओ एकरा अपन हरबाह राखऽ चाहैत छथि । सुखनाक मोन डोलल रहैक मुदा एहि बातपर बिलटी बड़ गंजन कयने रहैक ओकर । मोन पड़ि गेलैक बिलटीक कहनाम – 'दुरे दुरे तीमन खायसँ नीक जे एगो हबेली धऽ कऽ रही । छोट-लोक छी तँ की ? हमरो आउरकेँ किछु अपन इज्ज़ति-धरम हय कि नै ? हमर बात कान खोलि कऽ सुनि लौ । तिमनचिक्खा भतार हमरा नहि चाही । फेनो जे एहन बात बजलै तँ हम इनार-पोखरि धसि जेबै । तखन जहलमे जाँत पिसैत रहिहौक ।'

–हुँः, बड़ा सती पतिबरिता बनै छै । देखौ आबि कऽ अपन मालिक बाबूकेँ ।' सुखनाक भीतर बिर्रो उठल छलैक । नहि, आब किन्नहु नहि रहत एहि गाममे । बिलटीके घिसिया कऽ लऽ जायत एहि गामसँ । आब ओकर किछु नहि सुनत । सुखना आक्रोशसँ भरल दौड़ल टोल दिस ।

टोलक सिमान लग पहुँचल तँ देखलक जे मास्टर साहेब डागदरक संग ओकर आङनसँ बहरायल छलाह । संगमे जगदेव सेहो छल । सुखना दौड़ि कऽ पहुँचल मास्टर साहेब लग । ओ हकमि रहल छल । मुहँसँ बोल नहि फुटलैक ।

–डाक्टर साहेब स्कूलपर आयल छलाह । जगदेव तोहर बच्चा दऽ कहलक । तेँ एतऽ लेने अयलियनि । चिंताक कोनो बात नहि, दवाइ पड़ि गेल छै ।' – सुखनाक पीठपर हाथ रखैत मास्टर साहेब कहलथिन ।

सुखना आङन जा कऽ देखलकै । डोमरा निन्नमे भेर छैक । बिलटी ओकरा सिरमामे बैसलि अछि । दुनू एक- दोसराकेँ बड़ी काले देखैत रहल । किछु कहबा लेल जेना दुनूकेँ किछु नहि रहैक । मुदा सुखना मनेमन अपन निर्णयकेँ दोहरबैत रहल ।

दोसर दिन सन्ध्याकाल । बाट धयने जाइत मास्टर साहेब डोमराक जिगेसामे आङन अयलाह । बिलटी हुनकर पयरपर खसि पड़लि ।

–डोमरा आब नीके छै बाबू ! अहाँक उपकार हम जनम भरि नै बिसरब मालिक !'

–एहिमे उपकारक कोन बात ! ई तँ सभ मनुक्खक काज थिकै बिलटी ।' – मास्टर साहेब बिलटीकेँ पयरपरसँ उठबैत कहलथिन्ह ।

–नै मास्टर साहेब ! मनुक्ख तँ राजा बाबू सेहो छथि ! अहाँ तँ देवता छी । अहाँक ऋण हम कहियो नहि सधा सकब । मुदा हमरा माफ करब बाबू ! काल्हि हम गाम छोड़ि जा रहल छी..... ।' सुखनाक कंठ भारी भऽ गेलैक ।

–मुदा, एना गाम सभ छोड़ऽ लागत तँ गामक की हेतै सुखना ? जमीनक असली हकदार तँ तोँही सभ छेँ । तोरे सभक मेहनति आ पसेनासँ पटाओल जाइत अछि ई भूमि । तोँही सभ नहि रहबेँ तँ ई भूमि मरुभूमि भऽ जायत । तोँ सभ पृथ्वीपुत्र छेँ । तोरा सभक नहि रहलासँ पृथ्वी बाँझ भऽ जयती । अपन मायकेँ बाँझ कहबैत की नीक लगतौ सुखना ? एना जुनि सोच.......... ।'

सुखनाकेँ रोकबाक लेल मास्टर साहेब जेना कटिबद्ध छलाह । सुखना मास्टर साहेब दिस मूक भेल ताकि रहल छल ।

–कने अहीँ एकरा बुझबियौ, बाबू ! एकरा तँ डिल्ली आ कलकत्ता जयबाक भूत चढ़ल छै । ऊँच-नीच सभ ठाम होइ छै बाबू ! मुदा अपन धरतीक बाबति कतहु अनतय हेतै ?' – बिलटी गह्वरित होइत कहलक ।

–बिलटीक कहब ठीक छै, सुखना ! एतऽ गामक स्कूलपर, इनार-पोखरिपर, पंचायतपर तोरो ओतबे अधिकार छौ, जतेक राजा बाबूक छनि । अपन डीह-डाबर आ अधिकार छोड़ि कऽ तोरा कतहु नहि भगबाक छौ ।' –निर्णयात्मक स्वरमे कहलथिन मास्टर साहेब ।

–मुदा जाहि मालिक बाबू लेल रौद-पानिमे सोनित सुखबै छी, हुनका लेल हमर कोनो मोल नहि । बिलटी मालिकक बच्चाकेँ दूध पिऔने छै, मुदा....'

–मोल छै सुखना । ओ मोल समय चुकाओत । आइ समय संकेत दऽ रहल अछि जे आबऽवला जमाना तोहर सभक छौ । जे अधिकार आ सम्मान तोरा सभकेँ राजा बाबू नहि देलथुन से हुनकर धीया-पुता देतौ । राजा बाबू तोहर सभक ऋणी छथि । बखारीक बखारी अन्न उपजा कऽ तोँ दैत छहुन । भरि-भरि दिन गाय महिँसकेँ चरा कऽ डोलक डोल दूध तोँ पहुँचबै छहुन । तोहर शरीरक पसेना जे धरतीपर खसैए से अनमोल अछि । अपन मोलकेँ पहिने अपने चिन्ह सुखना ....' –मास्टर साहेब भावावेशमे बजैत गेलाह ।

रधिया माय आ जगदेव सेहो ओतऽ पहुँचि गेल छल । सुखना मास्टर साहेब दिस टुकुर-टुकुर तकैत छल ।

-गाममे खाली राजे बाबू तँ नहि छथि । एही ठाँ मास्टर साहेब सन लोको छथि । .... गरीबक बेर-बिपत्तिमे ठाढ़ होइत छथि । रधिया माय आ जगदेव सनक हितलग्गू लोक सेहो तँ एही गाममे छैक । तखन गाम किए छोड़ब ?' सुखनाकेँ सम्बोधित करैत बिलटीक दृढ़ स्वर छलैक ।

सुखना एक बेर बिलटी दिस आ फेर मास्टर साहेब दिस तकलक ।

-ठीके कहै छै बिलटी, बाबू ! एही गाममे अहाँ सन देवतो तँ छै । रधिया माय आ जगदेव सन मीत छै । तखन किए छोड़ब गाम ? बाबू, हम गाम नहि छोड़ब। अहाँ ठीक कहै छी जे हमर पसेनाक मोल, बिलटीक दूधक मोल आबऽवला समय चुकऔतैक...... ।' हाथ जोड़ने सुखनाक कंठ भरि गेलैक ।

मास्टर साहेब सुखनाक जोड़ल हाथकेँ अपन दुनू तरहत्थीक बीच दाबि लेलनि । आ, फेर हाथ छोड़ैत घरक बाट धयलनि । बथान दिस दौड़ल जाइत बड़दक झुंड आ खोँता दिस हुलसैत उड़ैत जाइत चिड़ै-चुनमुन्नीक स्वर आइ मास्टर साहेबकेँ किछु बेसी नीक लागि रहल छलनि ।

●

पैघ लोक

स्टेशनपर पहुँचि प्रीता चैनक साँस लेलक आ कतबहि ताकि एकटा बेंचपर बैसि गेलि । करेजक धुकधुकी किछु कम भेलैक । फगुआमे गाम जाइत परदेसियाक भीड़ चारू कात पसरल छलैक । रंग-बिरंगक कपड़ामे मोटा-चोटा लेने लोक प्रीताकेँ बड़ नीक लगलैक । गामपर बहु-बेटी बाट तकैत होयतैक । भने तँ कहैत छैक 'परदेसियाक नारि सदा दुखिया... ।'

एक तँ फगुआक समय आ दोसर भोटक हुम्मा-हुम्मी ! इहो भोट बड़का लोकक बेस खेल होइत अछि ! प्रीता एहि खेलक माने नहि बुझि सकलि आ ने बुझऽ चाहैत अछि । चौकस आँखिए चारू कात नजरि खिरौलक । नहि, आब ओकरा केओ नहि पकड़ि सकैत अछि । कतेक मोश्किलसँ आइ मुक्ति भेटलैक । 'हे भगवती, लाज राखब । कोनो तरहेँ अपन जनमथान तक पहुँचा दिअऽ... ।' प्रीता मोने-मोन गोहराबऽ लागल छल ।

स्टेशनपर लागल गाड़ीमे माल-जाल जकाँ लोक कोंचल रहैक । ओह, कतेक लोक भेल जाइत छैक, सुआति सभ वस्तु निपत्ता भेल जाइत छैक । तखनहि कतहु जोरसँ हल्ला भेलैक, धड़...धड़...पकड़ । ककरो जेबीसँ जेबकट्टा रुपैया लऽ लेलकैक । एकटा बड़का झुण्ड कोनो पड़ाइत छौड़ा दिस दौड़ल आ ओकरा पकड़ि अधमौगति कऽ देलकैक । ओहि छौँड़ाक चीत्कार सुनल नहि जाइ प्रीताकेँ । ओहो तँ ककरो बेटे होयतैक । एकरो लेल तँ फगुआ छैक । कसैया सभ जाने लऽ कऽ छोड़तै । दाँतपर दाँत बैसा ओ ओम्हरसँ ध्यान हटबऽ चाहलक ।

मुदा जँ ओकरो हाथक झोड़ा केओ छीनि लेअय ? नहि....नहि । झोराकेँ आँचरसँ झाँपि लेलक प्रीता । ओना झोड़ामे छैके की ? वैह दू टा

फाटल पुरान, जे गामसँ अनने छल । हँ, एक जोड़ नव चूड़ी छलैक, बेटी नीलू लेल । छौ मासक कमाइ एक जोड़ चूड़ी । इहो तँ मेमसाहेबक बहिन आयल रहथि तँ जयबाकाल दस गोट टाका देने छलीह । ओहीसँ किनने छल बेटी लेल सनेस ।

भूत भविष्यक एकमात्र सम्बल अछि नीलू । ओही बेटी खातिर गाम छोड़ि शहर आयल रहय प्रीता । बड़का बाबूक बेटा एतहि काज करैत छथिन । हुनके समादपर आयल रहय जे कतहु कोनो ऑफिसमे की स्कूलमे काज लागि जायत तँ ओकर बेरा पार भऽ जयतैक । कतेक आस लगौने छल । जाहि दिन समाद गेल रहैक, ओहि रातिभरि नीन नहि भेल रहैक ओकरा । कखनो नीलू बेटीकेँ स्कूलक 'डरेस'मे देखय तँ कखनो ओकर बरियाती अबैत देखय । धरतीपर पयर नहि रोपाइ । नोकरी लागि जयतै तँ बेटीकेँ पढ़ाओत-लिखाओत आ धूमधामसँ बिआह कराओत । के कहतैक जे ओकर बेटी बपटुग्गरि छैक ! गामोसँ मोन अकछि गेल रहैक ओकर । दिन भरि एहि आँगनसँ ओहि आँगन कऽ बितबैत रहय ।

मुदा एहि सभसँ आब त्राण भेटि जयतैक । बड़की काकीसँ किछु हथपैंच लऽ छोटका पित्तीक बेटा रमेसराक संग विदा भऽ गेल रहय प्रीता । अबैत काल कोना नीलू ओकरा भरि पाँज पकड़ि लेने रहैक ! छोड़बाक नामे नहि लैक । कतेक परतारने रहैक ओकरा । शहरसँ ओकरा लेल नवका फराक आनत, चूड़ी आनत आ ओकर पसिनक मिठाइ रसगुल्ला सेहो आनत ।

एहि बातपर भक्क दऽ मायकेँ छोड़ि नानीक कोरा चल गेल रहय । मुदा प्रीताकेँ गाम छोड़बा काल सबूर नहि रहलैक, बेटीकेँ पहिल बेर जे छोड़ि रहल छलि ! मुदा सेहो तँ ओकरे लेल, आ करेज बान्हि गाम छोड़ि देने रहय ।

शहरक चकमकी आ गहमा-गहमीसँ ओकरा चकबिदोर लागि गेल रहैक । प्रीता बड़का बाबूक बेटा ओतय पहुँचल तँ ओ ऑफिसक पैघ मालिक ओतऽ रखबा देबाक सम्बन्धमे कहलथिन । ओतय जयबासँ पहिने बुझा देलथिन जे देख, मेमसाहेबकेँ प्रसन्न कऽ रखिहुन । जल्दीए नोकरी-चाकरी भऽ जयतौ । काज तँ हेतौक ऑफिसमे, मुदा एखन खुशामदेँ किछु दिन मेमसाहेबक संग रहबाक छौक ।

प्रीता तैयार भऽ गेल रहय । ओ अपन काजसँ मेमसाहेबकेँ प्रसन्न कऽ देत । ओकरा नोकरी लेल मेमसाहेब अवश्ये पैरबी करथिन ।

भगवान-भगवती करैत प्रीता बड़का बाबूक बेटा संग साहेबक कोठीपर पहुँचल । बड़का हबेली रहैक । चारू कात बाड़ी.....फुलबाड़ी । मेमसाहेब फुलबाड़ीमे कुर्सी लगा बैसल रहथि आ कोरमे झबरी कुकुर सूतल रहनि । टेबुलपर राखल रेडियोमे कोनो गाना बजैत रहय । बिनबहुँआ आंगी, झल-झल करैत नूआ, काटल केश आ लाल टुह-टुह ठोरमे ओ सिनेमाक मौगी सन अनमन बुझना जाथि । आँखि-नाक मुदा सोहल सुथनी सन । मुँहपर कनेको पानि नहि । एहने ठाम कहै छै, 'कान्ही-खोन्ही भोगय राज' ।

बड़का बाबूक बेटा मेमसाहेबकेँ प्रणाम करबाक संकेत कयलनि । प्रीता दुनू कल जोड़ि एक दिस ठाढ़ भऽ गेल रहय । ओकर करेज भालरि जकाँ कँपैत रहैक । फेर ओ प्रीताक परिचय देलथिन आ तकरा बाद ओकर अयबाक उद्देश्य कहने रहथिन ।

मेमसाहेब चश्मा तरसँ पल उठबैत मुड़ी डोलौने छलीह, एहन सन जेना हुनका बुझल छनि । हुनकर हाथक संकेतसँ एकटा अरदली भीतर हबेली गेल आ किछुए क्षण बाद ओकरा संग एकटा बुढ़िया कोरमे छौ मासक बच्चा नेने आयल । गोर झक-झक करैत बच्चा । मेमसाहेब हुकुम सुनौलनि 'एही बच्चाक ताक-हेर ओकरा करबाक छै । ओकरा समयपर दूध पिआयब, तेल लगायब आ घुमायब सभ ओकरा देखबाक छै । ध्यान रखबाक छै, बच्चा कानय नहि ।'

बुढ़िया कोरक नेनाकेँ प्रीताक कोरमे दऽ देलकैक आ मेमसाहेब कुकूरक सिक्कड़ि पकड़ि फुलबाड़ीमे टहलऽ लागल रहथि । बड़का बाबूक बेटा मेमसाहेबक अभिवादन कऽ चल गेल छलाह । प्रीता सेहो बुढ़ियाक पाछाँ हबेलीक भीतर चल गेल छलि ।

बड़ कोनादन लगलैक प्रीताकेँ । केहन माय छैक ई ! अपन नेनाकेँ कोरमे लऽ दूध पिअयबाक सेहन्ता नहि होइत छैक एकरा ! अनेरे दया भऽ अयलैक ओहि बच्चापर । ...सत्ते संसारमे सभ निर्धन अछि । ओकर बेटी नीलूकेँ भरि पेट भोजन नहि, भरि देह आंगी नहि तँ एहि बच्चाकेँ मायक कोर नहि ।

ओहि दिनक बाद प्रीता लेल 'मन्टू बाबू' सभ किछु भऽ गेल रहथि । हुनका नहयबा, खुअयवा इत्यादि कार्यमे कोना समय बीति जाइक, से बुझबो नहि करय । मुदा राति कऽ मन्टू बाबूकेँ सुतयबा काल नीलू मोन पड़ि जाइक ।

नहि जानि, कोना रहैत होयतैक ? सुन्दर-सुन्दर झालरिवला अंगा पहिरबैत काल ओकर मोन कचकि उठैक । पैघ लोक आ छोट लोकमे कतेक अन्तर होइत छैक ! मुदा जरलाहा दैव मनोरथ किएक एके रंग सभकेँ दैत छथिन !' प्रीता फेर सभ बिसरि काजमे लागि जाय आ दिन-पाँखि लगा उड़ैत रहल ।

मेमसाहेबक बंगलामे कोनो वस्तुक खगित नहि । आवश्यकतासँ सभ वस्तु बेसीए रहैक । मुदा मेमसाहेबकेँ पलखति कतय जे घरक काज-बात देखथि ! बड़ पैघ लोक छै मेमसाहेब । अलमारीमे रंग-बिरंगक भरल नूआ देखि आँखि चौन्हिया जाइक । सभ दिन बदलि-बदलि कऽ नूआ पहिरथि मेमसाहेब आ सिंगार करबामे कतेक काल लगनि ! फेर घंटो सितार बजाबथि । पैघ-पैघ लोक सुनय अबैत छथि । चाह जलखैक तँ कोनो बाते नहि । केतली चढ़ले रहैत छैक ।

दू दिन पहिने मेमसाहेबक फोटो अखबारमे निकलल रहैक । नोकर-चाकर अजगुतसँ देखलक । अखबारमे फोटो निकलब की साधारण बात छैक ? कहाँदन सितार बजौनीमे फस्ट अयलनि अछि मेमसाहेब !

मेमसाहेब बाहरसँ आबथि तँ मन्टू बाबूकेँ कोठली जा हुनकर गाल आ माथ छुबि दुलार कऽ लेथि । कहियो कऽ बढ़ियाँ अंगा आ खेलौना सभ नेने आबथि । प्रीताकेँ आदेश भेटैक जे आइ साँझ यैह नवका अंगा मन्टू बाबू पहिरथि । मेमसाहेब जे कहथि, प्रीता सैह करय ।

कहियो काल कऽ मेमसाहेब ड्राइंगरूममे मन्टू बाबूकेँ अनबाक आदेश देथि । ओ बच्चाकेँ नेने जाय तँ हुनक संगी-साथी बच्चाक गाल छूबि 'हाउ स्वीट', 'हाउ ब्यूटीफूल' कहथि । ओकर माने ओ नहि बूझि पाबय आ ओकर मोन माहुर भऽ जाइक ।

ई केहन माय छैक ! अपन बच्चाकेँ कोरमे आँचरसँ झाँपि छातीसँ लगैबाक सेहन्ता नहि होइत छैक एकरा ! ओकरा मोन पड़ि जाइक जे नीलुआकेँ भरि पेट पिऔलक बाद केहन तृप्तिक अनुभव होइक । रोमांचित भऽ जाय ओ, आ एहन बुझना जाइक जेना दूधक सोह स्तनसँ फुटबा लेल अकुला रहल होइक । तरहत्थीसँ दाबि ओकरा दबैबाक प्रयास कयलक । कखनो कऽ ओकर मोन भऽ जाइक जे मन्टू बाबूकेँ अपन छातीसँ लगा लिअय, मुदा मेमसाहेबक डरेँ ओकरा साहस नहि होइक ।

साहेबक दुनियाँ अलग छैक आ मेमसाहेबक दुनियाँ अलग । दुनू अपन-अपन काजमे बेहाल । एतेक दिनमे दू कि तीन दिन दुनू बेकती एक टेबुलपर खयने होयतैक । ओकरा मोन होइक जे मेमसाहेबकेँ आवेशसँ परसिकऽ साहेबकेँ खुअबैत देखितय, मुदा से नहि देखि सकल ।

एहन घड़ी ओकरा निलुआक बाप मोन पड़ि जाइक । काजक कतबो धड़फड़ी रहओ, मुदा ओ नीक जकाँ ठाओँ-पीढ़ी कऽ पयर धोबा लेल एक डोल पानि आनि दिअय । लोटाकेँ झक-झक माँजि पीबा लेल पानि देबाकाल अद्भुत सुखक अनुभव होइक । थारी साँठि आगूमे धऽ दिअय आ बीअनि लऽ अन्तिम कौर तक होंकैत रहय । बीच-बीचमे परसन लेबा लेल ओ ततेक जिद्द करय जे नहियो चाहैत ओकरा किछु लेबहि पड़ैक । परसन देबाकाल ओकरा होश नहि रहैक जे अपनहुँ लेल किछु रखबाक चाही । थारीपरसँ उठि नीलूक बाप ढ़ेकार लिअय तँ ओकरा लगै जेना ओ अपने भरि पेट खाकऽ उठल होअय । मुदा एतऽ तँ सभ उनटा-पुनटा बात अछि । ओ सोचल करय जे पढ़ने-लिखने, धन भेने की मौगीक मोन बदलि जाइत छैक ? ई सभ सोचैत ओकर मोन अनोन-बिसनोन भऽ जाइक ।

मेमसाहेब ओतऽ देवनारायण नामक एकटा भनसिया रहैक । ओकर गाम प्रीताक गामसँ अढ़ाइ कोस आगाँ छल । एक दोसरक गामकेँ खूब चिन्हैत छल आ तेँ एकटा अपनत्वक बोध होइक । दुनूकेँ अपन-अपन काजसँ पलखति होइक तँ दूटप्पी गप्प कऽ लैत रहय । ओना दू चाकरकेँ अपनामे गप्प करब मेमसाहेबकेँ पसिन नहि । तइयो आँखि बचा समय निकालिए लैत छल ।

देवनारायण सेहो नोकरीक आशामे गाम छोड़ि एतऽ आयल । ई साहेब ओकर गामक मुखियाक दोस्त छथिन । हुनके संग देवनारायण एतऽ आयल छल । गामपर बूढ़ माय, पाँच बरखक रोगिआह बेटा आ पत्नी छलैक ।

सभकेँ भरोस दऽकऽ आयल छल जे नोकरी लगितहि रुपैया मनिआडर करऽ लागत । मुदा गामसँ अयना बरख दिन भऽ गेलैक, एकटा अधियो नहि पठा सकल । एखन तक बेगार जकाँ खटि रहल अछि । मास दिनपर मात्र एक सय टाका बीड़ी-पान लेल भेटैत छैक । एहिमे ओ की खर्च करय आ की गाम पठबय ! एकटा तमाकू अमल छैक ओकरा । एहिमे करीब पचास-साठि खर्च भऽ जाइत छैक आ तकर बाद साबुन ओ केश-दाढ़ीक खर्च ।

ई सभ बात प्रीताकेँ कहलासँ देवनारायणक मोन हल्लुक होइक । प्रीता सेहो ओकरा अपन नीलू दऽ कहल करैक । निलुआकेँ बाप नहि छैक, ताहिसँ की ? ओकरा पढ़ाओत-लिखाओत आ खूब धूमधामसँ बिआह कराओत । एही सपनाकेँ पूरा करबाक लेल मेमसाहेबक शरणमे आयल अछि ।

ओहि बीच मेमसाहेबक एकटा बहिन आयल छलैक । ओ तँ मेमसाहेबसँ दू 'डिग्री' उपरे रहैक । ओकरो एकटा बच्चा छलैक जे हॉस्टलमे रहैत छल । ओकरा अयलासँ घरमे जेना बिहाड़ि आबि गेलैक । मेमसाहेबक गाड़ी उड़ल फिरैक । ओना प्रीता अपन काजमे लागल रहैत छल, मुदा एना कतेक दिन चलितैक ? मेमसाहेबकेँ ककरो दुख-सुखसँ कोनो मतलब नहि । प्रीता उदास भऽ गेल रहय ।

एक दिन देवनारायण ओकरा कहलकै 'ई सभ पैघ लोकक टाटक छै । ई ककरो नोकरी नहि दिऔतै । बुधना माली सेहो डेढ़ बरखसँ नोकरीक आशापर बेगारी खटि रहल छै । रामलाल ड्राइवरकेँ सेहो यैह हाल । ओहो बेचारा दस माससँ नोकरीक आशामे साहेबक ड्राइवरी कऽ रहल छै । जनै छैँ, ओ राति कऽ रिक्शा चलबैत अछि । तखन ओकर गुजर होइत छै । ई साहेब सभकेँ धोखामे राखि अपन काज निकालि रहल अछि । हमहीँ सभ उल्लू छी । टाकाक भूख आँखिपर अन्हरजाली लगा देलक अछि । गाममे की भूखल रहैत रही ? असलमे नोकरीमे आराम छै । काज भेल कि नहि भेल, दरमाहा राखल अछि । हम सभ सैह चाहैत छी । हम तँ कहबौ प्रीता, एहि सभसँ अपन गाम नीक । जतऽ एक दोसराक सुख-दुख सुननिहार लोक अछि । धरतीमाता छथि, जनिका कोड़ला-टोभलासँ कहियो लोक भूखल नहि रहि सकैए । ई पैघ लोकसभ नोकरीक लोभ देखा हमरा तोरा चूसि रहल अछि ।' देवनारायणक कंठ भरि आयल रहैक ।

ई सभ सुनि प्रीताक मोन धुआँइन भऽ गेलैक । सत्ते पैघ लोकक बेस टाटक सभ होइत छै । नोकरीक नामपर कतेकोकेँ बेगार खटा रहल छथि, ई साहेब आ मेमसाहेब । रातिमे ओकरा जेना टकटकी लागि गेलैक । नीलू लेल ओ की लऽ जा सकत ? ओ तँ ओकर मायक सिनेहो छीनि दोसरकेँ दऽ देने अछि ।

ओहि राति मन्टू बाबू कानऽ लागल रहैक । प्रीता चुप करबाक सभ प्रयास कयलक मुदा ओ चुप्पे नहि होइक । आखिर मेमसाहेबकेँ उठयबाक विचार भेलैक । केबाड़ पिटलक । दू बेर...चारि बेर ...पाँच बेर । केबाड़ खुजल रहैक....मुदा प्रीता डेरा कऽ दू डेग पाछाँ भऽ गेल रहय । अलसायल आँखिए, पतरकी कपड़ाक चोंगा सन पहिरने चण्डी जकाँ ठाढ़ि रहैक आ ओकरा दिस गुरड़ि कऽ तकलक । संयोग एहन जे तावत मन्टू बाबू चुप भऽ गेल रहथि । यावत ओ किछु बाजय, तावत मेमसाहेबक साधल हाथ गाल पर पड़लैक । देह झनझना गेल रहैक ।

मेमसाहेब केबाड़ बन्द कऽ लेलनि आ प्रीता मुरूत जकाँ ओतहि बड़ी काल ठाढ़ि रहलि । कोन कसूर रहैक ओकर ? मन्टू बाबूकेँ ओछाओनपर सुता देने रहय ।

भोरमे कतेक साहस कऽ मेमसाहेबकेँ कहने रहैक जे ओकरा बेटीकेँ देखना छौ मास भऽ गेलैक । ओ बाट तकैत होयतैक । किछ पाइ आ पाँच दिनुक छुट्टी भेटितैक तँ बेटीकेँ देखि अबैत । एतबा सुनिते जेना मेमसाहेबकेँ लहरि फूकि देलकैक । नागिन जकाँ डाँड़ लचकबैत कहलकै जे जँ नोकरी-चाकरी चाहैए, शहरमे रहय चाहैए तँ ओकरा गाम बिसरऽ पड़तै । छुट्टी-तुट्टीक फेर चर्च नहि करबाक चेतौनी दैत मेमसाहेब ऊँचका एड़ीक चट्टी खटखटबैत बहार निकलि गेलीह ।

प्रीताक मोन तीत भऽ गेलैक । लगलैक जेना ओकर पोर-पोर केओ मोटका रस्सीसँ बान्हि देने होइक । तँ सत्ते ओकरा नोकरी लेल गाम बिसरऽ पड़तैक ! शहरमे आबि ओकरा की भेटलै ? जकर बच्चाकेँ घेंट लगौने रहलैक, ओहो तँ ने ओकर मोल बुझलकै । ओ की बुझतै, अपन सन्तान लेल तँ दरेगे नहि छैक, तखन आनक की बुझतै ?

दिन भरि गुनधुनमे लागल रहल । गाम....नीलू...नोकरी...पाइ...एकपर एक दृश्य आँखिक सोझाँ अबैत रहलैक, जाइत रहलैक । नीलूकेँ पढ़यबाक सपना की सपने रहि जयतै ? मुदा पढ़ि कऽ की बनत ? मेमसाहब ? नहि, नहि ओकरा नहि चाही नोकरी... । ओ गाम जायत । बेटीकेँ छातीमे साटि लेत । की हेतैक ? सभ केओ तँ निर्धन अछि । मेमसाहेबक बेटाकेँ भरि पेट दूध छैक, नीक-नीक आँगी-टोपी छैक मुदा मायक कोर तँ नहि छैक । नीलूकेँ जँ ओ सभ वस्तु नहि छैक तँ मायक कोर तँ छैक ।

गामक लोक सिनेहसँ दू टा बोल तँ बजैत अछि । लोकक दुख-सुख तँ बूझैत छैक । शहरमे की छैक ? देखबामे चकमक मुदा भीतरसँ कारी खटखट। प्रीता गामहि रहत । बस, काल्हि ओ अपन बेटी लग पहुँचि जायत । मेमसाहेब अपन पाइ आ नोकरी राखओ ।

दोसर दिन खूब अन्हरगरे प्रीता हबेलीसँ निकलि गेल छलि । संगमे वैह पुरना झोरी छलैक आ ओहिमे छलैक वैह फाटल-पुरान जे गामसँ अनने छल । गाड़ी सीटी देलकैक आ लोक भागि-भागि कऽ गाड़ीपर चढ़ऽ लागल । खिड़की लग बैसल प्रीता छुटैत शहरकेँ देखैत रहलि ।

आइ पैघ लोकक दुनियाँसँ उबरि कऽ जा रहल अछि । मोन पड़ि गेलैक, अबैत काल विमला कहने रहैक-' अनेरे जाइत छेँ, हमसभ गरीब लोक छी । अपन माटि अपन लोकक बीच अभाव रहितो हँसैत दिन काटि लेब, मुदा शहरक पैघ लोक ! ओह, खाली नामे टा छै ।'

ओकर मोन आब हल्लुक लागि रहल छलैक । गाड़ी सेहो गति पकड़ि लेने रहैक ।



बदला

जहियासँ रीता भादुड़ी ब्लॉकक डाक्टरीक पद-भार ग्रहण कयलनि अछि, ताहियासँ जेना सभ किछु बदलि गेल हो । दुखिताहक पतिआनी दिन-दिन बढ़ले जाइछ । बच्चाक मायसभकेँ एहन विश्वास भऽ गेल छनि जे रीता भादुड़ीक हाथ लगितहि बच्चा निरोग भऽ जायत आ तेँ कनेको किछु होइतहिँ अपन बच्चाकेँ आँचरसँ झाँपि डाक्टरनीक दुआरिपर जुमि जाथि ।

रीता भादुड़ी डॉक्टरनी नहि साक्षात् भगवती भऽ जेना अवतार लेने होथि। भिनसरे-भिनसरे रोगी तेना जयबाक तैयारी करय लगैत छथि जेना भगवतीक थानपर दीप जरबय जाइत होथि ।

मुदा, एहि सभ बात-बिचारक कम्पाउण्डर हरिचरणपर बड़ प्रतिकूल असरि पड़लैक अछि । ओकर मुहँ धुआँइन भेल रहैछ । 'बड़ सतबरती डाक्टर भेलीह अछि ! अपन पेट-मुँह सीअल छैक, तँ की आनो सीबि लेअय ? पता नहि, कतयसँ बथा गेल ! हमर चलल-बनल व्यवसाय माटिमे मिला देलक ।' भनभना उठय हरिचरण ।

एहिसँ पहिलुका डॉक्टर छलाह गंगाराम उपाध्याय । एक नम्बरक झनकाह । शहर आ गामक सतत तुलना कयनिहार । हुनका गाम फुटली आँखिए नहि सोहाइनि । बेसी काल छुट्टीमे रहथि । बरोबरि पटनाक दरबारमे बदली लेल अर्जी देबऽ जाथि, सभ तरहेँ जोर लगाबथि, मुदा जँ-जँ बिलम्ब होइनि तँ-तँ खौंझाह भेल जाथि ।

रोगीक भीड़ देखि तँ आओर तामसे फानय लागथि- 'हरिचरण, सभकेँ काल्हि आबऽ कहि दहक ने तँ जाह, किछु गोली-तोली लिखि दिहक । हमर

'मूड' ठीक नहि अछि । नेता सभक सर्वनाश होउक । अपने पटना-दिल्लीक शानदार भवनमे आराम करैत अछि आ डॉक्टर लेल उपदेश जे गामक सेवा करय ।'

की मस्त डॉक्टर छल गंगाराम उपाध्याय ! हरिचरणक तँ पाँचो आँगुर घीमे । घरे-घर ओकर पूछारि छलै । दवाइ लिखयबाक हो तँ हरिचरण, सूइ दिअयबाक हो तँ हरिचरण आ पानि चढ़यबाक हो तँ हरिचरण ।

-मुदा ई सत्यानाशी रीता भादुड़ी तँ सभ किछु चौपट कऽ बैसल सुनना गेल अछि जे स्वयं अपन इच्छासँ एहि ब्लॉकक नोकरी लेलक अछि । नहि जानि, की जीया-मुट्ठी गाड़ल छै एहि गाममे ! एकरा तँ जेना रातियो कऽ ने निन्न होइत छैक । कोनो भारी जिन्न अछि जिन्न ! जानि नहि, परिवारमे केओ छैको कि नहि ! संगमे तँ मात्र एकटा छौ-सात बरखक बेटी छै आ एकटा वृद्ध आया । किछु पुछौक के ? ककरो अपनामे सटहि नहि दैत छैक !'

ओहि दिन कतेक साहस कऽ हरिचरण साहेबक विषयमे किछु पूछि बैसल रहय । डॉक्टरनी तेना ने बात बदलैत बिलम्बसँ अयबाक सवाल पूछि देलकै जे हरिचरण अबाक ! घिघिया उठल रहय ओ । तहिएसँ कान धयलक जे आब किछु नहि पूछत ।

घुमा-फिरा कऽ कतेको दिन डाक्टरनीकेँ सुनौने छलै हरिचरण जे पेठियापर बड़ नीक माछ बिकाइत छै, मुदा की मजाल जे कहियो डॉक्टरनी आनि देबाक फरमाइश कयने हो । ओकरा लेल धन-सन । सभ जड़ि छूबि देखलक, मुदा चिड़ै बैसबाक नामो नहि लेलकै । कननमुहँ लऽ हारि मानि बैसल ओ । जाहि विधि राखे राम, वाहि विधि रहिए.....। दोसर कोनो रस्ता नहि छलै ।

अपन एक-एक रोगीक नाम कण्ठस्थ भऽ गेल रहनि रीता भादुड़ीकेँ । इलाज ओ भक्ति-भावसँ कयल करथि । कखनो कोनो काजमे हड़बड़ी नहि । सभ किछु शांत ओ धैर्यपूर्वक करथि । परिणामस्वरूप छवे मासमे गामक लोकक हृदयमे वास करऽ लागल रहथि । ककरो आँगन विवाह-दान हो कि पाबनि-तिहार, दुइयो मिनट लेल हुनका जाइए पड़नि । पाबनि-तिहार दिन तँ प्रसादसँ छिट्टा भरि जाय । कतबो कहथि जे दू व्यक्तिक परिवारमे एतेक प्रसाद की होयत ? मुदा केओ नहि माननि ।

ओहि प्रसादकेँ भिनसरे अपन क्लीनिकपर मरीजक बीच बँटबा देल करथि । हरिचरणक मुँह अनोन भऽ जाइक । ओकरा ई सभ नहि नीक लगैक । ओकर मोन रहैक जे डाक्टरनी खूब तमसा कऽ बाजल करथि, जाहिसँ मरीज हरिचरणक शरण पकड़य । एक दिन सुझौनहुँ छलनि- मेमसाहेब, ई मरीज सभपर एतेक माया-ममता देखायब तँ जोँक जकाँ देह पकड़ि लेत । एकरा सभकेँ कने झाड़ि-डपटि कऽ रखनहि कुशल ।'

मोनहि मोन हँसी लागल छलनि । ओ हरिचरणक बात खूब बुझैत छलीह, मुदा अपन स्वभावसँ नचार रहथि ।

एकटा रक्तरंजित संसारकेँ अपना हृदयमे नुकौने रीता भादुड़ी एहि गाममे प्रवेश कयलनि अछि । जीवनक महत्वपूर्ण सात वर्ष ओ सांसारिक रहितो वनवास सदृश कटैत रहलीह अछि । बदला लेबाक भावना एको क्षण चैनसँ नहि रहऽ देलकनि । सात वर्ष पूर्व .....एक एक घटना आँखिपर नाचि उठल रहनि ।

राँची मेडिकल कॉलेजक अन्तिम वर्षक छात्रा रीता भादुड़ी पिताक मित्र सुभाष डे ओतऽ कहियो काल जाइत रहथि । ओही मकानक एक फ्लैटमे सतीश नामक युवक रहैत छलाह । ओ ओतहि कोनो कालेजमे अस्थायी प्राध्यापक रहथि ।

संयोगसँ एक दिन चाह-जलपानपर ओहो बजाओल गेल रहथि, जखन कि रीता ओतहि छलीह । दुनूक परिचय-पात भेल रहनि । सतीशक मोहक व्यक्तित्व रीताकेँ पहिले दिन आकृष्ट कयने छलनि ।

एक दिन सुभाष अंकलक समाद लऽ सतीश हॉस्टल सेहो पहुँचि गेल रहथि । संगी-साथी रीताकेँ चुटकी लेने रहनि, मुदा से नीक लागल रहनि रीताकेँ आ तकर बाद तँ जेना लटाइ सतीशक हाथमे दऽ ओ अपने गुड्डी बनि गेल छलीह ।

बेटीक इच्छा आगू माय-बापक किछु नहि चलल रहनि । सतीश अपनाकेँ मातृ-पितृविहीन बतौलनि । तेँ ककरो सूचना देब आवश्यक नहि बूझल गेल । मुदा रीता भादुड़ीक पिता आयल रहथिन आ कचहरीमे दुनूक कागजी विवाह भऽ गेल रहनि ।

विवाहक पहिल वर्षपूर मनौना सप्ताहे भरि भेल रहय । अकस्मात्

एकटा घटना घटित भेल । पटनासँ अबैत काल ट्रेनमे एक व्यक्तिसँ सुभाष डेकेँ परिचय भेल रहनि । ओहो व्यक्ति राँची जा रहल छल । ओ अपन जयबाक उद्देश्य ओ व्यक्तिक परिचय देलक तँ सुभाष डे अवाक् भऽ गेल रहथि । कनेकाल मुँहसँ बोल नहि फूटल रहनि ।

ओ व्यक्ति सतीशक पितियौत भाइ छलाह एवं हुनकेसँ भेट करऽ जाइत रहथि । सतीशक पिता संवाद देने रहथिन जे आब अपन पत्नी ओ बच्चाकेँ आबि लऽ जाथि ।

सुभाष डे कोनो तरहेँ डेरा पहुँचल रहथि । संगमे सतीशक भाय सेहो रहथिन । रीता सतीशक फ्लैटमे रहैत छलीह, मुदा तखन कतहु अन्यत्र गेल रहथि । सुभाष डेक संग आयल व्यक्तिकेँ देखितहिँ सतीशक मुहँक रंग उड़ि गेल छल । ओ गोंगिआय लगलाह । मुहँसँ बोल नहि फुटलनि । फाटल आँखिए तकैत जेना पाथरक मूरुत बनि गेल होथि । सुभाष डे सेहो कने काल तक सतीशकेँ ऊपरसँ नीचाँ तक देखैत रहलाह आ तकरा बाद तँ जेना हुनका देहपर कोनो जिन्न सवार भऽ गेल रहय, तहिना ओ सामान सभ फेकऽ लागल छलाह, मुदा दू-चारि सामान फेकलाक बाद ओ बेहोश भऽ गेल रहथि ।

रीता भादुड़ी डेरा अयलीह तँ घर श्मशान सन लागल रहनि । सभ किछु अस्त-व्यस्त । केबाड़ खुजल । सतीशक कोनो पता नहि ।

सुभाष अंकलक घरमे पैर रखलनि कि हुनक पत्नी रीताक गर्दनि पकड़ि भोकारि पाड़ि कानि उठलीह । तकरा बाद तँ जे किछु सुनलनि से एहन लगलनि जेना केओ कानमे गरम शीशा ढारने जा रहल हो ।

एहि घटनाक बाद तँ जेना सभ-किछु उनटि-पुनटि गेल छल । सप्ताह भरि ओछाओनपर लकड़ीक ढेंग सन पड़ल छलीह । शरीरमे जेना कोनो स्पन्दन नहि, मात्र करेजक धुकधुकी चलैत रहल छल ।

सुभाष अंकल ओ आंटीक सेवा-सुश्रुषासँ ओ बाँचि गेल छलीह । माँ-बाबूजी सेहो पहुँचि गेल छलाह । सहानुभूतिक एक-एक शब्द माथपर हथौड़ा जकाँ पड़ि रहल छल । सभ केओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे एखन किछु नहि बिगड़ल अछि । रीता अपन जीवन पुनः बसा सकैत छथि ।

मुदा रीता अपन गर्भमे अंकुरित जीवक स्पन्दन नीक जकाँ अनुभव कऽ रहल छलीह । ओ मोनहि मोन निर्णय कयलनि जे 'हमरा एकर रक्षा लेल आ सतीशसँ बदला लेबाक लेल जीबाक अछि ।'

-मेमसाहेब, रोगीक बेस भीड़ लागि गेल अछि । एखन देखबैक कि साँझ कऽ आबऽ कहियौक ?' –हरिचरण कोठलीमे प्रवेश कयने छल ।

रुमालसँ चश्मा पोछैत रोगी देखबाक कमरा दिस रीता चलि पड़ल छलीह ।

ओहि दिन, दिनक दू बाजि गेल छल । डाक्टर साहिबाक भोजनक समय भऽ गेल रहय । बाहर हरिचरण सभकेँ चारि बजेक बाद अयबाक आदेश दऽ रहल छल, तखनहि ओकर ध्यान एकटा दुखिताह दिस गेल, जकरा ओकर पत्नी बहुत सावधानीपूर्वक बैलगाड़ीसँ उतारि रहलि छलि । ओ स्त्री हाथसँ किछु संकेत करैत हरिचरण दिस दौगल बढ़लि ।

-कम्पाउण्डर साहेब, अन्हरगरे गामसँ चलल छी । हालत नहि नीक छै । तुरंत देखौनाइ आवश्यक अछि । बड़ दया होयत ।'

अस्त-व्यस्त ओहि स्त्रीक प्रार्थना हरिचरणक हृदयकेँ छूबि गेलै । डाक्टर साहेबक कोठलीमे जा बस एकमात्र रोगीकेँ देखि लेबाक आग्रह कयलक । कुर्सीसँ उठैत रीता भादुड़ी पुनः बैसि गेलीह । कलम उठबैत कहलनि, –जल्दी बजाबह ।'

तावत ओ स्त्री दुखिताह पतिकेँ लेने केबाड़क मुँहपर आबि गेलि छलीह । कम्पाउण्डरक संकेत पाबि भीतर गेलीह । धसल आँखिक चारूभर स्याह रेघा, झुकल डाँड़ आ रक्तहीन मुखक काँति ।

रोगीकेँ टेबुलपर पड़ि रहबाक संकेत करैत रीता भादुड़ी जेना ठमकि गेलीह । ओ दुखिताह सेहो जेना अपन कमजोर आँखिपर जोर देबाक प्रयास कऽ रहल छल । किछु क्षण लेल रीता अपन डॉक्टर होयबाक बात बिसरि गेलीह ।

-दू माससँ बोखार जाने ने छोड़ैत छनि । कतेक दवाइ करौलहुँ, कोनो सुनबाहि नहि । बड़ उमेदसँ अहाँ लग अयलहुँ अछि ।' पत्नी हाथ जोड़ने विनती कऽ रहल छलीह ।

ओहि स्त्रीक निवेदनसँ रीताकेँ अकस्मात् होश अयलनि । अपन आला सम्हारैत टेबुल दिस बढ़ि गेलीह, मुदा आब शंकाक कोनो गुंजाइश नहि । रोगी

कियो दोसर नहि; सतीश छथि । वैह सतीश जकर गामक पता-ठेकानसँ एहि ब्लॉकक नियुक्ति स्वीकार कैने रहथि । -'मुदा ई की ? हुनकर दण्ड पयबासँ पूर्वहि ओ दण्डित भऽ चुकल छलाह ।'

सतीश गम्भीर रूपसँ तपेदिकक शिकार रहथि । दवाइ एवं परहेज लिखैत हरिचरणसँ कहने रहथि जे एहि रोगीकेँ हॉस्पीटलक नीक कमरा आ बेडक व्यवस्था कऽ देथि । ओहि दिन फेर कोनो रोगीकेँ ओ नहि देखि सकल छलीह ।

ओ राति बहुत कठिनतासँ बितौने रहथि । सतीशक संग बिताओल क्षण आँखिक आगाँ नचैत रहलनि । मोन पड़ि उठलनि फरवरीक ओ साँझ जहिया सतीश 'आइ लव यू' कहने रहथि । ओ फागुनक साँझ जेना कतेको रंगसँ नहा उठल छल । आँखिसँ आकाश तक रंगक फूल फुला गेल रहय । आ ओहि फूलक गमकसँ शरीर आ मोन गमकि उठल रहनि । स्त्री आ पुरुषक बीच युग-युगान्तरसँ दोहराओल जाइत ई वाक्य ओहि क्षण कतेक नव लागल रहय ! जेना सतीश आदिम पुरुष होथि आ ओ आदिम स्त्री !

मुदा वर्षे दिनुक बाद कोना सभ किछु बदलि गेल छल ! बात बिसरऽवला नहि, मुदा बिसरबाक प्रयास करैत रहलीह ।

साँझमे हरिचरणकेँ लऽ सतीशकेँ देखऽ गेलीह । सतीश मुँहसँ किछु नहि कहलनि, मुदा आँखिमे करुणा आ पश्चात्तापक बुंद झिलमिलाइत रहल । दू टा सुन्दर बच्चाक संग पत्नी कृतज्ञ भावसँ ठाढ़ि छलीह । रीता भादुड़ी दुनू बच्चाक माथपर हाथ फेरलनि । दुनूक सौम्य ओ निर्दोष मुखाकृति आकृष्ट कयलकनि । आवश्यक निर्देश दैत घुरि गेल छलीह ।

बदला लेबाक सभ बात जेना स्वत: भखड़ि गेल हो । बदला ककरासँ ? सतीश, जे स्वयं दण्ड भोगैत कातर दृष्टिसँ तकैत छलाह । पत्नी, जे निर्दोष आ पतिपरायण छलीह आ दुनू बच्चा, जे संसारक सभ छल-कपटसँ दूर बापकेँ स्वस्थ होयबाक आकुलतासँ प्रतीक्षा करैत रहय ?

सतीशकेँ पूर्ण स्वस्थ होयबामे लगभग दू मास लगलनि । रीता हुनक सेवामे जी-जानसँ जुटल रहथि । पुन: एक दिन हुनका घर जयबाक अनुमति दऽ देने छलीह आ संगहि ओहि ब्लॉकसँ अपन बदली करबाक हेतु सेहो अर्जी दऽ देने रहथि । खबरि सुनलापर हरिचरणकेँ जेना कतहुसँ जान अयलै, मुदा गामक लोक सुनि दुखी भऽ उठल छल ।

रीता भादुड़ीक कार्य जेना सम्पन्न भऽ गेल हो । हुनकर बदलीक अर्जी मानि लेल गेल छल आ ओ ओतऽसँ जयबाक तैयारी करऽ लागल छलीह ।

जयबाक दिन लोकक भीड़ लागि गेल । सामान सभ ट्रकपर लादल जा चुकल रहय । तखनहि सतीश अपन पत्नीक संग आयल छलाह । बाहरसँ डॉक्टर होयबाक गम्भीरता ओढ़ने छलीह, मुदा भीतर जेना बिर्रो उठल रहय । सतीशक पत्नी पैर छूबि प्रणाम कयने रहथि– दीदी, अहाँक ऋण कोना चुकायब ?' पैरपरसँ उठबैत रीता कहने रहथि– बताहि नहितन, ऋण केहन ? ऋण तँ हमरापर अछि । एतेक स्नेह, एतेक अपनत्व ! हम कोना बिसरि सकब ?' पुन: जेना किछु मोन पड़ि अयलनि । तुरंत ओ भीतर गेलीह आ एकटा पैकेटमे राखल नूआ– ओ वैह नूआ छल जे पहिरि सतीशक जीवनसंगिनी बनब स्वीकार कैने छलीह –सिन्दुर आ लहठी आनि हुनका हाथमे थम्हा देने रहथि । राधा विस्मित भेल डॉक्टर साहिबाक मुँह ताकऽ लगली ।

-किछु नहि, छोट बहिनक हेतु पैघ बहिनक आशीर्वाद ।' कहैत रीता भादुड़ी भीतर चल गेल छलीह । आँखि भरि गेल छलनि । हरिचरणकेँ झटपट अटैची गाड़ीपर रखबाक आदेश दैत रुमाल ताकऽ लागलि छलीह ।

●

धूरी

वर्ष तीनेक ओहि डेरामे भाड़ेदार छलहुँ । ओना हमर ओ डेरा फराक छल, मुदा मकान मालिक आ हमर डेराकेँ मात्र एकटा बीचक केबाड़ फुटओने रहैक । बीचक ओहि केबाड़केँ खोलि देने सम्पूर्ण मकान एक भऽ जाइक आ ओकरा बन्द कऽ देने दू फराक-फराक डेरा ।

हमरा एकसर एकटा नोकरक संग रहबाक छल । तेँ ओ डेरा हमरा हेतु उपयुक्त रहय । बहुत जल्दीए मकान मालिकक परिवारक संग हिलि-मिलि गेल छलहुँ ।

हुनक पुतोहुसँ हमरा विशेष लगाओ भऽ गेल । पैघ-पैघ आँखि, लहराइत केशक लट आ ठोरपर छिलकैत हँसीक रेखा...। हम तँ मुग्ध भऽ जाइ । जेहने गृहकार्यमे कुशल तेहने मिलनसरिया आ हँसमुख । नाम रहनि शीला ।

सभ मिला-जुलाकऽ शीला हमरा तेना आकृष्ट कयलनि जे अपन एकाकीपन बिसरि गेलहुँ । सभ तरहक गप्प होअय, सखी-बहिनपा जकाँ लागथि। मुदा, हम कखनहुँकेँ लक्ष्य करी जे ओ अपन दाम्पत्य जीवन हमरासँ नुकबैत छथि ।

मुदा, ओहि राति शीलाक कानब आ हुनक पतिक कर्कश स्वर हमरासँ नुकायल नहि रहल । आँखि लगले छल कि किछुए क्षणक बाद ओ स्वर तीव्रतर होइत गेल । आ, तकर बाद हुनक दुनू बच्चा बीचक केबाड़केँ पीटऽ लागल, 'मौसी, मौसी हमर माँकेँ बचा लिअऽ ।'

ककरो व्यक्तिगत जीवनमे हस्तक्षेप नहि करबाक सिद्धान्त अनायासे भखरि गेल । हम अपनाकेँ नहि रोकि सकलहुँ । केबाड़ खोलि भीतर गेलहुँ।

देखैत छी जे शीलाक पति हुनक करेजपर बैसल मुक्के थापड़े निर्मम प्रहार कऽ रहल छथि । अकस्मात् दृश्य परिवर्त्तन भेल । हमरा देखिते ओ शीलाकेँ छोड़ि ठाढ़ भऽ गेलाह । –'अहाँ एकरा नै चिन्है छिऐक । ई राक्षसी थिक । एकरा हमर कोनो चिन्ता नहि रहैत छै । हमरा प्रतिकूले चलब एकर आदति अछि ।' भसिआइत बोल आ लटपटाइत डेगेँ बुझबामे भांगठ नहि रहल जे ओ निसाँमे भेर छथि ।

एहि तरहक स्थितिक सम्बन्धमे पढ़ल-सुनल तँ बहुत छल, मुदा आँखिक समक्षक पहिले घटना रहय, तेँ हृदयक गति बहुत तेज भऽ गेल छल। स्थिति देखैत सहज भावेँ कहलियनि, 'मुदा छथि तँ अहीँक । बुझा कऽ अनुकूल करियनु । एना करब तँ नीक नहि ।' एहिसँ बेसी हमरा किछु नहि बाजि भेल ।

अपन एहन स्थितिसँ लज्जित भऽ शीला दुनू हाथेँ मुँह नुकओने सिसकैत रहलीह आ पति परमेश्वर बड़बड़ाइत बाहर चल गेलाह ।

ओहि घटनाक बाद शीलाक नुकायल पीड़ा मुखरित भऽ गेल । आब हुनका हमरासँ कोनो दुराव नहि रहि गेलनि । अपन अतीत ओ वर्त्तमानक एक-एक पृष्ठ हमरा समक्ष खोलैत गेलीह । हम अविचल भावेँ ओहि धीर सलिलाक एक-एक शब्द हृदयमे समेटने गेलहुँ ।

रातुक समय छतपर नचैत पंखाक धूरीपर टकटकी लगओने जीवन-समुद्रमे डुबकी लगबैत रही । धिक्कारी अपनाकेँ जे महिला मुक्ति समर्थकक भाषण पढ़ैत-सुनैत एकटा दुःखी महिलाकेँ बाट देखयवामे असमर्थ किएक छी ? क्रोध होअय शीलापर जे नीक अंकसँ उतीर्ण ग्रेजुएट महिला भऽ ओ किएक एहन शोषण सहैत जा रहलि छथि ?

एक दिन शीलाकेँ कहलियनि– अहाँ किएक ने एम.ए. कऽ लैत छी ?'

–चाहै तँ हमहूँ छलहुँ । मुदा आब तँ अपन कोनो इच्छे नहि रहल । एहि सभसँ समाजमे हमर पिता आ ससुरक प्रतिष्ठामे बट्टा लगतनि । ...जँ ओ सभ तैयारो भऽ जएताह तँ हमर पतिकेँ स्वीकार कोना हेतनि ? घरसँ बहरयलापर भऽ सकैत अछि हमरामे आत्मविश्वास जागय । हम हुनक मारि-गारिक उत्तर देबऽ लगियनि । विद्रोह करबापर उतरि जाइ । तेँ हमरा

निमुन्न घरमे बन्दे रहब नीक थिक । हिनका सभक पुरुषार्थ तखने सुरक्षित रहतनि' ई कहैत शीला हँसि देलनि ।

एहिना गप्प करैत-करैत अनायास किछु मन पड़ि जाइनि आ कहथि, –हमहूँ केहन छी । कतय अहाँक मन बहिटारितहुँ, तँ उनटे आर उदास कऽ दैत छी ।' आ झट अपन नैहर ओ अपन कुमारि जीवनक कोनो हास्य घटना सुनाय भभाकऽ हँसि देथि । मुदा हम ओतेक शीघ्र सहज नहि भऽ पाबी आ हुनक झलकैत दंतावली दिस देखैत रहि जाइ ।

शीलाक सासुओ हुनक विपक्षे रहथि । आन पुतोहु जकाँ ई बेसी दान-दक्षिणा लऽ नैहरसँ नहि आयलि रहथि । ससुरकेँ धरि एहि बातक चिन्ता अवश्य रहनि जे स्वामीक दुर्व्यवहारसँ अकछाय पुतोहु कदाचित घरसँ बाहर ने भऽ जाथि । तेँ ओ पुतोहु आ दुनू पोताकेँ कोनो वस्तुक खगित नहि होबय देथि । मुदा सासुकेँ एहि बातक अनेक संदेह रहनि जे बूढ़ा पुतोहुकेँ एतेक किएक मानैत छथि ? आ, बेर-कुबेर दुनूक अनुचितो सम्बन्ध कहबासँ बाज नहि आबथि । शीला सभ बात सहि लेथि, मुदा ई बात हुनका तीर जकाँ हृदयमे लगनि ।

कहियो कऽ हमरा कहथि, 'देखब, हम कहियो एही बातक विषादसँ देहमे आगि लगा मरि जायब ।' हम हुनका बोल-भरोस दऽ अनेकानेक साहसिक घटनासँ प्रेरित करबाक प्रयास करी ।

रातिमे पति महोदयक कर्कश स्वर आ शीलाक सिसकब अनवरत चलैत रहय । पुनः भिनसरे धूरी पर चलैत पहिया जकाँ शीला अपन काज-धंधामे लागि जाथि आ दुइयो मिनटक समय निकालि हमरासँ दु टप्पी गप्प करथि । हमरा कहथि, 'अहाँकेँ तँ बहुत संगी-साथी होयत, मुदा हमरा तँ एकटा अहीँ छी । पता नहि साँझमे भेट होयत कि नहि ?'

हम जेना कोनो भावी आशंकासँ काँपि उठी ।

ओही बीच पति महोदयकेँ मोटरसाइकिलसँ दुर्घटना भऽ गेलनि । अस्पतालमे मास दिन रहय पड़लनि । ओहि समयक शीला ठोरपर पड़ैत फुफड़ी हम नहि बिसरि पबैत छी । राति-दिन भगवानक पूजा आ व्रतमे लागलि रहथि । एक-एक दिन पहाड़ सन बुझना जानि । अस्पताल आ डेरा एक टाँगपर कयने रहथि । हुनक सेवा आ ईश्वरक कृपासँ पति महोदय जल्दिए चलबा-फिरबा योग्य भऽ गेलाह ।

मुदा अपन पुरान चलनिपर सेहो जल्दिए आबि गेलाह । बच्चा कानल तँ शीलाक दोष । दूधवला दूध नहि देलक तँ शीलाक दोष । आ घरमे किछु निघटल तँ शीलाक दोष ...। एहि तरहेँ ने तँ दोषक अन्त छल आ ने निर्दोषीक दण्डक अन्ते होइत छल ।

एक दिन हतोत्साह भऽ शीला कहलनि, 'आब हम पूजा-पाठ छोड़ि देलहुँ । वास्तवमे ईश्वर कतहु नहि छथि । बस एतबे तँ हम मँगैत रहलियनि जे हिनका सुबुद्धि दियनु । मुदा सेहो नहि जुड़लनि, तखन ओ कथिक महान आ ककर पूजा ?'

आ, वास्तवमे तकर बाद कहियो हुनका मुँहसँ नहि सुनलहुँ जे आइ फल्लाँ व्रत थिक वा एखन धरि पूजा नहि कयलहुँ अछि ।

एकाध मासक पश्चाते शीलाकेँ से जाड़-बोखार धयलकनि जे बिछाओनसँ सटि गेलीह ।

हम एक बेर नित्य देखय गेल करी ।

एक दिन कहलनि– 'हमरा जेहने जीने तेहने मुइने । हमर जीवन धूरीपर चलयवला निर्जीव पहिया थिक । मरि जायब तँ एहि घरक कोनो व्यक्तिक आँखिसँ दू बुन्द नोरो तँ नहि खसतै ।'

सेवा आ दवाइ-पानिक अभावमे हुनकर स्थिति खरापे होइत गेल । हम भाड़ेदार रही । भय रहय जे हमरापर ई ने संदेह कैल जाय जे हम घरक पुतोहुकेँ हुनका लोकनिक इच्छाक प्रतिकूल प्रोत्साहित करैत छियनि । तेँ एक सीमेमे रही । ओही सीमामे साध्य भरि हुनका देखि-सुनि आबी ।

एक दिन जिद्द कऽ शीलासँ हुनक नैहरक पता लेलहुँ । हुनक पिताकेँ हुनक बीमारीक सूचना हम चोराकेँ देलियनि ।

चिट्ठी पबितहिँ शीलाक पिता आ जेठ भाइ अयलथिन । शीलाक स्थिति देखि दूनू बापूत स्तब्ध रहि गेलाह । शीघ्रहि ओ गाड़ीक व्यवस्था कयलनि । जमाइक इच्छा नहि रहनि , तैयो ओ शीलाकेँ लऽ जयबाक हेतु तैयार भेलाह । जमाय बड़बड़ाइत डेरासँ बहराय कतहु चल गेल रहथिन ।

हमर विचित्र स्थिति रहय । एक दिस खुशी होअय जे एहि नरकसँ

किछुओ दिन हेतु तँ मुक्ति भेटि रहल छनि शीलाकेँ आ दोसर दिस मोन दुखी रहय जे शीलाक बिना डेरामे नीक नहि लागत । हमर एकांत जीवनक वैह तँ एकटा बहिनपा छलीह ।

शीलाकेँ जयबाकाल भेट करय गेलियनि । क्षीण स्वरे कहलनि, 'एतेक दिन सम्भवतः ....अहीँक सान्निध्य हमरा...बचौने रहल । अहाँकेँ... नहि बिसरि सकब । बच्चाक सपथ....एहि घरमे मारि-गारि ....सुनय नहि आयब । एम.ए. करब..... नहि तँ 'ट्रेनिंग' कऽ लेब... अपना पैर-पर ठाढ़ होयब । कुकुर. .कौआ सन....जीवन नहि जीब ।'

शीलाक आँखिक नोर ओहि दिन हमरा अशांत नहि कैलक । आश्वस्त भेलहुँ जे ओ आखिर अपनाकेँ चिन्हलनि तँ । हमर मूक आकांक्षा ठोरपर आबिए गेल- 'हँ शीला, जीवन वरदानमे भेटल अछि । एकरा अपना हाथेँ जीवा योग्य बनाउ । मरब तँ पराजय थिक । अहाँ मृत्युपर विजय प्राप्त करू । अंधकारसँ प्रकाश दिस बढ़ू आ समाजक हेतु मार्गदर्शक बनू । एहिमे अहाँक कल्याण होयत, समस्त स्त्री समाजक कल्याण होयतैक ।'

आगाँ किछु कहबासँ असमर्थ रही । हृदयक भाव आँखिसँ फूटि पड़ल ।

शीलाकेँ हाथ पकड़ि दुरखा लग लागल गाड़ीपर चढ़ा अयलियनि । शीला चल गेलीह मुदा हुनक संकल्पित आँखिक ज्योतिकेँ कखनहुँ नहि बिसरि पबैत छी ।

●

गुलाब काकी

विवाहक तीन वर्षक बाद पहिल बेर सासुर जाइत छलहुँ, सेहो आमक मास । नेनेसँ शहरमे बेसी रहलहुँ, तेँ गाम जयबाक नामपर कनेक नाक-भौंह सिकुड़ि जाइत छल । असलमे गाममे थाल-कादो आ जारनिक चूल्हिपर भानस करब, जेना कोनो पैघ अपराधक दण्ड भोगि रहल छी । सासु कतेक दिनसँ गाम जयबाक आग्रह कऽ रहल छलीह । पति महोदयकेँ बैंकक काजसँ फुर्सति नहि, मुदा हमर कॉलेज तँ बन्द रहय । तेँ सासुक आग्रहक मान रखैत गाम जयबाक स्वीकृतिक घोषणा कऽ देने रही ।

एहि बातपर सासु बड़ प्रसन्न भेलीह । हमरा जयबासँ दू दिन पहिनहि गाम जयबा लेल तैयार भऽ गेल रहथि । असलमे पहिल पुतोहु पहिल बेर गाम जाइत छलनि, से किछु इंतिजाम-बात आवश्यक बुझना गेलनि । जाइत-जाइत हमरा नीक जकाँ बुझौने रहथि- गाम गेलापर लाज-धाख करबामे कोनो कसरि नहि राखब, नहि तँ गामक लोक हँसी करत । पढ़ब-गुनब अपन स्थानपर छै आ गामक मर्यादाक अपन महत्त्व छै । तेँ नीक जकाँ रहब । देह-पीठ उघार नहि होअय ।'

हमरा हँसी सुझि गेल छल ।

-माँ, ई निश्चिन्त रहथु । हम ठेहुन तक घोघ तानिकऽ अयबनि, मुदा तखन जँ पीठ उघार भऽ जाइनि तँ से नूआक दोष, हमर नहि ।'

छोटकी ननदि तँ लहालोट भऽ गेलीह ।

-भौजी, अहाँ की सुन्दर जवाब देलहुँ !'

मुदा सासुक उतरल मुँहपर ध्यान दैत स्थितिकेँ तुरंत सम्हारि लेने रही।

–माँ, ई तँ हँसीमे कहलियनि। हम सब सम्हारि लेबनि, सैह ने। ई निश्‍चिंत भऽकऽ जाथु।'

दुनू ननदि सेहो गाम जयबाक नामपर प्रसन्न छलीह। सासु चल गेल रहथि आ हमसभ गाम जयबाक तैयारीमे लागि गेल छलहुँ। तेसर दिन साँझमे गाम पहुँचलहुँ तँ सासु अपन दियादिनी सभक संग स्वागतमे लालटेन लेने दलानपर ठाढ़ि छलीह। हमर घोघ आ झाँपल देह-पीठ देखि सासु आश्‍वस्त भेल रहथि।

पुरान कनियाँ रहितो गामक लोक लेल नवकनियाँ रही आ तेँ किछु बिध-बाध सेहो कयल गेल। घर लऽ जाय चौकीपर सभ कियो बैसा आयल रहथि आ तकर बाद मुँह-देखाइ शुरू भऽ गेल छल। ई सभ देखि हमर छोटकी ननदि खूब आनन्दित होइत रहलीह।

हमहूँ एक बेर फेर तीन वर्षक पूर्वक समयमे जीबय लागल रही। हुनकर अनुपस्थितिक कचोट भेल छल। ओ संगमे रहितथि तँ खुब चौल करितथि। हुनकासँ पहिल भेटक कतेक बात आँखिक आगाँ नाचि गेल। आइ पहिल बेर हुनकर बैंकक नोकरी नहि सोहायल।

कोठलीमे धीया-पूताक बेस जमघट लागि गेल छलैक। घोघक भीतरसँ किछु देखब कठिन छल, मुदा रंग-विरंगक गप्प कानमे पड़ैत रहय। ओतेक लोकक गप्प-सप्पमे एकटा स्वर बेस फड़िच्छ सन आ बेस अपनत्वक बोध करा रहल छल। सोचलहुँ जे सभक गेलापर सासुसँ हुनकर परिचय पुछबनि।

–गे दाइ सभ, आब जान छोड़ैत जाहिन। की कहतौ पढ़ुआ कनियाँ जे सभ खाली मुँहेँ उघारि देखैत अछि। खयबा-पीबाक पुछारि किछु नहि।'

ओ स्वर बेर-बेर हमरा लेल 'पढ़ुआ कनियाँ'क सम्बोधन कऽ रहल छल। अपन एकटा नव नामसँ आह्लादित भेल रही। मुदा एक दिस आह्लाद तँ दोसर दिस घोघक प्रक्रियामे घेँट अकड़ल जाइत रहय।

–बपखौकी सभ जेबाक नाम नहि लै अछि। आब भगैत जाइछेँ कि उठाउ हम डंटा...'

अनायास पड़ाहि लागि गेल। हमहूँ चौंकि गेलहुँ। ई तँ वैह स्वर छल, ...एकदम अप्पन सन। आगत किशोरीसभ अपन-अपन नूआ, घघरी सम्हारैत भगलीह। ओ स्वर हुनका सभकेँ दूर तक खिहाड़ि आयल छल।

हमर माथपरसँ नूआ हठात् कियो घिचि देने छल। पुनः वैह स्वर कर्णगोचर भेल- गे पढ़ुआ कनियाँ, चल उठ। बेसी आहे-माहेमे लागल रहबेँ तँ मोसकिल भऽ जयतौ। जो बाड़ी दिससँ भऽ आ तखन खा-पी सूति रहिहेँ।'

आदेश दैत ओ आकृति घरसँ बाहर भऽ गेल छल। कनेक लेल हुनक दर्शनसँ वंचित रहि गेलहुँ। मोनहि मोन हुनका बहुत धन्यवाद देलियनि, कारण घोघक यंत्रणासँ ओ मुक्ति दिया देने छलीह। हुनका जनबा लेल उत्सुकता बढ़ले जा रहल छल। सासु कोठलीमे नहि रहथि। ननदिसँ पूछय चाहलहुँ, तँ देखैत छी जे ओ ओढ़नी मुँहमे कोंचने केबाड़क दोगमे हँसि रहलि छथि। हमरा विस्मित देखि ओ लऽग आबि गेलीह।

–भौजी, ई छथि गुलाब काकी। हिनकर दिमाग घसकल छनि। काल्हि देखब रंग-ताल। एतय तँ टी० वी० नहि अछि, मुदा यैह रंग-बिरंगक 'सिरियल' देखबैत छथि।' हँसैत ननदि रानी कहने छलीह।

दिमाग घसकल छनि...! हम सिहरि गेलहुँ। पहिल व्यक्ति जे आकृष्ट कयने छल, जकर 'पढ़ुआ कनियाँ' सम्बोधन करेजमे सटि गेल छल, तकर दिमाग घसकल ? नहि जानि की की अनुभव होयत !

सासु भोजन करबा लेल बजबय आयल छलीह। तीनू ननदि-भाउज भानस-घर दिस गेल रही। दू-चारि कौर मुँहमे गेल होयत कि आँगनमे थारी खसबाक ध्वनि भेल, झनाक...। संगहि गारिक शब्दकोषक चुनौटा शब्द सभ कर्णगोचर होबय लागल- डोमिनियाँ मौगी, साँयकेँ दूध-भात खाय देत आ हमरा थारीमे नून-तेल खसा देत। देहपर हरहरी वज्र नै खसतौ', बझिनियाँ।'

हम सासुक मुँह दिस ताकय लागल रही। ओ बात बुझि संकेत कयलनि जे चलू ओछानपर तँ कहब।

सुतवाकाल हुनका दऽ ओ जे किछु कहलनि से हृदयविदारक छल। दुनू ननदि अपन ओछानपर फोफ काटि रहल छलीह, मुदा हमर नीन तँ कतहु हेरा गेल रहय....।

गुलाब काकी- हमर सासुक पितियौत दियादिनी, बाल-विधवा। शुरूमे

किछु वर्ष नैहरेमे रहैत छलीह । बाप-भाय खूब सुखितगर लोक । बेस मान-दान कऽ रखथिन मुदा से भाग्यकेँ नहि स्वीकार रहनि ।

एक दिन कोनो पंडितक प्रवचन नैहरमे सुनलनि । स्त्रीक सद्गति सासुरेमे होइत छैक । से सासुर जयबाक जिद्द ठानि देने रहथि । बाप कनैत-कनैत बेटीकेँ सासुर पहुँचा गेलथिन । हुनकर रोदन देखि ककरा ने आँखिसँ नोर खसलैक !

हुनकर अकस्मात् आयब दियर-दियादिनीकेँ नीक तँ नहि लागल रहनि, मुदा किछु बाजियो नहि सकैत छलीह । असलमे पूरे बीस बीघाक हकदार छलीह ओ, सेहो कलम गाछी छोड़ि । एहन स्थितिमे चुप रहबे ठीक बुझायल रहनि हुनका आ से दाँत बैसा रहि गेल रहथि ।

नैहर छोड़ि गुलाब चल तँ अयलीह, मुदा सुखक आँखि कहियो नहि देखि सकलीह । हुनका अयलाक बाद दियादिनीकेँ एक पौआ रोग लगले रहलनि । भानस-भात, धीया-पूता सभक भार हुनकेपर । जऽन लेल पनपिआइ पकबय बैसथि तँ दू-पहर दिन खसि पड़य । तावत मुँहमे जलो नहि दऽ पाबथि ।

एहनामे शरीर कमजोर पड़ैत गेलनि, मुदा कहियो किछु बाजथि नहि । बरखमे दू जोड़ धोती पहिरना भेटनि, सेहो याबत पिओनपर पिओनो नहि लागि जाय, तावत केयो ध्यान-बात नहि देअय । दियरक बाल-बच्चा यावत छोट रहनि तावत तँ सेवाक प्रतिदानस्वरूप किछु ठीक-ठाक चलैत रहल, मुदा ओकर बाद किच-किच होबय लागल रहैक ।

घरमे अन्न-पानिक कमी नहि, मुदा गुलाब कोनो भीख-भिखारिकेँ एक मुट्ठी नहि दऽ सकैत छलीह। आम घरमे सड़ि किएक नहि जाय, मुदा ककरो बच्चाक हाथमे एकटा देबाक अधिकार हुनका नहि रहनि । ई परिस्थिति मितभाषी गुलाबकेँ जोरसँ बाजब सिखा देलकनि । कखनो-कखनो कऽ सवाल-जवाबपर उतरि आबथि ।

दुनू जाउतकेँ जवान होइते तीन फरीक तैयार भऽ गेल रहनि । ओहो दुनू बात-बातपर ललकारि बैसनि । एहि सभसँ अगुताकऽ दियरकेँ अपन हिस्साक जमीन-बात अलग कऽ देबाक हेतु कहि बैसल रहथि ।

ई की छोट अपराध छल ? पुरुषप्रधान समाजमे पुरुषसँ एकटा स्त्री

अपन हिस्सा आ हक माङत आ सेहो विधवा ! एहन अक्षम्य अपराध कऽ बैसल रहथि ओ !

तकर बादसँ रोजक महाभारत शुरू भऽ गेल रहय । गौआँ जँ किछु बाजय चाहय तँ तकरा हुनके लगा गारिक तऽर कऽ देल जाय । एहन अपशब्द सभ बाजय, जाहिसँ एहि झंझटिसँ लोक दूरे रहय । अनकर तँ किछु नहि बिगड़लैक, मुदा गुलाब काकीक स्वभाव आ स्वास्थ्य खराब होइत चल गेलनि । बड़ खौंझाहि भऽ गेल रहथि ।

एक बेर गामसँ बहुत गोटा जलभरियामे बाबाधाम जाइत छल । गुलाब काकीकेँ सेहो जयबाक मोन छलनि, मुदा दियर आ जाउत कान-बात नहि देलकनि । हारिकऽ एक राति, एकटा तमघैल जे हुनका नैहरसँ हुनका वरक विदाइमे भेटल रहनि, तकरा एक गोटा ओतय बन्हक लगा देलनि । बाबाधामसँ तँ भऽ अयलीह मुदा भण्डा फूटि गेल । ओ तँ फुटबेक छल । तकर बाद जे हिनकर गिंजन भेल से सभ तीर्थ-बर्थ बेकार भऽ गेल रहय ।

ओहि दण्डमे हिनका सात दिन तक भोजन नहि भेटल छलनि । इहो तुलसीक पाँचटा दऽल खा जंल पीबि लैत छलीह तेँ ककरोसँ किछु मंगलनि नहि, मुदा तकर बादसँ विद्रोही प्रवृत्तिक भऽ गेल रहथि । एक बातक पाँच सुनबय लगलीह । भूख लगलापर भरि थारी काढ़ि खा लेल करथि ।

दिन बितैत गेल । दुनू जाउतक विवाह भऽ गेलनि । पुतोहु सभ बसय लागल छलि । दुनू जाउत लोकनि बेकामिल भऽ गामे रहैत रहथि । बस जमीनेक उपजाक आस रहैक । खर्च वृहत् आ आमद कम । एहिसँ घरमे झंझटि आर बेसी होबय लागल ।

पहिने तँ एकटा दियादिनी हिनकासँ सौतिनियाँ डाह रखथिन्ह । आब तँ तीन-तीन मिलि लड़य ठाढ़ होथि । तेँ आँगनसँ उबि बेसी काल टोला-महल्ला बुलल करथि । केयो कुछ पूछि बैसनि तँ ओकरेसँ लड़य लागथि ।

दुनू जाउतकेँ भिन्न-भिनाउज भेलाक बाद हिनक स्थिति सूपक भाँटा सन भऽ गेल । हुनका सभ लेल ई गर्दनिक घेघ रहथि । तकर बाद तँ किछु अपनो मानसिक संतुलन बिगड़ि गेलनि । जैह जत्तहि खयबाक आग्रह कऽ देअए खाय लेथि । जकर कोनो वस्तु नीक लगनि, उठा लेथि ।

बस, तहियासँ हिनकर दिनचर्या विचित्र सन भऽ गेल । कखनो कऽ बहुत स्नेहिल भऽ जाइत छथि आ कखनो कऽ बताहि जकाँ करय लगैत छथि, मुदा विशेष बात ई जे पुरानसँ पुरान गप्प बिसरैत नहि छथि । आब तँ हिनकर स्वभावसँ सभ कियो अभ्यस्त भऽ गेल अछि ।

यैह छलनि गुलाब काकीक परिचय । हम टकटकी लगौने सुनैत रहलहुँ। नोरक किछु बुंद निःशब्द भऽ टघरि गेल छल । बेचारी गुलाब काकी. ...सदगतिक आस लऽ सासुर आयलि छलीह, मुदा भेटल रहनि दुर्गति, डेग-डेगपर। अपन जीवनक एक-एक दिन कोना कटने होयतीह, एहन विपरित परिस्थितिमे !

गामक पहिल राति पहाड़ सन लागल छल । गुलाब काकीकेँ देखबा लेल मोन आतुर भऽ गेल रहय ।

भोरमे सुति कऽ उठले रही कि गुलाब काकी हाथमे एकटा ट्रांजिस्टर लेने घरमे प्रवेश कयलनि- गे पढ़ुआ कनियाँ एम्हर आ । कने रेडियो धरा दे तऽ । सिनेमावाला गीत लगा दिहें 'संगम होगा कि नहीं' । बुझलैं ?'

हमरा हाथमे ट्रांजिस्टर दऽ काकी चौकीपर पलथी लगा बैसि गेल रहथि।

आब काकीसँ लाज करबाक समय नहि छल । हम 'ट्रांजिस्टर' धरबय लागल रही । हुनकर फरमाइशी गीत तँ नहि लागल, मुदा कोनो फिल्मी गीत लागि गेल छल । काकी प्रसन्न-चित्त भऽ ओहिपर चुटकी बजबय लागलि रहथि।

हमर ननदि हँसी लगवाक डरेँ कोठलीसँ बाहर चल गेलीह । हम काकी लग जा बैसि गेलहुँ । रातिए निर्णय कयने रही जे गुलाब काकीक हृदयक एक-एक पट खोलि ओतुक्का काँट-कूसक दर्शन करब, चोट आ घावक गिनती करब, जे समय आ लोक हुनका उपहारस्वरूप देने छलनि । हुनकर पीड़ाकेँ मिसियो भरि जँ कम कऽ सकलहुँ तँ अपनाकेँ धन्य बूझब ।

काकीकेँ भरि नजरि देखलहुँ- रुक्ख-सुक्ख वेश, मुदा कटगर नाक, आँखिक स्वामिनी जनिकर कंचन काया जीवनक कठोर वास्तविकताक आँचमे झरकि मजूस्सा भऽ गेल रहय, परन्तु मुँहपरक तेज हुनक अतीतक गरिमायुक्त व्यक्तित्वक परिचय दऽ रहल छल ।

कोनो गप्पक लारचार होयबासँ पूर्वहि, फेर अयबाक आश्वस्ति दऽ काकी चल गेल छलीह । हमहूँ दैनिक क्रियासँ निवृत्त भऽ सासुक काजमे हाथ बँटबय लागल रही ।

तखन एक-एक राति जेना बरख दिनक भऽ गेल छल । जीवनक एहन कटु रुपक दर्शन एहिसँ पूर्व नहि भेल रहय । एक मोन भेल जे प्राते पटना विदा भऽ जाइ, मुदा सुरेश हँसी करताह- की, भऽ अयलहुँ गामसँ ? कतय मास दिन रहय चाहै छलहुँ आ चल अयलहुँ चारि दिनमे ! भला 'मॉडर्न' स्त्री सभकेँ कतहु गाम नीक लगनि !'

नहि, हम अपन बातक पक्का छी से देखा देबनि । मुदा ओहूसँ बेसी गुलाब काकी जेना बाट छेकि रहल छलीह । हुनकासँ एखन कहाँ भरि पोख गप्पो कऽ सकल रही । लग जयबाक अवसर तँ तकिते रही मुदा मुट्ठीक दोगसँ बालु जकाँ चुकि जाइत छलहुँ ।

ठीक दोसर दिन एकटा घटना घटित भऽ गेल । दलान धेने चल जाइत चुड़िहाराकेँ गुलाब काकी घेरि लेने रहथि । दुनू हाथमे दूटा ढेप लेने चूड़िहारापर गरजि रहल छलीह- रे डोमबा, उतार छिट्टा, नै तँ सभ चूड़ी भड़कुस्सा कऽ देबौ । सरधुआ, उतारै छेँ कि नहि ? मारियौ ढेपा ? हमरा बिना पहिरौने डेग उठौलैं तऽ बुझि जो ।'

हम देबालमे सटलि, खिड़कीक दोगसँ सभ-किछु देखि रहल छलहुँ । चूड़िहारा डरेँ छिट्टा उतारि लेने छल । डिब्बा सभमेसँ बेमेल चूड़ी सभ छाँटि, हुनका दुनू हाथमे पहिरा देलक । कात-करौटमे ठाढ़ि आइ-माइ आँचरसँ मुँह झाँपि हँसी नुकौने छलीह । काकी चूड़ी पहिरलाक बाद खूटमेसँ दसटकिया निकालि चूड़िहाराकेँ देने रहथिन- तोरा की होइत छलौ जे हम मँगनी पहिरबौ ? रे मुँहझौंसा, हम तँ छिट्टा कीनि सकैत छी । जनै' छैं, पूरे बीस बीघाक मालिक छी हम । कान खोलि सुनि ले, बिनु हमरा पहिरौने जँ ककरो पहिरौलैं तँ गाम टपब मोश्किल भऽ जयतौ ।'

हम ओहिना ठाढ़ि रही कि काकी घरमे प्रवेश कयलनि । हाथक चूड़ी प्रयासपूर्वक खनकि रहल छलनि- गे कनियाँ, देख तऽ ! चूड़ी नीक छै ? ई मौगी सभ अपने पहिरि लैत अछि, हमर एको बेर पुछारि नहि । कने' लऽग आबि देख ने....।'

ओ हमर डेन पकड़ि अपना लग घीचि लेने रहथि । हमर शरीर जेना सुन्न भऽ गेल रहय । भीतरसँ किछु चिरैत बाहर अयबा लेल जेना जोर मारि रहल छल । काकीक चूड़ीवाला हाथ अपना हाथमे लऽ लेने रही ।

–काकी, बड़ सुन्दर लगैत छनि । बड़ दिव्य । मोन होइए देखिते रही .....।'

एकर बाद नहि सम्हारि सकल रही अपनाकेँ । आँचरसँ मुँह झाँपि चौकीपर खसि पड़ल रही । भीतरक धुआँ जल-विन्दु बनि आँखिक कोरसँ टघरय लागल रहय ।

पुरुषक बनाओल एहि सृष्टिमे सभ प्रतिबंध स्त्रीए पर किएक लगाओल गेल अछि ? पुरुष किएक नहि पत्नीव्रता आ सता होइत छथि ? असमयमे इच्छापर लगाओल आँकुस कोना विद्रोहक रूप धऽ लैत अछि, तकर पैघ उदाहरण छलीह, गुलाब काकी । कुंठित भावनाक विस्फोटक रूप, जकरा लोक बतहपनीक संज्ञा देने छल । पतिक मृत्यु भेलासँ की स्त्रीक संवेदना मरि जाइछ ? एहिसँ तँ नीक जे ओकरा पति संग चितापर जरा देल जाइत छलैक । जीवन भरि भुस्साक भुम्हरू आगि जकाँ जरबा लेल बाध्य करब अपराध थिक, मुदा अज्ञानताक अन्हरजाली लोकक आँखिपरसँ कोना हटाओल जाय, कोना बुझाओल जाय ? हम आन्हर सामाजिक मर्यादाक बेड़ीमे जकड़ल छटपटाइत रहलहुँ ।

–गे दाइ, हम की जाने गेलहुँ जे कनियोंकेँ पहिरवाक मोन छै । अहाँ नहि कानू । हम यैह तुरंत चुड़ी नेने अबैत छी ।'

हमरा उठबासँ पूर्व ओ बाहर दौड़ि गेल छलीह । हमर रूदनकेँ ओ किछु आओर बुझने रहथि आ सत्तेमे कनेक कालक बाद कोनो आँगनमे बैसल चूड़ीहारासँ चूड़ी कीनि हमरा दऽ गेल छलीह । ओहि चूड़ीक मूल्य बड़ बेसी छल हमरा लेल ।

तकर बाद काकी हमरासँ खूब घुलि-मिलि गेल छलीह । बड़ी-बड़ी काल हमरासँ गप्प करथि । हमहूँ हुनका मनोनुकूल गप्प कऽ अपना लग लपटौने रही । कहियो ओल तँ कहियो अरिकोँच हमरा लेल सनेस आनथि । हम खूब हुलसिकेँ ओकरा बनाबी ओ काकीक संग खाइ । हुनकर तृप्तिसँ बड़ संतोष भेटैत छल ।

ओहि दिन आँगनमे बैसल सासुसँ अमोट पाड़ब सिखैत रही कि तखने हाथमे एकटा पोस्टकार्ड लेने अयलीह ।

–गे पढ़ुआ कनियाँ, कने इन्दिरागाँधीकेँ एकटा चिट्ठी लिखि दे । पहिनहुँ एकटा चिट्ठी देने छलियनि मुदा कोनो उतारा नहि भेटल । जानि नहि, डकपीनमा देबो कयलक कि नहि ।'

–की लिखबाक छनि ? ई कहने जाथु, हम लिखि दैत छियनि ।' आँगनमे राखल डोलमे हाथ धो हुनकर हाथसँ पोस्टकार्ड लऽ हमहूँ कलम पकड़ि बैसि गेलहुँ ।

–यैह जे बइमनमाक राज भऽ गेल छै' । जनी-जातिक हिस्सा सरधुआ सभ हड़पि लैत अछि । अपना तँ बाप खूब धन-वीत दऽ गेलनि, मुदा जखन देशक गद्दीपर बैसल छथि तँ लोकक दुख सुनहि पड़तनि । ओ दिल्लीएमे रहती तँ की बुझथिन । कहियो कऽ गामो आयल करथु ।' भीतरे-भीतर काकीक सोझमतियापर हँसी लागल छल, मुदा पोस्टकार्ड पर किछु-किछु लिखैत रहलहुँ ।

–हम सभ किछु लिखि देलियनि अछि । चिट्ठी पबिते सभ राज-काज छोड़ि चल अओती, मुदा ई कहथु जे हुनका रहबा लेल कोन घर देथिन ?'

काकी सोचमे पड़ि गेलीह । सम्भवतः एहि पर नहि ध्यान गेल रहनि । हम बातके बदलबाक मने पोस्टकार्ड आ कलम एक दिस रखैत हुनका लग ससरि आयल रही ।

–एकटा बात पुछियनि ? कका देखयमे केहन रहथिन ? किछु मोन छनि ?'

–धूर बताहि, हम कहाँ देखलियनि । विवाहमे बड़ छोट रही । दुरागमनसँ पहिले स्वर्गवासी भऽ गेलाह । हमरा तँ आँचरमे लोटा बान्हि दुरागमन भेल रहय । काकी बजैत-बजैत जेना कतहु दूर चल गेल रहथि । मुख-भंगिमा गंभीर भऽ गेल छलनि । एहन लागल जेना हुनका लऽग दुःस्मृतिक वृहत् कोष हो, जकरा बीच हुनकर वर्त्तमान डुबैत-उगैत एकटा आकार पयबा लेल छटपटा रहल हो । हुनकर मुँहपर पसरल पीड़ा हमरा व्यथित कऽ गेल छल । निश्चय कयलहुँ जे आब हुनकर अतीतकेँ नहि कोड़ब ।

मुदा, तकर बाद ओ स्वयं लोकक मुँहसँ सुनल ककाक जीवन प्रसंगक घटना सभ समय-समयपर सुनाओल करथि । लक्ष्य करी जे ओहि काल ओ बहुत आनन्दित होथि । कखनो कोनो कारुणिक प्रसंगपर हिचुकि उठथि । हम अपन हाथ हुनक मुँहपर राखि दी । पुनः ओ सहज भऽ जाथि । एहिसँ पूर्व हुनका अपन मोनक बात कहबा लेल एहन श्रोता नहि भेटल रहनि ।

काकीक संग हमर एतेक घुलब-मिलब बहुतोकेँ अखरैत रहनि, मुदा एहि पर हमर कखनो ध्यान नहि देलहुँ । क्यो कहियो बैसथि- कनियाँ अहाँ तँ कोनो जादू कऽ देलियनि अछि ।' वास्तवमे काकीक चिकरब आ बौआयब बहुत कम भऽ गेल रहनि । ओ अपन बेसीसँ बेसी समय हमरे लऽग बिताओल करथि । सासु हुनका प्रति बहुत सहानुभूति रखैत छलीह, मुदा ननदिकेँ कखनो कऽ उकरू सन लगनि, तथापि हुनको कहुना मना लैत रही ।

समय पाँखि लगा उड़ैत रहल । गर्मीक छुट्टी समाप्त भेल आ शहर जयबाक दिन सेहो आबिए गेल । एक दिस सुरेशसँ भेट करबाक मोनमे उल्लास छल तँ दोसर दिस काकीसँ विछोहक पीड़ा ।

जयबाक दिन भोरेसँ काकी हमर मोटरी-चोटरी बन्हबामे संग दैत रहलनि । बीच-बीचमे जल्दी अयबाक लेल आग्रह करैत जाथि ।

टमटम तैयार भऽ आबि गेल रहय । काकी चूड़ा-दही सानि मुँहमे एक कौर दऽ देने छलीह, शुभयात्रा लेल । अपन जीवनक दुःखद यात्राक अंतिम पड़ावपर ठाढ़ि गुलाब काकी हमर यात्राकेँ शुभ बनयबा लेल व्यग्र छलीह । हम अपनाकेँ नहि रोकि पओलहुँ । हुनका पाँजमे लऽ सिसकि उठल रही । काकी चौकीपर बैसा आँचरसँ नोर पोछि देलनि ।

-धुर जो गे, पढुआ-कनियाँ । तोँ तँ हमर नोर सुखा देलैँ आ अपने की नोर बहबैँ छेँ । खुशी-खुशी जो । इन्दिरा गाँधीक अबैयामे तँ तोरा अयबाके छौ । चिट्ठी अबितहि बुचनासँ समाद पठा देबौ । हम बाट तकबौ, जरूर अबिहेँ । मुदा एहि बेर बचबाकेँ संग लेने अबिहेँ, अपना हाथेँ कनगुरिया धरा देबौ ।'

ओहू घड़ी काकीक गप्पसँ मुसका उठलि रही । ननदि सेहो हँसैत अयबाक आश्वस्ति देलनि । सासु-ननदि संग टमटमपर सवार भऽ चलि देने रही ।

दूर चल जाइत टमटमसँ हुलकी मारि देखलहुँ, गुलाब काकी ओहिना ठाढ़ि छलीह । एकटक एम्हरे तकैत । टमटम आगाँ जा रहल छल आ मोन पाछाँ । किछु कालक बाद ओ अदृश्य भऽ गेलीह, मुदा हुनका हम अपना संग अनुभव करैत रहलहुँ । कानमे बेर-बेर स्वर ध्वनित होइत रहल, 'गे पढुआ कनियाँ, फेर अबिहेँ ।'

जानि नहि ई फेर कहिया आओत ?

●

युद्ध

दुनू भाइ-बहिन कखनो एक बातपर सहमत नहि भऽ पाबथि । चुन्नूकेँ आमलेट-ब्रेड चाहियनि, तँ बेबीकेँ पूड़ी-भुजिया । आखिर चूल्हापर तँ कोनो एके वस्तु एक बेरमे तैयार होयत । काल्हि बेबीकेँ मैगी बना कऽ देलाक बाद चुन्नू लेल हलुआ बनौने छलीह तँ चुन्नू बेबीकेँ बेसी मानबाक आरोप लगौने छलाह ।

एहन घड़ीमे की बाजल जाय, से सोचि नहि पाबथि ओ, तेँ बेसी काल चुप लगौने रहथि । घड़ीक सूइ नौसँ आगाँ बढ़ि गेल अछि । बैंकमे आइ जेनरल मैनेजरक अबैया छैक । जल्दीसँ साबुन-तौलिया लऽ बाथरूममे 'सावर'क नीचाँ ठाढ़ होइत आँखि मुनि लैत छथि । मोनक उद्विग्नता मेटयबाक एहिसँ उत्तम साधन कोनो नहि ।

राजेशक किचकिचसँ उबिया कऽ कतेक सहजतासँ ओ फराके रहऽ लागल छलीह । राजेशकेँ स्त्रीक 'कैरियरिस्ट' होयब कनेको पसिन नहि छलनि । हुनका दृष्टिकोणमे स्त्रीकेँ पति छोड़ि ने कोनो कैरियर होयबाक चाही आ ने व्यक्तित्व । स्त्रीक कर्मस्थली भनसाघरसँ लऽ पतिक ओछाओन तक मानैत रहथि ।

मुदा ओ एहि बातकेँ स्वीकार नहि कऽ सकलि रहथि । अपन बैंकक नोकरी नहि छोड़ि सकलीह । राजेशक कहब रहनि जे नोकरी करऽबाली स्त्री पुरुषकेँ पूर्ण संतुष्टि नहि दऽ सकैछ । एहिपर ओ अड़ि गेलि छलीह । हिनकर कहब छलनि जे पुरुषक संतुष्टिक संग स्त्रीयोक संतुष्टिक महत्त्व छैक आ से नोकरी हुनक संतुष्टि थिक ।

एहि बातपर कते दिन खटपट होइत रहल छल । अन्ततः ओ फराके डेरा कऽ लेने छलीह, एहि स्वाभिमानक संग जे दुनू बच्चाक पालन ओ स्वयं कऽ सकैत छथि । हुनकर सोच रहनि जे स्त्रीक पूर्णता ओकर मातृत्व छैक, से भगवान आँचरमे दू टा फूल दऽ देने रहथिन । एही दुनूकेँ बनेबा-सजयबामे समय कोना बीति जायत, से बुझियो नहि सकती । एक दिन दुनू योग्य सन्तानकेँ राजेशक समक्ष ठाढ़ कऽ विस्मित कऽ देतीह । साबित कऽ देखौतीह जे स्त्रीक पूर्णता सन्तानसँ छैक पतिसँ नहि ।

चौका-बर्त्तन लेल एकटा दाइ दुनू साँझ अबैत छलनि । भानस-भात ओ अपने करैत छलीह । धीआ-पूताक स्वास्थ्य लेल एतेक करब आवश्यक आ से अपन कर्त्तव्यक निर्वाह मनोयोगसँ करैत रहलीह । दुनूक पढ़ाइ-लिखाइक उचित व्यवस्था कऽ ओ सन्तुष्ट रहथि ।

ड्रेसिंग टेबुलक आगाँ जल्दी-जल्दी तैयार भऽ रहल छलीह ।- 'माँ बीस टा रुपैया दिअऽ ।' -चुन्नूक स्वर खटसँ वर्त्तमानमे लऽ अनने रहनि । बैगसँ झटपट दू टा दसटकिया निकालि बढ़ा देने रहथि । रुपैया लैत चुन्नू धड़फड़ाइत कोठलीसँ निकलि गेल छलाह । बेबी बरंडापर बैसलि सहपाठिनसँ गप्प करबामे तल्लीन छलीह ।

दाइ घरक काज कऽ चल गेल छल । कियो जल्दीमे दू टा रोटी निकालि आगाँ दितनि तँ खा कऽ पानि पीबि लितथि, मुदा से सम्भव नहि । खुट्टीपरसँ बैग उतारि झटकैत डेगेँ सीढ़ी उतरि गेल छलीह ।

-माँ, हमर नीला सूटक मैचिंग ओढ़नी लेने आयब आ दर्पण स्टूडियोसँ फोटो आइए देत, सेहो लऽ लेब ।'

बेबीक स्वर दूर तक खेहारने छलनि । आश्वस्तिमे हाथ डोला देने छलीह ।

बैंकक मुख्य द्वारपर मैनेजर सोझाँ ठाढ़ भेटि गेल छलनि । प्रणाम करैत बगल दऽ निकलि गेल छलीह मुदा ओकर प्रश्नवाचक दृष्टि पीठपर ठप्पा जकाँ सटि गेल छल । चपरासीकेँ एक गिलास पानि अनबाक आर्डर दैत कुर्सी पर धप दऽ बैसि गेल छलीह । तखनहि सोझाँक टेबुलपर वर्माकेँ देखि मोन धुआँइन भऽ उठलनि ।

ओहि दिनक ओकर कुटिल मुस्कान नहि बिसरि पबैत छथि । पाँच बजे बैंकक आगाँ ओ रिक्शाक प्रतीक्षामे छलीह । बेसी सहकर्मी अपन अपन स्कूटर, मोटरसाइकिलसँ चल गेल रहथि । तखनहि वर्मा अपन स्कूटर धड़धड़बैत सोझाँ आबि ठाढ़ भऽ गेल छल- मिसेज दास, अप्सरामे बेजोड़ फिल्म लागल अछि । चलू फस्ट शो देखि आबी ।'

माथमे जेना घिरनी नाचि उठल रहनि । कनपट्टीसँ सोनित फुटबा लेल व्यग्र भऽ उठल रहनि । बहुत कठिनतासँ संयमित भेल रहथि आ खाली जाइत रिक्शाकेँ हाथसँ रोकबाक संकेत करैत कहने छलीह- मिस्टर वर्मा, अपन घरक बाट पकडू । पत्नी रस्ता देखैत होयती । हमरा रिक्शा भेटि गेल अछि । धन्यवाद !'

रिक्शापर बैसि चलि देने छलीह । वर्माक मुहँ फक भऽ गेल रहै । बाट भरि वैह दृश्य माथमे घुमैत रहलनि । ई पुरुष सभ अपनाकेँ की बुझैत अछि ? एहन प्रस्तावसँ हुनक एकांत तपस्या भंग भऽ सकैत अछि ? तकरा बाद मुदा वर्मा फुटली आँखिए नहि सोहाइत रहनि ।

प्रायः ओ कुर्सी तेना कऽ घुमा लैत छलीह, जाहिसँ ओकरापर नजरि नहि पड़य, मुदा आइ धड़फड़ीमे कुर्सी टेढ़ करब बिसरि गेल रहथि । तखनहि चपरासी बिलम्बसँ अयबाक नोटिस दऽ गेल रहनि । जल्दी जल्दी टेबुलपरका काज निपटा, नोटिसक जवाब मैनेजर तक पहुँचा देने रहथि ।

बैंकसँ घुरैत काल घरक किछु निघटल वस्तु मोन पड़ि अयलनि । चौकपर तरकारी कीनैत छलीह कि तखनहि राजेशकेँ रिक्शासँ जाइत देखलनि । एक निमिष भरि लेल दुनूक आँखि मिलि गेल रहनि । बलहुँ ठोरपर हँसी अनैत उजड़ल केशपर हाथ फिरौने छलीह, एहन सन जेना हुनकर जीवन गाड़ी निर्बाध गतिसँ आगाँ बढ़ल जा रहल हो । ओ पूर्ण छथि । पूर्णताक प्रतीक दुनू सन्तानक संग । मुदा कतेक पूर्ण छथि, से वैह टा जनैत छथि । दोसरकेँ किछु जनबाक अधिकार कहाँ देलनि अछि ? नीक बेजाय जे अछि, से हुनकर छनि आ वैह स्वीकारो कयने छथि ।

भोरसँ साँझ तक घर, बैंक आ बजारक काजमे फँसल ओ सोचैत रहैत छथि जे स्त्री लेल जीवनमे अपना दमपर किछु करबाक निर्णयक की एतेक पैघ मूल्य चुकबऽ पड़ैछ ? अपना लेल किछुओ समय नहि भेटैत छनि । नीक

पुस्तक अथवा पत्रिका हाथमे लेबाक कखनो पलखति नहि । प्रिय गायिका नूरजहाँ आ गीतादत्तक कैसेट सुनना कतेक दिन भऽ गेल !

आखिर टेपकेँ पॉप म्यूजिकसँ फुर्सति भेटय तखन तँ ! एक दिन चुन्नू नूरजहाँक कैसेट टेपसँ निकालि पलंगपर फेकि देने छल । 'माँ, ई की आदिम युगक कैसेट लगा दैत छी । आउट ऑफ डेटेड साँग्स । लोक सुनत तँ एकरा भूतबंगला बूझत । फॉरगेट इट मॉम । नव युगक गीत सुनल करू ।'

कैसेटकेँ उठा आलमारीमे राखि देने छलीह । हुनका लगलनि, जेना ओ स्वयं 'आउट ऑफ डेट' भऽ गेलीह अछि ।

काल्हि साँझमे चुन्नू टहलि कऽ आयल छल तँ ओ कनेक सटि कऽ ठाढ़ भऽ गेल छलीह, जाहिसँ मुँहक गन्ध बुझि सकथि । हुनका शंका रहनि जे सिगरेट आदिक लति तँ ने धैलक अछि । चुन्नू थाहि लेने छल -माँ, अहूँ खूब छी । सहीमे बिना पढ़ले-लिखल माय नीक होइत छथि । पढ़ल-लिखल माय तँ कानूनची होइत छथि । संगीसभक मायकेँ देखैत छी, बेटाकेँ घर अबिते ओकरापर जान लुटबऽ लगैत छथि । एकटा अहाँ छी जे हरदम उपदेश आ सदिखन भाषण ।'

स्तब्ध रहि गेल छलीह ओ । की बापसँ एना कहि सकैत ? नहि, पुरुषकेँ पुरुषेसँ भय होइत छैक । माय तँ ममतामयी होइत छथि, क्षमाधारिणी । कोनो स्थितिमे क्षमा करबे हुनक धर्म अछि, नियति अछि आ तेँ किछु कहल जा सकैछ । ओ चुप भऽ गेल रहथि आ थारी परसि चुन्नूक आगाँ दऽ गेल छलीह ।

बेबी रातिए सुनौने छलीह जे स्कूलक ट्रिप बम्बइ जा रहल अछि, एहिमे एक हजार टाका लागत, से ओ अवश्य जयती । हँ- नहि केर कोनो गुंजाइश नहि छल । ओ जनैत छथि जे अस्वीकार कयलापर बेटी होयबाक उपालम्भ सुनऽ पड़तनि, तेँ तुरंत स्वीकारि लेने रहथि । चुन्नू सेहो पछिला सालसँ कोट सिअयबाक जिद्द करैत छलाह । अपना-अपना दुनियाँमे लीन, नवयुगक युवा यात्रीक बीच जेना ओ स्वयं कतहु भुतिया गेल होथि । अपन अस्तित्वक लेल दीर्घ तपस्या करऽबाली जेना अपनहि तरहत्थीपर पिछड़ि खसि पड़ल होथि । वस्तुतः स्त्रीसँ सभ बलिदानेक अपेक्षा रखैत अछि, ओ पति हो वा सन्तान । अन्ततः दूधमे पानि जकाँ ओकरे विलीन होबऽ पड़ैछ ।

खिड़कीक दोग दऽ सूर्यक पहिल किरण सिरमाकेँ स्पर्श कयने छल । देबालघड़ीमे छओ बजबाक ध्वनि । अपन तरहत्थीपर नजरि गड़बैत जल्दीसँ उठि बैसैत छथि । 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'- बस, ई हाथेटा अपन अछि, जकरासँ संग निबाहबाक अनुरोध कैल जा सकैछ ।

'वास-बेसिन'पर मुँह धो कऽ चूल्हापर चाहक पानि चढ़ा, जलखैक ओरिआनमे लगैत छथि ।

आइ पहिली तारिख अछि । बेबीक टूर लेल आ चुन्नूक कोट लेल रुपैया अलग कऽ दूधवला, पेपरवला, धोबी, बिजली आदिकेँ चुकयबाक छनि । बड़ा बाबूक बेटा अस्पतालमे भर्ती छनि, तकरो जिज्ञासा करब आवश्यक । मिश्राजीक बेटीक विवाहक हकार सेहो पुरबाक अछि । लोहियामे फूलैत पूरीक संग माथमे काजक चिट्ठा सेहो फूलि रहल छलनि । दुनू बच्चाक फरमाइश पूरा कऽ ओ बाँकियो काज सभ कैए लेतीह । चरैवेति....चरैवेति...चरैवेति ।......

ओ ने तँ थाकल छथि आ ने टूटल । जीवनो तँ एकटा युद्ध अछि, से एकटा वीर योद्धा जकाँ लड़िते तँ जा रहल छथि । फरक मात्र स्थानक भेल अछि, मुदा विश्वास छनि, कतहु पराजित नहि होयती । एहन परिस्थितिसँ वैह टा नहि, हजारो स्त्री जूझि रहलीह अछि । टूटि कऽ मृत्युकेँ प्राप्त करबासँ बेसी नीक युद्ध करैत मृत्यु तक पहुँचब थिक आ तेँ वीर योद्धा जकाँ लड़िते रहती ।

●

गुणनफल

मीरा माइक प्रसन्नताक कोनो सीमा नहि । आइ भोरेसँ छोट-मोट मोटरी बन्हबामे लागलि छथि । आखिर नव गृहस्थी बसतैक । कतेक छोट-छिन वस्तुक खगता होइत छैक ।

ताबत ध्यानमे अयलनि जे थोड़ेक कोबीक सुखौंत आ चिक्कस सेहो बान्हि देबाक थिक । नहि तँ जाइते बजारक मुँह देखऽ पड़तैक । ई सभ करैत-करैत आँखि नोरा गेलनि । मीरा फूल सन कोमल आ सादा कागत सन स्वच्छ । आँखिक आगाँ चमकि गेलनि विवाहक ओ दिन ।

परिछनि करैत काल दाइ-माइ सबकेँ मीराक भाग्यपर ईर्ष्या भेल रहनि । केओ टिपैत कहने छलीह- 'गे दाइ, ई तँ सत्ते मीरा आ कृष्णक जोड़ी हेतै ।'

वर जहिना कुर्त्ता आ गंजी खोललनि कि सभक नजरि हुनक उन्नत आ पुष्ट छातीपर रुकि गेलनि । मीरा माय जल्दीसँ जमायकेँ डोपटा ओढ़ाए काजर लगा देलथिन आ गोसाञुनिघर लऽ चलि गेलीह । आङन-घर 'शुभे हे शुभे'सँ मुखरित भऽ गेल रहय ।

सिन्दुरदान नीक जकाँ सम्पन्न भऽ गेलैक । मीरा माय निश्चिन्त भऽ साँस लेलनि । मुदा ओ बेसी दिन निश्चिन्त नहि रहि सकलीह । चारि दिनुक बादे ओझाक नाकर-नुकुर कानमे पड़ऽ लगलनि ।

ओझा, माने सुनील बाबू खबासक संग स्नान करऽ जयबाकाल आङनेमे ठाढ़ि सासुकेँ सुनबैत कहलनि- हमरा तँ सूनल छल जे मीरा मैट्रिकक परिक्षार्थी छथि । मुदा, हिनका तँ मिडिल मात्रक योग्यता छनि । हम शहरमे रहनिहार लोक

छी । पढ़ल-लिखल लोक सभक संग उठब-बैसब अछि । ओहिमे मीरा कोना 'एडजस्ट' करतीह ?'

मीरा माय कमलपुरवाली अति विनम्र शब्देँ ओझाकेँ बुझबैत कहने छलीह, –मीरा एखन मात्र चौदह वर्षक अछि । ओकरा जेना जे पढ़बऽ चाहथिन से पढ़ि लेतनि । हम एकसरि अपना भरि मीराकेँ सुयोग्य स्त्री बनबाक शिक्षा देने छिऐक । आब आगाँ हिनकर थिकनि । जेहन बनाबथि । जेना राखथि ।'

सप्ताह दिन मात्र सासुरमे रहि ओझा विदा भऽ चल गेल छलाह । सासुक बहुत आग्रहपर फगुआमे अयबाक भरोस देने रहथि ।

मुदा, तीन फगुआ बीति गेल । ओझाक कोनो पता नहि । शिवरात्रिक मेलामे ओझाक कोनो गौआँ बौआ ककाकेँ कहने रहथि जे हुनकर जोगर कनिञा नहि भेलनि, तेँ आन-जान छोड़ने छथि ।

ई बात बुझिते कमलपुरवाली कबुला-पातीक अमार लगा देलनि । बेटीक मुँह देखिते हृदय टुकड़ी-टुकड़ी होबऽ लगनि । मुदा साध्य की ? तीन वर्ष तीन युग सन बीतल छल ।

ओझाकेँ नहा कऽ घर जाइत देखि कमलपुरवालीक ध्यान टुटलनि । मोटरी बान्हब छोड़ि दौड़लीह भानसघर । जैधीकेँ चूल्हि लग बैसा आयल रहथि । कटोरी सभमे तीमन-तरकारी सजबऽ लगलीह । ओझाकेँ भोजन पठा कऽ फेर पेटी सरिआबऽ लागल रहथि । जेठकी दियादिनीकेँ सोर पाड़ि मीराकेँ नूआ बदलि केश-खोपा कऽ देबऽ कहलनि ।

सभ ओरिआओन होइत बेर खसि पड़लैक । ओझाक संवाद आयल जे पटना पहुँचैत राति भऽ जायत, तेँ जल्दी विदा होयब जरूरी । आङनमे आइ-माइ जुमि गेल छलीह ।

कमलपुरवाली मीराकेँ भरि पाँज पकड़ि घर लऽ गेलीह । हृदयमे हाहाकार भऽ रहल छलनि । किछु फूटि कऽ बाहर होबऽ चाहैत छल, मुदा अपनाकेँ नियंत्रित कयने छलीह । इहो दिन भेल जे तीन बरखक बाद ओझा मीराकेँ लेबऽ अयलाह अछि । दुनू हाथे बेटीक गाल पकड़ि बुझबैत कहलनि, 'दाइ, आइसँ सभ किछु वैह छथुन । जेना रखथुन तहिना रहिहेँ । बिनु पुरुषक

स्त्री पाथर होइए । बिसरि जइहें सभकिछु । बस, कहियो काल पोस्टकाडपर कुशल-मंगल खसा दिहें । आर किछु नहि ।'

माय, काकी, काका सभकें गोड़ लागि विदा भऽ गेल छलीह मीरा ।

बसमे चुपचाप बैसलि मीराक आँखिक आगाँ झुलैत रहलनि सभ दृश्य- पोखरि, इनार, कलम, सरिसोक साग आ संगी बहिनपा- जोड़ी, फूल, लौंग...। मायक बात मोन पड़ि गेलनि । ई सभ तँ बिसरि जयबाक थिक । मन रखबा लेल छथि, बस इएह टा !

पटना पहुँचि अपन गृहस्थी बसयबामे मीरा लागि गेलीह । बहुत-किछु तँ माय संग कऽ देने रहथिन । बाँकी आवश्यक वस्तु सुनील जुटा देलथिन । मीरा अपन गृहस्थीमे लीन भऽ गेलीह ।

मास दिन तँ पाँखि लगा उड़ि गेल । मुदा एहि बात दिस मीराकें आइ ध्यान गेलनि । ऑफिस जयबाक तँ एकटा कोनो निश्चित समय होइत छैक । सुनीलकें बाहर जयबाक तँ कोनो निश्चित समय नहि छन्हि । ओ ई बात आब सुनीलकें पुछबे करतीह ।

एक दिन उदास स्वरमे सुनील कहने रहथिन, –मीरा, हम बहुत दुविधामे जीबि रहल छी । अहाँसँ नुकायब ठीक नहि । वस्तुतः हमर नोकरी छूटि गेल अछि । एम्हर-ओम्हरसँ पैंच-उधार लऽ घरक खर्च चला रहल छी । आब दोस्तो-महीम संग देब छोड़ि देलनि अछि । एहन समयमे अहीं हमर मदति कऽ सकैत छी ।'

मीरा हतप्रभ भऽ गेलीह । ओ कोना मदति कऽ सकैत छथि ? ओ तँ अधिक पढ़लो-लिखल नहि छथि ।

हुनक मनोभाव पढ़ि सुनील बुझौने रहथिन- यैह कातहिमे सौंदर्य-केन्द्र छैक । ओहिमे तीन मासक प्रशिक्षण लऽ लिअ आ फेर ओतहि काज करब शुरू कऽ दिअऽ । दू-तीन हजार मास कमायब साधारण बात अछि ।'

ओहिना ठाढ़ि रहली मीरा । हुनका बुझबामे किछु नहि अयलनि । सौंदर्य-केन्द्र ? प्रशिक्षण ? रुपैया ? तीनू शब्द मनमे बेर-बेर हौंड़ऽ लगलनि । ओ तँ स्त्रीक काज घर सम्हारब बुझैत छलीह । ई हुनकासँ की करबऽ चाहैत छथि ?

सुनील मीराकें हाथ पकड़ि चौकीपर बैसा लेने रहथिन- 'मीरा, हम सभ बुझा देब । बस, जेना हम कहैत छी, से करैत चलू । अहाँ सुंदरी छी । कने 'स्मार्ट' भऽ जाउ । फेर देखू ने, हमर सभक दरिद्रा कोना भागि जायत ?'

ई सभ किछु सुनबामे मीराकें नीक नहि लागल रहनि मुदा माइक कहल 'जहिना रखथुन, तहिना रहिहें' मन पड़ि गेलनि । ठीके तँ छैक, जहिना रखताह तहिना रहब ।

ओही साँझमे सुनील नव डिजाइनक साड़ी, रेडिमेड ब्लाउज, हिल चप्पल एवं अन्य फैशनक वस्तु मीराक आगाँ पसारि देलनि ।

–ई सभ पहिरि कऽ तँ अहाँ परी जकाँ लागब मीरा ! मुदा, हमरा विचारें अहाँक नाम बदलि कऽ जँ 'रूबी' रहितय तँ बेसी नीक होइत । मीरा बहुत ओल्ड फैशनक नाम थिक । आइसँ हम अहाँकें रूबी कहल करब ।

सभ किछु स्वीकार करबाक अतिरिक्त ओ की कऽ सकैत छलीह ? प्रातःकाल सुनीलक संग हुनका सौंदर्य-केन्द्र जयबाक छलनि । सुनीलक विचार छलनि जे प्रशिक्षणसँ पूर्व हुनकर अपन सौंदर्यमे निखार आबि जयबाक चाही । तखनहि ओ ठीक ढंगसँ प्रशिक्षण लऽ सकैत छथि ।

आज्ञाकारी नेना जेना अभिभावक संग पाठशाला जाइत अछि, तहिना दोसर दिन सुनीलक पाछाँ-पाछाँ मीरा विदा भेलीह । सौंदर्य-केन्द्रक व्यवस्थापिका मिस डेजीसँ मीराक परिचय दैत सुनील कहने रहथिन, 'ई हमर पत्नी 'रूबी' छथि । हिनका कने अहाँ 'स्मार्ट' बना दियनु, जाहिसँ इहो अहाँक 'एसिसटेन्ट' बनि सकथि । बेस, तँ यावत हिनका निखारबामे समय लागत, ताबत हम एकटा मित्रसँ भेट कऽ अबैत छी ।'

सुनील तँ चल गेल छलाह, मुदा मीरा बलिक छागर जकाँ भयभीत दृष्टिसँ मिस डेजी दिस तकिते रहलीह ।

तकिते तँ रहि जइतथि, मुदा मिस डेजी मीराकें केन्द्रक भीतर लऽ कऽ चल गेलीह । ओतऽ मोट-मोट स्त्रीकें कुर्सीपर ओलरल आ मुँहपर लेप लगौने देखि मीराक मन भिनकि गेलनि । ओतूका बात-व्यवस्था बड़ अजगुत बुझना जाइनि । ई कोन दुनियाँ थिक ? एहि दुनियाँक खिस्सा तँ कतहु नहि सुनने छी। किछु काल मीराक सुधि-बुधि जेना हेरा गेलनि ।

ध्यान तखन भंग भेलनि जखन मिस डेजीक कैंची हुनक केशपर चलब शुरू भेल । मीरा, 'नहि-नहि' कहैत उठि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलीह ।

-देखू, अहाँक पति जे निर्देश देलनि अछि, सैह हम कऽ रहल छी । हमर समय बर्बाद नहि करू ।' भौं चढ़बैत मिस डेजी बजलीह ।

ठीके तँ, ओ सुनीलक निर्देशक अनुसार सभ किछु करैत छथि । तखन विरोध कथीक ? मीरा धब्ब दऽ कुर्सीपर बैसि गेलीह ।

किछु कालक बाद हुनक केश आ भौंहुक आकार-प्रकार बदलि चुकल छल । कुर्सीक नीचाँ काटल केशकेँ देखि भीतरे-भीतर कुहरि गेलीह मीरा । केश बन्हैत काल माइक मुँहसँ झहरैत गीत मन पड़ि गेलनि । केशक पोर-पोर तेल लगा केहन सीटिकेँ केश बन्हैत रहथिन । आब से सम्भव नहि भऽ सकत। नोरक प्रबल वेगकेँ बलात् नियंत्रित कयने रहलीह ।

केन्द्रक दाइ सुनील बाबूक अयबाक सूचना दऽ गेल रहनि । मीराक संग मिस डेजी सेहो बाहर अयलीह । मिस डेजी आ सुनीलमे किछु गप्प-सप्प भेलनि आ निश्चित भेल जे काल्हिसँ दस बजे ओ अपन पत्नीकेँ ओतऽ पहुँचाय देल करताह ।

रिक्शापर सुनील मीराकेँ चुटकी लैत कहने रहथि । 'वाह, हमर रूबी ! आइ तँ अहाँ कमाल लागि रहल छी । चलू एही बातपर एकटा सिनेमा देखल जाय ।' रिक्शा सिनेमा हॉल दिस बढ़ि गेल छल ।

सिनेमा हॉलमे आँखिक आगाँ अबैत-जाइत चित्र मीराकेँ कनेको नीक नहि लागि रहल छलनि । चित्रमे एकटा खूब अधिक आधुनिकाकेँ देखबैत सुनील कहलनि- रूबी ! छौ मासमे अहाँ एहने स्मार्ट भऽ जायब । तखन तँ अहाँकेँ गामक सखी बहिनपा चिन्हबो नहि करतीह ।' आ सुनील मीराक हाथ अपना हाथमे लेबऽ चाहलनि ।

मीराकेँ किछु नीक नहि लागि रहल छलनि । ओ ओहिना चुपचाप र्निजीव सन बैसलि रहलीह । हुनकर चुप्पीकेँ सुनील लक्ष्य कऽ रहल छलाह । घर अयलापर ओ विशेष तमसाय गेल रहथि - अहाँ अपन देहाती चालि-ढालि छोड़ब कि नहि ? पति जँ पत्नीसँ हँसी-मजाक करऽ चाहैत अछि तँ ओकर काज थिक ओहिमे संग देब । अहाँ एना पाथर सन किए बनल रहैत छी ? गामसँ की अहाँकेँ हम पूजा करऽ अनलहुँ अछि ? हम कर्ज कऽ अहाँपर खर्च कऽ रहल छी, एकर बदलामे अहाँसँ किछु चाहैत छी तँ से अहाँकेँ नीक नहि लगैए ! मीरा, समदाउन आ सोहरक आब समय नहि अछि ! प्रैक्टिकल बनू प्रैक्टिकल । जतऽसँ आयल छी से बिसरि जाउ । जतऽ आइ छी बस ओकरे टा ध्यानमे राखू । नहि तँ बाजू, काल्हिए माय लग पहुँचा आबी ।'

दुनू हाथेँ कान बन्द कऽ लेने छलीह मीरा । नहि-नहि, ओ माय लग नहि जयतीह । तीन वर्ष धरि माइक अन्तःपीड़ाकेँ ओ भोगने छलीह । फेरसँ हुनका वैह दुःख देबऽ नहि जयतीह । मीरा ओछाओनपर कछमछाइत रहलीह । सुनील नीन पड़ि गेल छलाह । काल्हिसँ ओ नव दुनियाँमे प्रवेश करऽ जा रहल छथि । नहियोँ नीक लगैत ओहिमे मन लगैबाक छनि । माइक कहब पुनः मन पड़ि गेलनि, जहिना रखथुन, तहिना....।'

भिनसरे मीरा सुनीलक उठबासँ पहिनहि घरक काज-धन्धासँ निश्चिन्त भऽ स्नान कऽ रहलि छलीह । सुनील हुनक फुर्ती देखि अचंभित छलाह ।

--देखू, हम तैयार छी । अपने बिलम्ब करब तँ हमर दोष नहि ।' स्नानघरसँ बहराइत मीरा बजलीह ।

सुनील सेहो जल्दी तैयार भऽ मीराकेँ प्रशिक्षण-केन्द्र धरि दऽ अयलाह ।

लऽ जयबाक ओ लऽ अनबाक ई क्रम सप्ताह भरि चललाक बाद मीरा सुनीलकेँ एहि भारसँ मुक्त कऽ देलनि । आब हुनकामे आत्मविश्वास आबि गेल छल । नियत समयपर जायब-आयब हुनक जीवनक अभिन्न अंग बनि गेल छल आ एकर संगहि दिन-प्रतिदिन मिस डेजीक कुशलता अपन आङुरमे समेटने जाथि ।

तीन मास बितैत-बितैत श्रृंगारकलामे मीरा निपुण भऽ गेलीह । कटिंग, फेसियल, ब्लीचींग, वैक्सिंग, मैनीक्योर, पैडीक्योर आदि-आदि, सौंदर्यक सभ विधामे हुनका दक्षता भऽ गेल छलनि ।

ओना तँ केन्द्रमे आर प्रशिक्षिता सभ रहथि मुदा मिस डेजीक बाद दोसरा नाम रूबीक सएह छल । मिस डेजी सेहो अपन ग्राहकक सोझाँ रूबीक नाम गर्वसँ लैत छलीह । कोनो आकस्मिक काजक दिन केन्द्रक चाभी रूबीक ओतऽ दऽ अबैत रहथि । रूबीकेँ आमदनी सेहो नीक होबऽ लगलनि ।

पहिल आमदनी लऽ जहिया सुनीलक हाथमे देलनि तँ ओ आनन्दसँ मीराकेँ कोरामे उठा लेने रहथि । ओना, मीराक भीतर किछु भिनकि गेलनि, मुदा बाहरसँ प्रसन्न होयबाक नाटक कयने छलीह- अच्छा कहू, आब हम अहाँ जोगर 'स्मार्ट' आ 'प्रैक्टिकल' छी कि नहि ? आब तँ ने हमरा गाम दऽ आयब ?'

–सेन्ट परसेन्ट ! रूबी आब अहाँ 'फर्स्ट क्लास' भऽ गेल छी । अहाँकेँ भला हम गाम छोड़ि आयब ? कथमपि नहि । जनैत छी रूबी, अहाँक ई रूप गढ़बामे हमर मित्र प्रकाशक बड़ पैघ हाथ अछि । ओ अहाँक फोटो देखि हमरा विचार देने छल, 'तोहर पत्नी तँ सुन्दरि छथुन । हुनका पटना आनि ले आ प्रशिक्षित कऽ काजमे लगा दहुन । फेर तँ ओ सोनाक अंडा देनिहारि मुर्गी भऽ जयथुन ।'

भभा कऽ हँसि देने छलाह सुनील ।

'सोना अंडा देनिहारि मुर्गी ?' मीराक मनमे चोट लगलनि । मुदा, आब तँ ओ ओहि चोटक अभ्यस्त भऽ गेल छलीह । जल्दीसँ कपड़ा बदलि जलखै बनबऽ चल गेलीह । मुदा, 'मुर्गी' शब्द माथमे नचैत रहलनि । मीराक मूल्य बस यैह अछि ! हृदय हाहाकार करऽ लगलनि ।

एहन समयमे मायक स्मृति मनकेँ शांति दैत छलनि । मुदा, एहि सभ पीड़ासँ मायकेँ अनचिन्हार रखने छलीह । ओ बरोबरि अपन मायकेँ अपन सुख आ खुशीक मिथ्या वर्णन पत्र द्वारा दैत रहैत छथि । मीराक माय ओ पत्र टोल-परोसमे लोकसँ पढ़ा कऽ कतेक आनन्दित होइत होयतीह से मीरा खूब जनैत छथि । बस, यैह टा खुशी तँ ओ अपन मायकेँ दऽ सकलीह अछि । मुदा, माय हुनका अनबा लेल ककरो किएक नहि पठबैत छथि ? मीराक आँखि भरि गेलनि । ओ जनैत छथि माइक आशंकाकेँ, जे अनलासँ फेर कतहु ओझा छोड़ि ने देथि ! माइक विचारेँ बिना पुरुषक स्त्री देबाल बराबरि थिक ।

स्मृतिक झंझावातकेँ बलात रोकि मीरा सुनीलक आगाँ जलखै दऽ अयलीह ।

आब मीराक बेसी समय केन्द्रमे बितैत छलनि । ओहिसँ आमदनी सेहो बढ़ि गेलनि । तेँ सुनीलकेँ कोनो विरोध नहि ।

हँ, घरक टहल-टिकोरा लेल एकटा बीरू नामक टेल्हकेँ राखि लेल गेल अछि । मीरा संध्यामे घर आबथि । सुनीलकेँ मित्रमण्डली संग ताश खेलाइत देखथि । बीरू चाह-जलखैक ओरिआओनमे लागल । मीराकेँ मोन होइनि जे जखन ओ थाकि कऽ अबैत छथि तँ सुनील हुनका लग आबथि । हाल-चाल पूछथि । मुदा सुनील तँ 'आबि गेलहुँ ' पूछिकेँ अपन खेलमे लागि जाइत छथि ।

एम्हर मीराक मन किछु दिनसँ खराब लागि रहिल छनि । एकदिन केन्द्रपर जोरसँ कै भऽ गेलनि । मिस डेजी बुझा कऽ कहने रहथिन अहाँकेँ डॉक्टरसँ देखा कऽ आराम जरूरी अछि ।'

घर आबि सुनीलकेँ मीरा अपन स्थिति कहने रहथि । सुनील एहि बातसँ बहुत चिंतित आ व्यग्र भऽ गेलाह ।

– रूबी, ई ठीक नहि भेल । एखन अहाँ कुशलताक चोटीपर छी । यैह समय तँ अछि कमयबाक । एहिमे बाल-बच्चाक समस्या बड़ बाधक होयत । एहि लेल तँ एखन पूरा जीवन पड़ल अछि । हमर बात मानू ! डाक्टरक ओतऽ चलू । एकरा खतम कऽ आबी ।'

मीराकेँ सुनीलक मुहँ दिस ताकि नहि भेलनि । लगलनि जेना हजारक हजार संख्यामे पिल्लू सुनीलक चेहरापर ससरि रहल अछि । घृणासँ मन भरि गेलनि । –एहने पुरुषक बिना स्त्री देबाल थिक ?'

मीरा ओछाओनमे मुहँ गाड़ने कनैत रहलीह । मनक विषाद दूर करबाक हुनका लग आर दोसर कोनो रस्ता नहि छलनि । जँ कनेक काल लेल हुनका उड़बाक शक्ति भेटि जाय तँ मायकेँ जा कहि अबितथि । एहुना तँ ओ देबाले बराबरि छथि, जकरा मकान-मालिक अपन मनोनुकूल रंगमे समय-समयपर रङैत रहैत अछि । मुदा माइक भ्रम तोड़ि कऽ ओ शांत रहि सकतीह ?

सुनीलक इच्छाक आगाँ झुकि गेल छलीह मीरा । सप्ताहक भीतरे डॉक्टरक ओतऽ सुनील हुनका लऽ गेल छलाह आ मीरा खाली मन आ खाली हाथेँ घर फिरल छलीह । मुदा, ओकर बाद मीरा कखनो सहज नहि रहि पाबथि । घरक आगाँ दऽ कोरामे नेनाकेँ नेने जाइत कोनो स्त्रीकेँ देखि भीतरसँ जेना ओ कुहरऽ लागथि । दोकानपर धीया-पूता लेल टाङल छोट-छोट वस्त्र दिस टकटकी लागि जाइनि ।

एक दिन केन्द्रसँ फिरैत काल पता नहि कतेक काल एकटा दोकानक आगाँ ठाढ़ि रहि गेलीह । दोकानमे किनबा ले आयलि स्त्री लोकनिक नेना आ किनल जाइत वस्तुकेँ अपलक देखैत रहलीह । संयोगे कात दऽ जाइत केन्द्रक सहायिका नीलू टोकि देने रहथिन । परिस्थितिक आभास होइतहि लज्जित भऽ गेलि रहथि ।

घर पहुँचि देखलनि जे सुनील ज्वरमे पड़ल छथि । समीपेक डाक्टरकेँ बजा अनने छलीह । दवाइ चलऽ लागल । सौंदर्य-केन्द्रसँ थाकल आबि फेर सुनीलक सेवामे लागि जाथि । केन्द्रसँ फिरबाकाल सुनीलक हेतु फल, दूध, अंडा आ दवाइ लऽ आबथि ।

सुनीलकेँ पूर्ण स्वस्थ होयबामे करीब मास दिन लागि गेल रहनि । डाक्टर पूर्ण आरामक विचार देने रहथिन । मीरा अपन कर्त्तव्यमे रत्ती भरि कमी नहि आबऽ देने छलीह । मुदा कखनो कऽ जीवन भार सदृश लगनि । पटरीपर निर्विकार भावेँ दौड़ैत निर्जीव ट्रेन सन अपन जीवन बुझाइनि । ओ आगाँ बढ़बा लेल विवश छलीह ।

ओहि दिन मीरा केन्द्र जयबा लेल तैयार भऽ रहल छलीह । बीरूक शिकायत करैत सुनील कहने रहथि- बीरू दुपहरियामे सूति रहैत अछि । लाख बजौलासँ नहि उठैए । दुपहरियाक दवाइ आ जूस लेबामे देरी भऽ जाइए । नहि हो तँ किछु दिनक छुट्टी लऽ लिअऽ । एखन हमरा विशेष सेवा चाही । से तँ अहीँ कऽ सकैत छी ।'

मीराकेँ कंघीक दाँत जेना माथमे गड़ि गेलनि ! भीतरसँ छटपटा उठलीह । एतेक दिनमे ओ बहुत सहनशील भऽ गेल रहथि । मुदा, आजुक बात कानमे पघिलल शीशा सन बुझयलनि । शरीरमे रक्त-संचार जेना बहुत तीव्र भऽ गेल रहनि । कनपट्टीक नस तनि कऽ टुटबा लेल तैयार भऽ गेल छल । आइ कतबो चाहलनि मुदा चुप नहि रहि सकतीह !

–बस करू आब ! सहन करबाक सेहो एकटा सीमा होइत छैक ! चाही...चाही.... अहाँकेँ बस चाहबे टा करी । कहियो किछु देबऽ तँ नहि जनलहुँ । हमर शरीर, हमर कमाइ, हमर मातृत्व सभ तँ अहाँ लऽ चुकल छी। हमरा लग आब देबा लेल किछु अछि नहि । मन पाडू....। हम मीरा नहि....रूबी छी । सौंदर्य-केन्द्रक शीर्षस्थ प्रशिक्षिका । अहाँक शब्दमे 'सोनाक अंडा देनिहारि मुर्गी ।' से तँ अहाँक हाथमे सोना दैते छी । मुदा, आब हमरो किछु चाही....। हमरो आब अपन किछु व्यक्तित्व अछि.... । दस लोकक बीच उठब-बैसब अछि । कतेको 'कस्टमर' रूबीक प्रतीक्षा कऽ रहल होयतीह । हमरा जायब जरूरी अछि । अहाँ लग सेवा लेल बीरू तँ अछिए । धैर्य राखू । अहींक निर्देशनमे हम 'प्रैक्टिकल' बनब सिखलहुँ अछि ...।'

पर्स कान्हपर लटकबैत, परदाकेँ तेज हाथेँ उठा मीरा बाहर निकलि गेलि छलीह । सुनील बाबू परदाक डोलब बहुत काल धरि देखैत रहल छलाह ।

●

आकांक्षा

छवि आइ भने पैघ हस्तीकेँ पाबि लेने छथि, मुदा अपन बाल्यावस्थाक दीन-हीन स्थिति नहि बिसरि पाबथि । मइटुग्गरि छवि..... ।

तीन वर्षक रहथि तखने पिता मामा-मामीक ओतय छोड़ि गेल रहथिन, एहि आश्वासनक संग जे खर्च-पानि लेल टाका-पाइ पठबैत रहताह । पठौनहुँ छलाह । दू-चारि मासपर देखियो जाइत रहथिन, मुदा ई क्रम दू-तीन वर्ष तक मात्र चलि सकल छल ।

ज्ञान-बोधक संग-संग छवि अपन परिस्थितिकेँ चिन्हैत गेलीह । मामा तँ नहि, मुदा मामी अधिक काल झझकारि लैत रहथिन- नहि जानि कोन जन्मक ऋण खेने रहिऐ । सरधुआ, अपने घर बसा लेलक आ हमरा माथपर मोटा...।' बजैत-बजैत कखनो कऽ रुकि जाथि । सहानुभूतिवश अथवा मामाक भयवश ।

मामा एहन बात नहि सुनय चाहथि । हुनका हृदयमे छवि लेल असीम स्नेह संचित छल । एहन उपालम्भ लेल पत्नीसँ कतेको दिन बकझक कऽ लेथि आ एकान्तमे लग बैसा माथपर हाथ फेरैत विह्वल भऽ उठथि,- 'मामीक बातकेँ अधलाह जुनि मानिहेँ । ओ बताहि छौ । छवि, तोँ मोनसँ पढ़ । तोँ हमर बेटी छैँ । छोट बहिनक एक मात्र निशानी... ।' कहैत-कहैत धोतीक कोरसँ आँखि पोछय लागथि ।

मामाक यैह सांत्वना आ स्नेह छविक अमूल्य निधि छलनि । मामीक सभ कटुवचन जेना हृदय-पट परसँ धोखरि जाइक । ओ बड़ मनोयोगसँ मामीक नहयबाकाल नूआ कोचिया राखि देथि आ पूजाक ओरियान करथि । ऑफिससँ मामा अबथिन तँ हुनकर चप्पल, लूँगी आ तौलिया नियत स्थानपर भेटि जानि ।

मामाक मिनट-मिनटक आवश्यकताकेँ पहाड़ा जकाँ रटि लेने छलीह । मुदा तैयो मामीक फटकार जखन-तखन सुनहि पड़ैनि ।

सभसँ कष्टकर हुनका लेल ओ क्षण भेल करनि जखन मामी आँगन आयल कोनो बुलनिहारि स्त्री लग विवाहक चिन्ता करैत कहि बैसथि- 'ककर बोझ ककर माथ' ।

अपना लेल 'बोझ' शब्द जेना भीतरसँ केओ चीरि दैनि । ओ लहुलुहान भऽ उठथि । विवाह लेल ओ मामीक बोझ अछि । विवाह एहने बात छैक तँ ओ नहि करतीह विवाह । मुदा मामीकेँ मुहँसँ की कहओ ?

एहन समय सीढ़ी-घरमे चुपचाप बैसब छविकेँ नीक लागय, मुदा रिंकू हुनका तकैत तुरंत ऊपर पहुँचि जाइछ छल । सहज होयबाक नाटक करैत नीचाँ आबि जाथि आ मामीक आदेशानुसार काजमे जुटि जाइत छलीह ।

एहि सभ बात-विचारक क्रममे जतय सभसँ बेसी शांति भेटल करनि से छल हुनक पाठय-पुस्तक । स्कूल जयबा-अयबाक बीच कोनो व्यवधान नहि अबैक । मामा ऑफिस जयबाकाल छविकेँ स्कूल छोड़ैत जाइत छलाह । छवि शुरूएसँ अपन वर्गमे दोसर-तेसर स्थान पबैत रहलीह । प्रधानाध्यापिकासँ लऽ वर्ग शिक्षिका तक हुनक प्रशंसक छलीह ।

छविक प्रशंसासँ मामाकेँ बड़ आनन्द होनि, मुदा ओहि आनन्दकेँ अपनहि तक सीमित रखैत छलाह । छविक प्रशंसापर पत्नीक ईर्ष्या स्वाभाविक छल कारण हुनक बेटा रिंकू दू वर्षसँ मैट्रिक फेल कऽ रहल छलनि । रिंकूक अबंडपनीपर मामा बहुत दुखी होथि, मुदा मायक बेटाधनपर हाथ उठैबाक साहस नहि कऽ पाबथि । दोसर इहो जे रिंकू अभद्रतापर उतरि सकैत छल आ एही बातक संभावना बेसी छलैक, तेँ ओ चुप रहल करथि ।

समय पाँखि लगौने उड़ैत रहल आ छवि सेहो मान-अपमानक स्वाद चखैत-घोंटैत बहुत आगाँ बढ़ि गेल छलीह । इंजीनियरिंग कॉलेजक अंतिम वर्षक छात्रा छवि अपन भविष्यक प्रति बहुत आशावान रहथि । दोसर दिस मामाक स्वर्गवासी भऽ जायब बेर-बेर कचोटैत रहलनि । छात्रवृत्ति भेटैत रहबाक कारणेँ पढ़ाइमे कोनो व्यवधान नहि आयल, मुदा स्नेहक एकमात्र लत्तीक एना सुखा जायब, जीवनकेँ शुष्क बना देने रहनि ।

एही बीच मामीक सोनपूत रिंकू एकटा घटना कऽ बैसल । अपन मायक सभ गहना चोरा बम्बइ भागि गेल, फिल्म क्षेत्रमे भाग्य आजमाबय । मुदा छौ मासक बाद मूड़ी खसौने फटेहाल स्थिति लऽ आपस भऽ गेल रहय । छविकेँ कोनो आश्चर्य नहि भेलनि, कारण शुरूएसँ ओकर जे जीवन शैली रहैक ओहिमे यैह होयब सम्भाव्य छलैक ।

समय अपना संग मनुष्योमे परिवर्त्तन अनैत अछि आ से मामी बहुत सहज आ छविक प्रति स्नेहिल भऽ गेल रहथि, मुदा एहिसँ छविपर कोनो असरि नहि पड़नि ।

छविक पोस्टिंग भागलपुर भऽ गेल छलनि । जाहि दिनक स्वप्न ओ देखैत छलीह से साकार भेलैक । मामा रहतथि तऽ ....। मुदा ओ नहि छलाह आ से अपन कर्त्तव्यक बोध छलनि छविकेँ । हुनका बोझ मानयवाली मामी प्रति महिना मनिआर्डर पाबि आशीषक फुहार करय लगली ।

क्वार्टरक ठीक पाछाँ दऽ गंगा बहैत छल । ओकर कछेरमे पतिआनी लागल चारिटा अमलतासक गाछ छविक सांध्यकालीन सहचरी बनि गेल छलनि । गाछक नीचाँ बैसि नदीकेँ चुपचाप निहारब हुनका बड़ नीक लागय, अदभुत शांति भेटनि ओतय आ तेँ ई हुनक दैनिक जीवनक काज भऽ गेल रहय ।

कहियो कऽ जखन राति बेसी करिया जाइक तँ झुमकी दौड़ल अबैक- दीदी, आबहु चलू ने । देखियौ कते राति भऽ गेल ! कोनो भूत-प्रेतक छाँह ने लागि जाय ।'

छविकेँ हँसी लागि जानि । ओकर हाथ पकड़ि ठाढ़ भऽ जाथि आ गर्दनि पकड़ि हँसी करथि– भूत पकड़तौ तोरा । हमरा देखि तँ पड़ा जायत । अच्छा, आइ की सभ पकौलेँ अछि ?'

अहाँक पसिन्नक मटर-पनीर आ आलू-परौठा । खायब तँ हाथ चाटय पड़त । इनाममे काल्हि सिनेमा शो के छुट्टी देबय पड़त, दीदी !'

–तोरा सिनेमाक चहटि लागि गेलौ अछि । ठहर, काल्हि हम शुकदेवकेँ कहैत छियौ ।'

एहिबातपर झुमकी रुसबाक अभिनय करय । छविकेँ मानहि पड़ैत रहनि । झुमकी....ऑफिस दरवान शुकदेवक बेटी । साल भरि पहिने बिवाह भेल

छलै । घरवला ओही शहरमे ड्राइवरी सिखैत छैक । एखन गौना नहि भेल छलै, तेँ छविक आग्रहपर शुकदेव झुमकीकेँ क्वार्टरपर काजक हेतु राखि देने रहय ।

झुमकी छविक सखी बनि गेल छलि, अन्तरंग । जतय बाहरक लोक छविक गम्भीर स्वभावक आगाँ कठिनतासँ एक-दू वाक्य बाजि पाबथि, ततय झुमकी निधोख भऽ किछु पूछि बैसय । छवियोकेँ नीक लगनि । परिवारक नाम पर वैह टा तँ छल ।

ओहि दिन ओ बात पुछिए बैसल जाहिसँ छवि कटैत रहैत छथि ।

–दीदी, अहाँ विआह किए ने करै' छिऐ ?'

छवि चुप्प भऽ गेलीह । मुदा झुमकी चुप रहयवाली नहि ।

–दीदी, अहाँ विआह कहिया करब ?'

–हम बिआह किए करब ? जाहि लेल लोक विआह करै अछि, से सभ तँ हमरा भेटले अछि । टाका....पाइ...गाड़ी....नोकर.....मकान.....सम्मान, की नहि अछि हमरा ?'

विआहमे गाड़ी, नोकर आ मकानक कोन प्रयोजन, से झुमकी नहि बुझि सकल आ तेँ चुप भऽ गेलि । छवि बिहुँसैत ओकर गालकेँ थपथपबैत आफिस चल गेल छलीह ।

मुदा ओहि राति छवि सहज नहि रहि सकलीह । झुमकीक बात मोनमे हौंड़ि रहल छलनि । ठीके तँ उत्तर देने रहथि । बाल्यावस्थामे जाहि वस्तु सभ लेल तरसल छलीह से सभ तँ प्राप्त भऽ गेल छलनि । कथीक कमी छनि जीवनमे ?

विवाहक बात बहुत दबल स्वरेँ एक दू सहकर्मी सेहो उठौने रहनि, मुदा ओ अनसुन कऽ गेल छलीह । आइ बहुत दिनक बाद झुमकी जेना घाव खोंटि देने होनि । तँ की आइ ओकर पश्चात्ताप भऽ रहल छनि ? नहि, कथमपि नहि, अपन मार्ग ओ स्वयं बनौने छथि । कोनो बातक संताप मोनमे कहाँ कतहु छनि ?

मोनसँ बात हटबैत आफिसक फाइल देखबामे लीन भऽ गेल रहथि ।

दोसरे दिन रिंकू मामीक चिट्ठी लऽ आयल छल । चिट्ठीमे दू बच्चा वला विधुर, बेरोजगार, पितियौत भाय संग छविक विवाहक प्रस्ताव आ चारूधाम

तीर्थ करबाक मामीक प्रबल इच्छाक अभिव्यक्ति छल । तीर्थ करबाक मामीक प्रबल इच्छाक स्वीकृति दैत रिंकूकेँ यथेष्ट पाइ दऽ विदा कऽ देने छलीह । हँ, विवाहक लेल अस्वीकृति सेहो पठा देने रहथि ।

छविक ठोरपर विद्रूप हँसी पसरि गेल छलनि । कतेक दरेग छनि मामीकेँ हुनका लेल.....!

अनायास पिताकेँ सेहो छवि लेल दरेग भऽ आयल छलनि । एकटा युवकक संग दीन-हीन बनल, रोगी शरीरक पूजी लऽ बेटीक ओतय पहुँचि गेल रहथि । किछु नोरक बुंद सेहो खर्च कयलनि । बेटीक बनल स्थितिपर अथवा अपन पश्चात्ताप पर से जानि नहि । पिताक आगमनसँ छविकेँ ने तँ प्रसन्नते भेलनि आ ने आश्चर्य ।

अपन क्वार्टरक एक कमरा साफ-सुथरा करबाय पिताकेँ दऽ देने रहथि । हुनक इलाज आ सेवाक व्यवस्थामे कोनो कसरि नहि रखलनि । शुरूएसँ परिस्थितिक अनुसार ढलि जयबाक आदति जे छलनि !

ओहि दिन ऑफिसमे सुकदेव हुनकासँ निवदेन करैत किछु पारिवारिक गप्प कयने छल ।

-मेमसाहेब, पहुना झुमकीकेँ फगुआ से दू दिन पहिने गौना खातिर जिद्द कयलथिन अछि । झुमकीके पन्द्रह दिन खातिर छुट्टी आ दू हजार रुपैया दिती तँ इहो काम सम्पन्न हो जाइत ।' चौंकि गेल रहथि छवि ।

-मुदा सुकदेव, झुमकी एखन वयस्क नहि भेल अछि । तीन-चारि वर्षक बाद ओकर गौना करब ठीक रहत । एखन हम ओकर किछु पढ़ाइ-लिखाइ करैबाक सोचि रहल छी ।'

छवि बातकेँ टारि देने छलीह ।

डेरा अयलापर झुमकी चाह-नाश्ता करौने छलनि । छविक ध्यान ओकर आँखिक काजरक रेघा दिस गेल । कानमे पितरिया झुमकी आ लाल अड़हुल सन लहलह करैत केशमे लाल फीता ।

-की बात छै ? आइ फेर सिनेमा जयबाक मोन छौ, आ कि सासुर जयबाक ?' ओ चौल करैत पुछने रहथि । झुमकीक गाल आरक्त भऽ गेल छलैक । आँचर मुहँमे दाबि भनसाघर भागि गेल रहय ।

रातिमे भोजन करैत काल छवि बहुत स्नेहिल भऽ झुमकीकेँ बुझौने रहथि ।

-देख, सुकदेव तोहर गौनाक बात करै छौ, मुदा हम मना कऽ देलिये । तोरा सिलेट आ किताब मंगा दैत छियहु, हमरासँ एक घंटा नित्तहु पढ़ल कर । कतहु कोनो काजक व्यवस्था कऽ देबौ तँ दिन सुदिन भऽ जेतौ ।'

झुमकी स्वीकृतिमे मुड़ी डोला देने रहै ।

ओहि राति ककरो फुसफुसाहटि सुनना गेलनि । पुरुषक गम्भीर स्वर...। कान ठाढ़ भऽ गेल रहनि । पयर दाबि केबाड़ खोलने रहथि आ असोरापर आबि अकानय लगलीह । स्वर पाछाँ दिससँ बुझना गेलनि ।

ओसाराक पाँजरसँ सटैत पाछाँ दिस जा मालती फूलक झोंझक ओटमे ठाढ़ि भऽ गेलीह । छविकेँ अविचंक लऽ लेलकनि । रातिक इजोरियामे गैरेजक आगाँ दू टा छाँहकेँ स्पष्ट देखि रहल छलीह....एकटा तँ झुमकी अछि आ दोसर......पता नहि के ?

कंठमे बालु उधियाइत अनुभव कयलनि । जेना बकार हरित भऽ गेल हो । ओकर दुनूक गप्प स्पष्ट सुनि रहल छलीह ।

-झुमकी, मेमसाहेब गौना लेल इनकार कऽ गेल छौ । तोँ छुट्टी मांगि कऽ देख ।' पुरुष स्वर छलैक ।

-हमर बात बुझै । मेमसाहेब तैयार नहि हेतै । ओ हमरा पढ़ै-लिखै के बात कहै छै । कतहु नोकरीयो लगा देतै । कहै छै, जे एखनी हमर उमिर सासुर जायवला नहि भेलैए ।'

....मेमसाहेब निसोख छै तँ की सभ निसोख भऽ जाउक ? ओ पुरुषक दरेग की बुझतै ? हमरा नहि चाही तोहर नोकरी । एखन दसो बेकतीके गुजर करेबाक बाहुबल है हमरा ।'

....आब ई जाउक, मेमसाहेब उठि जयतै । मेमसाहेबकेँ संदेह भऽ जयतै, हमरा डर लगैए ।'

....संदेह हेतै तँ हेतै । अपन लोक-वेदसँ भेट करब कोनो पाप छै ? तोहर मेमसाहेब तँ जवानिएमे बुढ़ा गेलौ । देख, तोरा काल्हि छुट्टी मँगबाक छौ,

नहि तँ घिसिया कऽ लऽ जयबौ ।' झुमकीक आँचर पकड़ैत कहने छलैक आ झुमकी लजाकऽ गर्दनि झुका लेने रहैक ।

आब ओतय ठाढ रहब हुनका लेल सम्भव नहि रहनि । ई तँ स्पष्ट छल जे ओ पुरुष झुमकीक घरवला छलैक । पुनः पयर दबैत अपन कोठली आबि केबाड़ बन्द कऽ लेने रहथि । बिजलीक 'स्विच' दबा ड्रेसिंग टेबुलक आगाँ ठाढ़ भऽ अपनाकेँ निहारने छलीह । केशक बीच छिटपुट चानी सन झलकि उठल आ आँखिक नीचाँ कारी रेह....। दुनू तरहत्थी मुँहपर फिरौलनि । रक्ताभ कहिया पीताभमे बदलि गेल से बुझियो कहाँ सकलीह !

झुमकीक घरवला ठीके कहि रहल छलैक ओ निसोख, लोक-वेदक हाल की जानय गलीह ? तेँ तँ रातिक अन्हारमे ओकरा अपन प्रियतमासँ भेट करय पड़लैक । मुदा निसोख की ओ अपनहि बनल रहथि .....?

आँखि भिजि गेल रहनि छविक । अनायास पिताक कोठली दिस गेल छलीह । पिता गाढ़ निन्नमे सूतल रहथि ।

मुदा ओहि राति पिताकेँ झमारिकऽ उठैबाक मोन भेलनि । मोन भेलनि किछु प्रश्न पुछबाक ।

'बाबू, जाहि बेटीकेँ पाथर बुझि फेकि देने रही से तँ पारसमणि बनि अहाँक तरहत्थीपर आपस चल आयल अछि । मुदा हमर जीवनक बीतल तीस वर्ष की अहाँ आपस कऽ सकैत छी ? आइ हमरा आपस कऽ दिअ, हमर बीतल, छिड़िआयल ओ दिन सभ, जाहिमे ने तँ मायक कोर भेटल, ने बापक स्नेहक छाँह आ ने ओ सभ किछु, जकर आकांक्षा प्रत्येक स्त्रीकेँ रहैत छैक । की आपस कऽ सकब हमर सभ किछु ? बाजू, बाजू हमरा जवाब चाही ।'

पिताक सिरमामे मूर्ति जकाँ ठाढ़ि छलीह । आक्रोशक लावा जेना भीतरे-भीतर घमैत रहल । ओ किछु ने बाजि सकलीह । पयर दबने अपन कोठलीमे चल आयल रहथि आ गेरुआमे मुँह दाबि सिसिकय लगलीह ।

दोसर दिन भोरे सुकदेवकेँ समाद दऽ देलनि । रातिए निश्चय कयने रहथि जे झुमकीक गौना हेतु अपन सहमति दऽ देतीह ।

झुमकी टेबुलपर चाहक कप रखैत पुछने रहय– दीदी, माथमे दर्द अछि की ?'

–नहि, आइ मोन बहुत हल्लुक अछि, झुमकी । सोचै छी, तोरा आब सासुर विदा कइये दियौ । तोँ तँ अपना मुहेँ नहि कहबेँ ....।' कहैत ओकर चोटीक फुदना डोला देने रहथि ।

–जाउ दीदी, अहाँसँ नहि बाजब ।' दुनू तरहत्थीक बीच मुँह नुका लेने रहय झुमकी । दुनू कान पलाश सन दहकि उठलैक ।

ओकर ई रूप बड़ नीक लगलनि छविकेँ । अपलक देखैत रहलीह ओकरा । आंगुरक फाट दऽ हुनका अपना दिस तकैत देखि झुमकी आओर लजा गेलि आ आँचर सम्हारैत भागि गेल रहय ।

आइ पहिल बेर अपन गुरु-गम्भीर मोनपर कोनो वश नहि रहलनि । मोनक कोनो कोनमे एकटा आकांक्षा सुगबुगा उठल रहय । जँ कदाचित एही झुमकी जकाँ केओ अपन लोक आँचर पकड़ि अपना संग चलय कहैत... ।

●

अहिबातक हाट

रातिएसँ बरखा जोर पकड़ने छलैक । कारी-मेघ चहुदिस कालिमा पसारने छल । समय बाहर-भीतर काज करऽवला लोकक हेतु पैघ बाधक बनल रहय । अमोलाकेँ रातियो निन्न नहि पड़ल रहनि । बाबू-मायक गप्प नहिञो चाहैत कानमे जाइते रहल । हुनका बूझल छनि जे बाबू आइ सभागाछी जयता । पछिला पाँच बरखसँ एहिना होइत रहलैए । ओना बाबूकेँ सभागाछी जयवाक कहियोसँ मोन नहि रहनि । ओ घरकथा पसिन करैत छलाह आ तेँ लोकक देल पता-ठेकान पर घुमल करथि । कतेक ठाम बात सोझरायलो बुझयलनि मुदा अन्त अबैत-अबैत किछु फेंच लागि जाय । अमोलाक मोन पर सेहो जेना मेघक टिक्कर पसरय लागल छल ।

एक दिन पूर्वहि बाबू विवाहे-प्रसंगमे कतहुसँ घुरि कऽ आयल रहथि । बाटमे बरखाक पानिसँ भीजि गेल छलाह, से साँझेसँ खोंखी होइत रहनि । अमोला अपनाकेँ दोषी सन बूझऽ लागल रहथि । हुनका कोनो काजमे मोन नहि लगैत रहनि । बी.ए. पास अमोला बाबूकेँ 'टीचर्स ट्रेनिंग'मे नामांकन करा देबाक आग्रह कैने रहथि । बाबूओकेँ मोन रहनि मुदा विवाहक चिंतामे आइ-काल्हि पर टारैत छलाह ।

पछिला साल एकठाम बात ठहरल रहैक । लड़का सी.ए.क पढ़ाइ करैत छल । दू लाख पर बात टूटल रहय । मुदा विवाह अगिला वर्ष करबाक बात रहैक । बाबू सेहो मानि गेल रहथि । जेना-तेना पाइ पुरेबाक व्योंतमे लागि गेल छलाह । वर्ष पुरलाक बाद लड़का नोकरीमे लागि गेल रहैक । बाबू पहुँचलाह तँ सुनाओल गेल जे आब चारि लाख दाम लागत आ ऊपरसँ चारिपहिया गाड़ी सेहो । बाबू हतप्रभ भेल आपस भऽ गेल छलाह ।

मायकेँ अपन बेटी लेल बिअहुती साड़ी किनना बहुत दिन भऽ गेल रहनि । हुनका कहाँ बुझना गेल छल जे बेटीक विवाहमे एतेक भदवा लागत ! बीच-बीचमे ओहि साड़ीकेँ तऽह तोड़ि रौद लगबैत रहथि । ई सभ देखि अमोलाक मोन अनोन भऽ उठनि । परिवार चलयवाक हेतु बेटियोक महत्व तँ समाने अछि तखन बेटेक मोल-जोल किएक होइछ ? अमोला मोनहि-मन मन्थन करैत रहि जाथि ।

अन्ततः अमोलाक नामांकन- 'टीचर्स ट्रेनिंग' कॉलेजमे भऽ गेल छलनि । कॉलेज अबैत-जाइत समय काटब किछु हल्लुक भऽ गेल रहनि । मुदा माय-बाबू बेटी हेतु एक चुटकी सिनुर लेल अपस्याँत रहथि । राति-दिन अबैत-जाइत लोकक आगाँ वैह गप्प आ फोन पर सेहो वैह खिस्सा । अमोला कॉलेजसँ आबि घरक काजमे मायक संग पूरथि, दुनू भाइकेँ पढ़वामे मददि करथि । बाबूक ऑफिसक कागज-पत्तर ओरिया कऽ राखब, हुनकर कपड़ा-लत्ताकेँ सम्हारब, सभ हुनके जिम्मेदारी छल आ तेँ घरमे भरि दिन 'अमोला' क खोज होइत रहनि । कखनो कऽ हुनका अपन नाम नहि नीक लगनि । एहन बेमोल जीवक कतहु एहन नाम हो ! ठीक ओहिना जेना आँखिक आन्हर आ नाम नयनसुख ! मुदा फेर सभ बिसरि अपन कार्यमे लागि जाथि । नेनहिसँ सभकिछु सहबाक घोंटी जे पिआओल गेल छलनि !

ओहि दिन दू गोटा बाबूसँ भेंट करय आयल रहथि । एकटा अधवयसू संग नवतूरक लोक रहथि । बाबू खूब सत्कार कैने छलाह । माय चाह-जलखैक ओरियान करैत अमोलाकेँ तैयार होयबाक आदेश देने छलीह । ओहो बेमोनसँ तैयार भऽ गेल रहथि आ मायक संग जलखैक प्लेट लऽ आगंतुक लग गेल छलीह । ओ लोकनि हुनक पढ़ाइ लिखाइक सम्बन्धमे किछु प्रश्न कैने रहथि, जकर समतूल उतारा दऽ चल आयल छलीह । दोसर दिन सुनने छलीह जे उपयुक्त लम्बाई नहि रहबाक कारणेँ ओ लड़का हेतु अनुपयुक्त छथि । मोनहि मोन हँसी लागल रहनि । मानव शरीर बनयवाक कोनो 'फैक्ट्री' होइत तऽ लोक उपयुक्त बनावटक ढ़ाँचा बना लैत मुदा से कहाँ सम्भव छल !

समय बितैत गेल । अमोलाक मोनक युवा संवेदना जे एकटा राजकुमारक स्वप्न देखैत अछि, शनैः शनैः धूमिल होइत गेल । सहीमे विवाह तऽ व्यवसाय बनि गेल अछि, जाहिमे मनुष्यक कोनो मोल नहि । टाका मनुष्यक धर्म बनि गेलैक अछि । कोनो प्रकारेँ ओकरा हासिल करब पुरुष अपन पुरुषार्थ बुझैत

छथि, मुदा टाकासँ कीनल पुरुषक पुरूषत्व की स्त्री-जीवनकेँ सुख आ सुरक्षा दऽ सकैछ ? ओही दिन तऽ अखबारमे समाचार पढ़ने छलीह जे एकटा पुरुष, जिनकर विवाह तीन वर्ष पूर्व भेल छल आ एकटा दू वर्षक पुत्रक पिता सेहो भऽ गेल रहथि, ओ अपन पत्नीकेँ एहि लेल परलोक पठा देलनि जे छोटकी सारिसँ पुनः विवाह कऽ ओ सासुरक सम्पत्तिक पूर्ण मालिक बनि जयताह । किएक तऽ हुनकर ससुरकेँ मात्र दू टा बेटीए छलनि । हैवानीयतक सीमा पार करयवला ओहि पुरुषकेँ सेहो हुनकर ससुर दू लाखमे कीनि कऽ लऽ गेल रहथि ।

अमोला 'ट्रेनिंग' समाप्त कऽ एकटा स्कूलमे काज करय लागल छलीह । दिन स्कूलक गहमा-गहमीमे बीति जाइत छलनि, मुदा माय-बाबूक हताश मुखाकृति राति कऽ व्याकुल कऽ दैत रहनि ।

ओहिदिन एकटा पत्रिका पढ़ैत काल 'वैवाहिक विज्ञापन' पर नजरि ठमकि गेलनि । लड़का सजातीय छल आ ओकर पता-ठेकान सेहो ओहिमे अंकित रहय । दान-दहेजक कोनो बात नहि मात्र लड़की गुणशील होयबाक चाही । अमोला कतेक दिन तक एहि विषयपर सोचैत रहलीह । मोन कखनो स्वीकृति दिअय तऽ कखनो उचित नहि बुझना जानि । अंततः ओ एकटा पत्र लिखलनि आ तकर उतारा सेहो स्कूलक पतापर आबि गेल छलनि । पत्रक भाषा ओ बिचारसँ बेस प्रभावित भेल छलीह । एहने व्यक्ति तऽ चाहैत रहथि । दू-तीन पत्रक आदान-प्रदानक पश्चात भेंट करबाक एकटा दिन निश्चित भेल रहय । एक भेंटक बाद अपन माय-बाबूकेँ सभ बातक जानकारी दऽ हुनका विवाहक चिंतासँ मुक्त कऽ देतीह ।

आखिर ओ दिन आबिए गेल । स्कूलक समीपहि एकटा 'कैंटीन' छल । ओतहि दू बजे दिनक समय निश्चित भेल रहय । स्कूलसँ आधा दिनुक छुट्टी लेल ओ अर्जी दऽ देने छलीह । अमोला कैंटीन पहुँचि चारू दिस नजरि खिरौलनि । एकटा टेबुल पर एसगर बैसल युवक दिस ध्यान केन्द्रित भेल । ओहो इम्हर-उम्हर नजरि खिरा रहल छलाह । अमोला टेबुलक समीप पहुँचि ठमकि गेलीह ।

-अहाँ अमोला ?

-हँ, अहाँ सुदर्शन ?

सुदर्शन उठि कऽ ठाढ़ होइत अमोलाकेँ बैसबाक आग्रह कयलनि । अमोलाक मनःस्थिति विचित्र रहनि । की बाजल जाय, से नहि बुझना जाय । शब्द जेना कंठमे अटकि गेल छल । 'कॉफी'क आर्डर दैत सुदर्शने गप्प शुरु कयलनि । स्कूलक कार्य-व्यवस्था, हेडमिस्ट्रेस एवं अन्य अध्यापकक सम्बन्धमे जानकारी लेने छलाह । पुनः अमोला कोन-कोन सत्रमे की पढ़ाइ कयने रहथि से जिज्ञासा कयलनि । आज्ञाकारी छात्रा जकाँ सभ किछु सही-सही कहैत गेलीह । किछु काल चुप रहलाक बाद ओ कहलनि, 'अहाँ हमरासँ मात्र एक वर्ष छोट छी । हमरा तऽ लागल जे अहाँ 22-23 वर्षक होयब मुदा अहाँक वयस तऽ लगभग छब्बीस अछि ।' अमोला अवाक रहि गेलीह । बात तऽ ठीके छल । सुदर्शन कॉफीक बिल चुकबैत ठाढ़ भऽ गेलाह । अमोला सेहो उठि गेल छलीह ।

-हमरा जनैत लड़कीक वयस लड़कासँ कमसँ कम चारि-पाँच वर्ष कम होयबाक चाही ।' - सुदर्शन बाजल छलाह ।

एहिसँ आगाँ कहबाक लेल किछु नहि रहय । दुनू अपन-अपन बाट धऽ लेने रहथि । अमोलाक आँखिक आगू सुदर्शनक चिट्ठी सभ उड़ियाइत रहल । घर आबि पलंग पर पड़ि गेल छलीह । माय-बेकल भऽ गेल रहथि । एना तऽ कहियो नहि पड़ैत रहथि । हाथ-माथ छुबि देखलनि । माथ किछु तपैत बुझना गेलनि । ओ तुलसीक काढ़ा बनबय भानसा-घर चल गेल रहथि ।

भिनसरमे बुझना गेलनि जे बाबू सबेरे उठल छथि आ माय भानस-भातमे लागल छथि । बिरजू ककाक स्वर सेहो सुनना गेल । मोन खराब रहबाक कारणेँ अमोलाकेँ नहि उठाओल गेल छलनि । मुदा ओ पड़ल-पड़ल सभ गप्प सुनैत रहलीह । ओ बूझि गेल रहथि जे बाबू आइ पुनः सभा-गाछी यानी अहिबातक हाट जा रहल छथि । ओतय ओ अपना बेटी लेल अहिबात किनबाक जोड़-तोड़ कऽ एकटा पुरुष अनताह जे सीथमे एक चुटकी सिनुर दऽ हुनका निश्चिन्त कऽ देत । मुदा ओ कतेक निश्चिन्त भऽ पओता से तऽ भविष्यक बात अछि ।

भविष्यक बात पर मोन पड़ि अयलनि 'अंजली' जे बहुत पहिने हुनक पड़ोसमे रहैत छल । सम्भ्रान्त परिवार । चारि भाइक बीच एकमात्र जेठ बहिन । विदेशमे नोकरी करैत डॉक्टरसँ विवाह भेल रहैक । टको-पाइ खूब खर्च भेल रहय । विवाहक चारि वर्षक भीतर अंजली दू-बेटीक माय बनि गेल छल ।

पछिला साल पति आ बेटीक संग अपना देश माय-बाप लग आयल छलीह । किछु दिन रहलाक बाद, शीघ्रहि अयवाक बात कहि पति अपन गाम भागलपुर गेल रहथि । एक सप्ताहक बाद खोज कयला पर जानकारी भेटल जे ओ तऽ विदेश चल गेलाह । अंजली पेटी-बाकस छानि मारलक तऽ हवाई-टिकटक कोनो पता नहि । ओकर बाद विदेश सेहो फोन कयल गेल मुदा कोनो अता-पता नहि लागि सकल । अंततः दिल्लीमे कार्यरत हुनक भाइ हुनका अपना लग बजा लेने रहथि । ओतहि ओ स्कूल शिक्षिकाक कार्य करैत दुनू बेटीक संग निर्वासित जीवन जीवाक हेतु बाध्य भऽ गेलीह ।

अमोलाक आँखि पर नचैत रहल अंजलीक पथरायल आँखि । विवाह दिनुक ओकर दमकैत मुखकांति सेहो नहि बिसरल छलीह । कालक क्रूर हाथ कतेक निर्ममतासँ बहुत किछु मचोड़ि दैत अछि ! अमोलाक हृदयमे बिर्ड़ो उठल छल । नहि, टाकासँ किनल अपरिचित हाथ ओ नहि जयती । ओ मायसँ एहि विषयपर गप्प कऽ कोनो निष्कर्षपर पहुँचय चाहैत छलीह । शरीर घामसँ तर-बतर भऽ गेल छलनि । ओढ़नीसँ माथपरक घाम पोछैत अमोला उठि बैसलीह ।

कोठरीसँ बाहर आबि मायकेँ हाक देलनि । राजू आ संजू एखन सूति कऽ नहि उठल छल । माय झटकैत डेगेँ आबि अमोलाक मोन ठीक होयबाक बात पूछलनि । अमोला मायक डेन पकड़ि अपन कोठरी लऽ गेलीह आ कुर्सी पर बैसाय देलनि । –माय, हम अहाँसँ किछु कहय चाहैत छी ।' –अमोलाक मुँह पर गम्भीरताक संग-संग कठोरता झलकि रहल छल ।

माय बेटीक मुँहपर आँखि गड़ौने रहलीह ।

–आइ बाबू आबथि तऽ कहि देबनि जे हमरा एहन विवाह नहि करबाक अछि । पाँच-वर्षसँ ई सभ नाटक देखैत, करैत हम टूटि गेल छी । हम अपन बाट स्वयं चुनब आ तखन जँ कियो एहन पुरुष भेटताह, जे जीवन-संगी हेतु उपयुक्त बुझयता, तखनहि हुनका संग जीवन बितयबाक सम्बन्धमे सोचब । अहिबातक हाटसँ आनल नहि, कर्मक पाठ पढ़ल युवककेँ जीवन संगी बनायब । एतेक विश्वास राखू जे अहाँ सभहक आशीर्वादेसँ सभ किछु होयत, मुदा आब हमरा कठपुतरी नहि बनाउ । समय बहुत आगाँ बढ़ि गेल अछि । जाबत धरि अहाँ सभ सन कमजोर माता-पिता समाजमे रहताह, ताधरि बेटी एहिना कमजोर बनल रहत । जकरा जे मोनमे आयल, से कहैत चलि देत । नाम तऽ चुनि कऽ रखलहुँ 'अमोला' मुदा एना बेमोल किएक बनौने छी ? हमरा शक्ति दिअ....। ...शक्ति ।' –अमोला एक सांसमे मोनक सभ धुआँ उगलि, अपन माथ मायक कान्ह पर राखि देने छलीह । राजू आ संजू उठि गेल छलाह आ अपन बहिनक नव रूप देखि विस्मित रहथि ।

माय अपन बेटीकेँ भरि पाँज पकड़ि करेजमे साटि लेने छलीह । दुनू गोटाक आँखि गंगा-यमुना बनल रहनि, मुदा पीठ पर मायक सशक्त हाथक स्पर्शसँ अमोलाकेँ सहमतिक संकेत भेटि गेल छलनि ।



काल-चक्र

प्राण काकीकेँ बात-बातपर ठकमूड़ी लगनि, छौड़ी सभ कोना फटाफट बजैए । गे दाइ, साइकिल जे बेधड़क हँकैए ! अततह भऽ गेल, ई तँ मोटर गाड़ियो चलबैत अछि ।

एहि तरहेँ ने तँ घटनाक कमी छल आ ने ठकमूड़ीक अन्त । दुमंजिलापर डेरा आ डेराक पाँजरमे महिला कॉलेज । एक-एक दृश्य सिनेमाक रीलक काज कऽ रहल छल हुनका लेल । बरंडाक ग्रिल धैने ठाढ़ि काकी एक-एक दृश्यपर टीका-टिप्पणी कयने जाथि ।

प्राण काकी-वस्तुतः हमर माँ आ हुनकर विवाह चारिए दिनक आगू-पाछू भेल रहनि । द्विरागमन एके दिन भेल रहनि । सासुर अयलापर स्नेहवश दुनू एक-एक जोड़ लहठीक आदान-प्रदान कऽ 'प्राण' लगौने रहथि । ओना हम अपन होश-हवासमे काकी ओ मायक बीच ओहन मधुर सम्बन्ध कहियो नहि अनुभव कयलहुँ, जाहिसँ कि ओहि नामक सार्थकता भऽ सकैत ।

मुदा, से होयबो सम्भव नहि छल । हमर पिता शहरमे नोकरी करैत छलाह आ पित्ती गामेपर रहि खेती-गृहस्थी देखैत रहथि । गामपर रहऽवला लोक नोकरिहारा समांगपर अनेरे मुँह फुलौने रहैत अछि । ओतबे नहि, हमर पितियौत बहिन सुधा आ हमरामे मात्र छौ मासक अन्तर छल । गामक प्रथानुसार दुनू बहिन एक संग विवाह योग्य भऽ गेल रही । दुनूक हेतु वरक खोज आरम्भ भऽ गेल रहय आ ओकर जिम्मा हमरे पितापर रहनि ।

काकीकेँ अनेरो शंका रहनि जे सुधा लेल नीक वर ओकर पित्ती तकताह कि नहि । कारण अपनो बेटी संग लागल छनि । ई शंका हुनका कटुभाषी बना देने रहनि । हम बाबूजीक संग शहरमे रहैत रही । हुनके संग कहियो कऽ शनि दिन गाम आबी आ फेर सोम कऽ शहर वापस भऽ जाइ । ओहि समय हम हाइस्कूलमे पढ़ैत रही ।

प्राण काकीकेँ हमर पढ़ब-गूनब कनेको नीक नहि लगनि । ताहूमे हम सुधासँ छौ मास छोट रहितहुँ ओकरासँ पैघ लागी । ई बात हुनका लेल आओर बेसी पीड़ादायक छल । ओ अधिक काल हमरापर भनभना उठथि– तोँ तऽ सुधा लेल सभ दिन भदवे बनल रहलेँ ।'

हम हुनका दिस टुक-टुक तकैत रहि जाइ । सुधा हमर बहिन, हमर सखी, हमर अन्तरंग छलीह । हुनका लेल हम की भदवा भऽ सकैत रही, किछु सोचि नहि पाबी । ओतेक बुझबाक, सोचबाक अवस्थो कहाँ भेल छल ? मात्र चौदहम बरख रहय ।

संयोग एहन जे छौ मास पैघ सुधाक विवाह हमर विवाहसँ ठीक छौ मास पहिले भेल रहय । दुर्योग एहन जे विवाहक बरस दिनुक बादे सुधा हृदय-रोगसँ पीड़ित भऽ गेल छलीह । नीक इलाजक हेतु पिता हुनका शहर लऽ अनने छलाह । ओ हमर आर समीप भऽ गेलीह । मधुरसँ मधुरतम । दू-तीन वर्ष दुनू बहिनकेँ संग रहबाक अवसर भेटल रहय । अपन-अपन प्रियतमकेँ पत्र लिखबा ओ पढ़बाकाल कतेक चौल, हास्य आ आनन्दक अनुभूति करी, तकर क्षण भरिक स्मरणो रोमांचित कऽ दैत अछि ।

कालक मोन बताह हाथी सन होइछ । कखन की तोड़ि देत, कखन की जड़िसँ उखाड़त, कोनो ठेकान नहि । सैह भेल रहय । कालक क्रूर हाथ सुधाकेँ उठा लेने रहनि आ ओकर ठीक बरख दिनुक बाद हमर सिन्दूर मेटा गेल छल । पटरीपर साधल पैरे चलैत रेलगाड़ी जेना उनटि गेल हो ! गाड़ीक डिब्बा, इंजन सब छिड़िया गेल । रहि गेल मौन चीत्कार...चुप्पी...नोरक धार, आओर किछु नहि !

मुदा काल जेहने बताह होइछ तेहने बलवान सेहो । सुन्दरसँ सुन्दर मूर्तिकेँ तोड़लाक बाद ओकरा जोड़ब सेहो वैह जनैत अछि । बरख डेढ़ बरख असहज रहलाक बाद पुनः जीबा लेल असीम इच्छा जाग्रत भेल छल । हम अपना पैरपर ठाढ़ होयब... सहानुभूति नहि, शक्ति ग्रहण करब... आ लटपटाइत डेगेँ उठि कऽ ठाढ़ भेल रही । तकरा बाद शुरू भऽ गेल छल संघर्षक कंटकाकीर्ण बाटपर चलब । कॉलेज जायब शुरू कऽ देने रही ।

एक दिन कॉलेज जयबाक बाटमे सासु अपन छोट बेटाक संग रिक्शा रोकैत आगाँ ठाढ़ भऽ गेलि छलीह– ससुर आ दियरकेँ रहैत अहाँ कॉलेज जायब आ नोकरी करब ? राम-राम, ई उचित नहि । अहाँकेँ दू साँझ भोजन आ दू टा वस्त्र लेल की खगित होयत ?'

मायक पाछाँ बत्तीसी निकालने दियर ठाढ़ रहथि । मोन कसाइन भऽ गेल रहय । किछु दिन पहिने यैह दियर एकांत पाबि, दियरकेँ 'द्वितीय वर'क संज्ञा दैत निर्लज्ज प्रस्ताव रखबाक दुःसाहस कऽ गेल रहथि । स्त्री कतबो असहाय किएक ने हो, मुदा जखन अपन आन-बानपर आबि जाइछ, तँ शेरनी बनि जाइत अछि । सैह भेल रहय । शब्द-वाणक चोटसँ नांगड़ि सुटका पड़ा तँ गेल छलाह, मुदा तकरा बाद खौंझायल कुकुर जकाँ भूकब स्वाभाविक छल । आइ ओही दियरकेँ हमर कॉलेज जयबासँ नाक पिचाय लागल रहनि ।

हमहूँ असीम साहसक अनुभव करऽ लागल रही । 'जीवनक अर्थ मात्र भोजन आ वस्त्रे नहि होइछ । आत्मसम्मान सेहो कोनो वस्तु छै, आ हमरा ओकरे आवश्यकता अछि । एहि तरहेँ बाट नहि रोकू'– कहैत रिक्शावालाकेँ आगाँ बढ़बाक लेल कहने रहिऐ ।

सासुरक लोक आगिमे घी देबामे मिसियो भरि कंजूसी नहि देखौलनि । नैहरोक लोक किएक चुकितथि ? यैह प्राण काकी एक दिन पोखरिपर ककरोसँ कहने छलीह– सुनलहुँ अछि जे मंजू फेरसँ पढ़ब शुरू कैलक अछि । पढ़ैत तँ पहिनहुँ छल, मुदा जखन भगवानेकेँ मंजूर नहि तँ की पढ़ब, की गूनब ! आब तँ ओ रामायण, गीता पढ़ैत तँ आगाँक जन्म सुफल होइतैक । सासुरमे सासु-ससुरक सेवा टहल कऽ जीवन सार्थक करय । कहलो गेल छै, बेटी सासुरे भली की स्वर्गे भली ।'

हमर नैहर रहब कतहु कचकि रहल छलनि हुनका । ओही दिन अपन अस्तित्व बनयबाक निर्णय लेने रही । निर्णय कठिन छल मुदा असम्भव नहि । प्राणपणसँ जुटि गेल रही ओकरा पूरा करबामे ।

बी.ए. कयलाक बाद कम्पिटीशनक तैयारीमे कोनो कोर-कसरि नहि रखलहुँ । मेहनति सार्थक भेल छल । नोकरी करैत दू वर्ष कोना बीति गेल, से बुझि नहि सकलहुँ ।

एतेक दिनुका बाद अकस्मात् भोरे-भोर वैह प्राण काकी अपन एकमात्र

बिगड़ैल आ उद्दण्ड बेटाक संग आयलि रहथि, एहि अभिलाषाक संग जे कतहु बचनूकेँ नोकरीमे घुसिअयबाक व्यवस्था कऽ दी । एही बचनूकेँ मारबाक दण्डमे कतेक बेर काकी मास्टरकेँ गारि-शाप दऽ भगा देथि । बेटा लेल हुनक कथन रहनि जे चीनीक लड्डू टेढ़ो भला । मुदा समय ओहि चीनीक लड्डूक स्वाद अक्कत तीत कऽ देने रहनि ।

रातिमे भोजन-भातक उपरान्त काकी आ बचनूकेँ अतिथिशाला लऽ गेल रहियनि । कोठलीक साज-सज्जापर विस्मित होइत कहने छलीह – 'बुच्ची, तोरा सन बेटी भगवान सभकेँ देथुन । जेहने अफसरी, तेहने सुख-वैभव । कथुक कमी नहि । दाइ, तोँ तँ गामक नाओँ कऽ देलैँ । पछिला रवि दिन उगना मंदिर पर गेल रही । कमलपुरवाली अपन नैहरक लोककेँ हमरा देखा कहने रहथि जे हिनके जैधी बी.डी.ओ. छनि, से करेज सूप सन भऽ गेल रहय । आब बुझैत छी बेटी हो कि बेटा, सपूते सन्तानसँ लोक सन्तानवाली होइत अछि ।'

काकीकेँ सुतबाक व्यवस्था कऽ अपना कोठली चल आयल रही । समय-परिस्थिति लोकमे कतेक परिवर्त्तन आनि दैत अछि ! अपन बेटी सुधा लेल हमरा भदवा बुझऽवाली काकी लेल हम केहन मूल्यवान भऽ गेल छी ! हुनकासँ बदला लेबाक भावना मोनमे कहियो नहि आयल छल । एकटा अशिक्षित, सुदूर देहातमे रहऽवालीक ज्ञान-सीमा कतेक टा भऽ सकैत अछि, से खूब बूझैत रही, मुदा एतेक दिनुक बाद हुनक आगमनसँ पछिला कतेको वृत्त-चित्र, जकरा बिसरऽ चाहैत रही, आँखिक समक्ष नाचि उठल रहय । कालक क्रूर हाथ मनुष्यकेँ जीवनक कोन मोड़सँ आनि कतय ठढ़ कऽ देत, से कियो नहि जनैछ ।

जयबा दिन काकी हमरा भरि पाँज पकड़ि कानि उठलि छलीह । भीतरसँ हमहूँ द्रवित भऽ गेल रही । बचनूकेँ भरिसक काजक आश्वासन दैत विदा कयने छलहुँ ।

●

दृष्टिकोण

प्राचार्याक बहुत आग्रह पर महिला छात्रावासक अधीक्षिकाक दुरूह पद-भार स्वीकार करय पड़ल छल । ओकर दोसर दिन एकटा अनुसेवकक संग अधीक्षिकाक क्वाटर देखय पहुँचलहुँ, कारण छात्रावासक देख-रेख हेतु ओतहि रहब अनिवार्य छल । केबाड़ खोलितहि विचित्र सन गन्धक भभक लागल । क्वार्टर बहुत दिनसँ बन्द छल । ओकर स्थिति एहन नहि छल जे एक-दू दिनक झाड़-झूड़पर रहल जा सकय । अनुसेवक झाड़ू लऽ भीतर प्रवृष्ट कयलक । छात्रा सभहक गुन-गुनसँ बुझना गेल जे ओ सभ नवागन्तुककेँ देखि, किछु अनुमान लगा रहल छथि । हम सोचिए रहल छलहुँ जे हुनका सभकेँ अपन परिचय दऽ दी- कि तावत एकटा तन्वंगी ठोरपर मुस्कान नेने, लग आबि प्रणाम करैत मृदु स्वरेँ कहलनि, 'दीदी, घरक सफाईमे हम मददि कऽ सकैत छी ?' ओकर लावण्यमय आकृति आ विनम्रतासँ आकृष्ट भऽ उठल रही । प्रस्तावक उतारामे कहने रही जे 'एहि घरक सफाई सहज नहि छै । अहाँसँ सम्भव नहि होयत । लगैत अछि, सप्ताह भरिक बादे आबि सकब एहि क्वार्टरमे ।'

'दीदी, अहाँ क्वार्टरक चाभी मात्र देने जाउ हमरा । काल्हि मंगल छै, मंगलामुखी सदा सुखी । बस काल्हि दू बजेक बाद कखनो आबि जाउ । घर अहाँकेँ फीट-फाट भेटत ।'

हम चुपचाप हुनक तरहत्थीपर चाभी राखि देने रही । मुट्ठी बन्द करैत बिहुँसि उठल रहथि ओ । चलैत काल नाम पूछला पर अपन नाम 'रंजना' कहने रहथि । ओ बी.ए. प्रथम वर्षक छात्रा रहथि जे छात्रावासक कमरा नं. पाँचमे रहैत छलीह ।

दोसर दिन चारि बजे हम दू रिक्शा आ एक ठेलापर अपन साज-समानक संग क्वार्टरक आगाँ पहुँचि गेल रही । सुधाक संग बहुतो छात्रा आगाँ बढ़ि सामान-सभ उतारवामे मददि करय लागल छलीह । क्वार्टरक भीतर गेलहुँ तऽ ने ओ नगरी ने ओ ठाम ! काल्हुक नगरी जेना कतहु बिला गेल छल । घरमे प्रवेश करैत लागल जेना एखन तुरंत किछु पहिने एतय पूजा-पाठ कायल गेल हो। धूमन आ अगरबत्तीक सुगंधसँ घर मह-मह कऽ रहल छल । आनन्दसँ अभिभूत भऽ उठल रही । पाछाँ ठाढ़ि रंजनाक माथ पर हाथ रखैत कहि उठलहुँ, 'वाह, रंजना अहाँ तऽ साक्षात भगवती छी । एके दिनमे जंगलकेँ मन्दिर बना देलहुँ । अहाँ जाहि घर जायब ओ घर धन्य होयत ।

रंजना लजा कऽ ओढ़नीक छोरकेँ दाँत तऽर दाबि लेलनि । कान आ गाल आरक्त भऽ उठलनि । दू घंटाक भीतरे रंजना अनुसेवक ओ अन्य छात्रा सभक सहयोगसँ सभ सामान क्वार्टरमे सजा-बना कऽ राखि देने छलीह ।

ओहि दिनक पश्चात रंजना छात्रावासक सभ काजमे हमरा सहयोग देबय लगलीह । हुनक कार्यकुशलताक परिणाम ई भेल जे सर्वसम्मतिसँ ओ छात्रावासक 'प्रीफेक्ट' चुनल गेलीह । एकर बाद तऽ हुनक दुइयो दिनुक अनुपस्थितिसँ छात्रावासक कतेक कार्य अपूर्ण रहि जाय ।

छात्रावासमे रहयवाली छात्रा सभ लेल शनि ओ रवि विशेष दिन होइत छल, कारण ओहि दुनू दिन 'मेस' मे विशेष प्रकारक भोजन बनैत छल आ 'टेलीविजन' देखवाक अनुमति सेहो रहैत छलै । मुदा एहि सभसँ बेसी आनन्दक बात ई रहय जे अभिभावकसँ भेंट-घाँट होइत छल । छात्रालोकनि कॉलेज कैम्पसक मैदानमे बैसि अपन-अपन अभिभावकक बाट ताकल करथि । रंजनाक मन्हुआयल मुखाकृतिसँ अनुमान लागि जाय जे आइ हुनक पिता नहि आबि सकलाह । एहनामे ओ कोनो गाछ तऽर चुपचाप बैसल करथि । हम बूझि जाइ जे आइ ओ सामान्य नहि छथि । एहन दिनमे हुनका बजा कऽ किछु काज सौंपि दी जेना, छात्रावासक सभ तरहक उपस्करक सूची तैयार करब, सप्ताह भरिक भोजनक 'मेनू' बनाय मेस पंडितकेँ निर्देश देब, छात्रावासमे अनुपस्थित छात्रा सभहक सूची तैयार करब आदि, आदि । मुदा जे कोनो काज हुनका सौंपी, ओ बड़ मनोयोगसँ ओकर सम्पादन करथि । दिनानुदिन ओ हमर स्नेहक विशेष पात्री बनैत गेलीह ।

रक्षाबन्धनक दिन छल । छात्रा सभ भोरे-भोर नहा-धोकऽ भाइक प्रतीक्षामे छलीह । एका-एकी सभहक भाइ सब अबैत रहलाह । मैदानमे खूब चहल-पहल छल । भाइसँ उपहार पाबि बहिन लोकनि पुलकित भऽ रहल छलीह । एक दोसरक उपहारक सम्बन्धमे सभकेँ उत्सुकता छलनि । हुनकर सभहक उल्लास ओ आनन्द देखि मंत्रमुग्ध भऽ गेल छलहुँ । सुन्दर, सुखद् भविष्यक कल्पनासँ भरल पूरल ई वयस की अलमस्तक होइत अछि !

मैदानक सुखद दृश्यक अवलोकन कऽ अपन आवास दिस विदा भेलहुँ । छात्रावासक बीच देने हमर कवार्टरक प्रवेश-बाट छल । अनायास ककरो सिसकी सुनना गेल । विस्मय भेल । स्वरक दिशा अकानलहुँ । ओही दिस डेग बढ़ि गेल । कमरा नं. पाँच लग आबि ठमकि गेलहुँ । देखलहुँ जे चौकीपर बैसल रंजना कानि रहल छथि आ दू-चारि छात्रा हुनका चुप करयवामे लागल अछि । स्मरण भऽ आयल जे रंजनाकेँ भाय नहि छनि । आजुक दिन हुनक पीड़ा स्वभाविक छल । हम भीतर प्रवेश करैत रंजनाकेँ डेंन पकड़ि बाहर लऽ अनने छलहुँ । पुनः हुनका संग लेने 'कॉमनरूम' गेल रही । ओतय टी.वी. खोलि देखय लगलहुँ । रंजनाकेँ सेहो संग बैसा लेने रही । टी.वी. कार्यक्रमक बीच-बीचमे हुनका हँसैत देखि आश्वस्त भेलहुँ । आधा घंटामे ओ सहज भऽ गेल रहथि । तखनहि मेसमे भोजन तैयार होयबाक सूचक 'घंटी' जोरसँ टनटना उठल छल । हम हुनका भोजन करवा हेतु 'मेस' जयवाक आदेश दैत अपन क्वार्टर दिस बढ़ि गेल रही ।

छात्रावासक नियमानुसार डाकसँ आयल चिट्ठी सभकेँ जाँच कयलाक बाद छात्राकेँ देल जाइत छल । एक दिन चिट्ठी सभ देखैत रही कि एकटा खास आकार-प्रकारक सुंदर लिफाफा दिस ध्यान गेल । पत्र फाड़ि पढ़लहुँ तऽ ओ पत्र रंजनाक नामे कोनो युवकक छल । पत्रमे रंजनासँ मिलनक आतुरताक वर्णन रहय । पत्र हम अपना लग राखि लेने रही ।

संध्याकाल एसगरमे रंजनासँ ओहि पत्रक चर्चा कयलहुँ । हुनकर कपोल अड़हुल सन लाल भऽ उठल रहय । दृष्टि नीचाँ कऽ लेने छलीह । मुदा हमर बहुत आग्रह पर स्वीकार कऽ लेने रहथि जे ओ युवक हुनक पड़ोसमे रहैत अछि आ हुनकासँ विवाह करय चाहैत अछि । नौकरी भेटतहि ओ अपन पितासँ विवाहक बात करत । एहिसँ आगाँ कहवा लेल किछु नहि छल । मुदा हम हुनका चेतौनी दैत कहने रही जे एहन पत्राचार छात्रावासमे

पैघ अपराध मानल जाइत अछि आ तेँ एहिपर रोक राखय । ओ मानि गेल छलीह ।

एहि विषयपर हम रंजनाक पितासँ सेहो गप्प कयलहुँ । ओहो एहि बातकेँ स्वीकारलनि तऽ मुदा मुँहपर पसरल विषादक छाप बहुत किछु कहि देने छल । रंजनाक भविष्यक प्रति सशंकित भऽ उठल रही ।

दिन पाँखि लगौने उड़ैत रहल । रंजना बी.ए. पास कऽ विश्वविद्यालयमे नामांकन करा लेने रहथि आ ओतहि हॉस्टलमे रहय लागल छलीह । हुनक अनुपस्थिति बहुत दिन खटकैत छल मुदा समय बड़ अचूक औषधिक काज करैत अछि । से शनैः शनैः अपन छात्रावास नियमावलीमे घेरायल-बन्हायल पुनः दोसर छात्रामे रंजना ताकि लेने रही । समय पूर्ववत चलय लागल छल ।

वर्ष दिनुक बाद, चिट्ठी जाँच करैत रही कि अपना नाम एकटा विवाहक कार्ड देखलहुँ । ओ रंजनाक विवाहक कार्ड छल । वरक नाम राकेश रहैक । स्मरण करय चाहलहुँ जे पत्र लिखयवला युवकक की यैह नाम छल ? मुदा मोन नहि पड़ल । विवाहक आयोजन पटनाक कोनो होटलमे छलैक । आयोजनमे जायब सम्भव नहि छल आ तेँ आशीर्वाद स्वरूप 'टेलीग्राम' पठा देने रही ।

ओहि दिन रवि दिनुक साँझ रहय । भेंटकर्त्ता लोकनिक भीड़ छँटि गेल छल । छात्रावास-प्रांगण शांत लगैत रहय । मैदानमे बैसि अनुसेविका ओ रात्रि प्रहरी सभकेँ आवश्यक निर्देश दैत रही । तखनहि अनुसेविका मानकी सूचना देलक जे गेटक बाहर ठाढ़ि कोनो पुरान छात्रा हमरासँ भेंट करय चाहैत अछि ।

मानकीक संग फाटक तक गेलहुँ । फाटकक बाहर दप-दप हँसैत लाल नूआमे रंजना ठाढ़ि छलीह । हुनका संग ठाढ़ युवकक काँखतर वैशाखी छलैक । हमर प्रसन्नता पर जेना ओ युवक प्रश्नचिन्ह लगा देने छल । मुदा जखन दुनू पैर छूबि प्रणाम कयलक तऽ शंकाक कोनो प्रश्न नहि रहल । असमंजसक स्थितिमे रंजनाकेँ भीतर अयवाक संकेत कैलियनि ।

रंजना हमर समस्या बुझि रहल छलीह । छात्रावासमे कोनो पुरुषक प्रवेश वर्जित छल । तेँ ओ अपन पतिकेँ भेंटकर्त्ता हेतु राखल कुर्सी पर बैसवाक हेतु कहने छलीह । पुनः ओ हमरा संग चलैत छात्रावासक प्रांगणमे आबि गेल रहथि । मानकीकेँ कैन्टीनसँ जलपान अनवाक आदेश दऽ देने रही ।

अवसर भेटितहि हम अनेकशः प्रश्न कऽ बैसल रही ।

–रंजना ई कोन युवक अछि ? ओ पत्रवला ? ककरासँ विवाह कयलहुँ ? ई अपाहिज ?' ओकर बाद ओ जे किछु कहलनि से बस सुनैत गेलहुँ ।

–दीदी, ई ओ नहि छथि । ओ पत्रवाला फरेबी छल । हम ओकर छलकेँ प्रेम बुझि लेने रही । एकटा पत्र हमहूँ देने रही, जाहिमे ओकरहिसँ विवाह करबाक बात लिखने रहियैक । ओ पत्र हमरा लेल अभिशाप सिद्ध भेल । माय-बाबू सेहो बहुत दुःख पौलनि ।

रंजनाक आँखि भरि आयल रहैक । आँचरसँ नोर पोछि पुनः कहय लागल छलीह ।

–ओ हमरा ब्लैकमेल करय लागल । माय-बापक एसगर सन्तान होयवाक कारणेँ हमरासँ गलत फायदा उठबय चाहलक । अपन नोकरीक नाम पर बाबूसँ पचास हजार टका माँगि देबय कहलक । हम अस्वीकार कऽ देलियै । बदनामीक भय देखा ओ हमरा अनुकूल नहि कऽ सकल । मुदा, एहि पुरुष प्रधान समाजमे तऽ स्त्रीए दोषी होइत अछि ।

ओकर मुखौटा उतरि चुकल छलै आ हमरा परसँ प्रेमक बोखार सेहो । तखनहि बुझलहुँ जे दुनियाँ जतेक रंगीन बुझना जाइछ ओतेक वास्तविकतामे नहि होइत अछि । हम गाम छोड़ि छात्रावास चल अयलहुँ, मुदा क्लास नहि कऽ पाबी । सदति अशांत रहैत छलहुँ ।

ओही घायल अवस्थामे हमर रक्षा कैने छलाह, ई राकेश । हिनकर बहिन शीला हमर संग छात्रावासमे पढ़ैत अछि । राकेश ओकरेसँ भेंट करय आयल करथि । हिनकर शालीनता ओ गम्भीरता हमरा आकृष्ट कयने छल ।

राकेश पैघ चित्रकार छथि । हिनकर 'पेंटिंग'क जगह-जगह प्रदर्शनी लागि चुकल अछि । विश्वविद्यालय गैलरीमे सेहो हिनक पेंटिंगक प्रदर्शनी लागल रहय । हम शीला संग देखय गेल रही । हिनकर बात-बिचारसँ तऽ प्रभावित रहबे करी 'पेंटिंग' देखि चमत्कृत छलहुँ । स्त्रीक लाचारी, कुंठा, शोषण, स्त्रीत्व एहन उकेरल छल जे टकटकी लागि गेल ।

शीलासँ हमर परिस्थितिक जानकारी राकेशकेँ भेटि गेल रहनि आ तेँ एकदिन कहने रहथि- रंजना कलामे बहुत शक्ति छैक । ओ बड़ पैघ संगी होइत

अछि । सितारक तार हो अथवा पेंटिगक कूची, नृत्यक झंकार हो अथवा साहित्यक शब्द- गुच्छ, मोनकेँ बड़ शांति दैत अछि । जीवनक पैघसँ पैघ अभाव, घावकेँ बिसरा देत ।'

ओकर बाद हमहूँ कूची पकड़ि लेने छलहुँ । गुरु छलाह राकेश । वास्तवमे बड़ शांति भेटैत छल । मोनक पीड़ा कम होइत गेल । ओहि कठिन समयमे ओ हमरा सम्हारि लेने छलाह ।

एक दिन अखबारमे विवाहक विज्ञापन देखैत राकेश कहि बैसलाह, –रंजना, अहाँ लेल एहिमे वर तकैत छी ।' हमर पपड़ी पड़ल घावकेँ जेना कियो खोंटि देने रहय ।

-राकेश हँसी जुनि करू । हमरासँ के बियाह करत ?' हम हिचुकय लागल रही । राकेश घबड़ा उठलाह । एकर हुनका कनेको अंदेशा नहि छलनि ।

-रंजना, हमरा माफ करू । अहाँकेँ चोट पहुँचाबय नहि चाहैत रही ।'

-सत्य यैह अछि, राकेश । एकरा जुनि झाँपू । हमरा आब एसगर जीवन कटवाक अछि ।'

-सत्य ई अछि रंजना, जे अहाँकेँ अपन पत्नी बना हम गौरवक अनुभव करब, मुदा हम अहाँ जोगर नहि छी । तेँ चुप रहलहुँ ।'

राकेश नजरि झुका लेने रहथि । हम एकटक हुनका देखैत रहि गेलहुँ ।

आइ ई बात सत्य अछि दीदी, जे हुनक पत्नी बनि हम गौरवक अनुभव करैत छी । हुनक शरीरिक दोष हमरा कहियो नहि खटकल । हमर माय बाबू सेहो हिनका बेटाक रूपमे पाबि धन्य छथि । दीदी, हमर करुण अतीत, मधुरिम वर्तमानमे बदलि गेल अछि । हमरा आशीर्वाद दिअ ।'

हम आत्मविभोर भेल सुनैत रहलहुँ । जेना कोनो प्रिय चलचित्र देखवामे तल्लीन रही । पुनः रंजनाक संग फाटकपर पहुँचलहुँ, जतय राकेश बैसल छलाह । अनुसेवककेँ चाह-जलखैक व्यवस्था लेल कहने छलियै । फेर गप्प -सप्पक क्रम चलय लागल । रंजनाक प्रति स्नेह ओ सम्मानक झलक राकेशक वार्त्तालापसँ स्पष्ट भऽ रहल छल । आश्वस्त भेलहुँ जे रंजना सही स्थान पहुँचल छथि ।

राकेश नीक सितारवादक सेहो रहथि आ तेँ ओहि प्रसंग बहुत गप्प-सप्प कयलनि । बातहि-बातमे ओहो टोहि लेने छलाह कारण सितारक किछु ज्ञान हमरो छल । ओहिमे एक-दू परीक्षा उत्तीर्णों छलहुँ मुदा आगाँ छूटि गेल । ओ हमरासँ पुनः सितार सिखवाक आग्रह कयलनि । हमरो मानहि पड़ल छल । अगिला रविसँ ओ रंजनाक संग हमर गुरु बनि आयल करताह ।

हम चकित छलहुँ । किछु घंटा पूर्व ओ हमरा नजरिमे अपाहिज रहथि । हुनक शारीरिक दोष देखि हम हुनका दीन-हीन बुझने रही । रंजनाक खराब भाग्यपर कनवाक मोन भेल रहय । मुदा राकेश वस्तुतः राकेश छलाह । चन्द्रमाक शीतल ज्योत्स्नासँ मोन-प्राण जुड़ा देने रहथि । हुनका अपंग बूझि हम स्वयं अपना दृष्टिमे छोट सन भऽ गेल रही । राकेश जीबय जनैत छथि आ दोसराकेँ जीबाक संदेश दैत छथि । एकटा खास मापदंड पर लोकक मूल्यांकन करबाक दृष्टिकोण बदलि गेल छल ।

रंजना राकेशक संग चल गेलीह । हमहूँ अपन क्वार्टर दिस बढ़ि गेल रही । रंजना हमर प्रिय छलीह मुदा आइ राकेश प्रियतर भऽ गेल छलाह । कोना ने हो, प्रियक प्रियतम तऽ प्रियतर होयबे करत । कोठरी पहुँचि सभसँ पहिने आलमारी परसँ सितार उतारलहुँ आ गमछासँ ओकर झोल झाड़य लागल रही ।



निर्णय

मुन्ना बहिन,

हमरा सहोदरसँ बेसी स्नेह अहाँसँ भेटल अछि आ तेँ कहियो अहाँकेँ बिसरि नहि सकब । हँ, जीवनक झंझावातमे एम्हर-ओम्हर फेका जयबाक कारणेँ सम्पर्क नहि भऽ पबैत अछि, मुदा एकर कचोट सतति बनल रहैए । बहिन, हम सभ नेनामे संग-संग खेलायल-धुपायल छी । हमर गाम अहाँक मातृक, आ तेँ अधिककाल अहाँ अपन नानीगाम आबी । कोना ने अबितहुँ, बाबी आ बाबाक दुलरूआ नातिन जे रही । ओ दुनू गोटे अहाँकेँ दुलारसँ 'मुन्ना' कहल करथि आ तेँ अहाँ अपन मातृकमे सभ धीया-पूताक 'मुन्ना-बहिन' छलहुँ । दुलारू तऽ हमहूँ रही । बहुतो कबुला-पातीक बाद हमर जन्म भेल छल । गर्दनि, बाँहि आ डाँड़मे कतेको जंतर-मंतर पहिराओल गेल रहय । हाथमे मोटका अष्टधातुक मट्ठा, जकर डर देखा कतेक अबल-दुबल नेनाक हाथक मधुर छिनि खा लैत रही । मोनहि होयत, एक बेर हमर मट्ठासँ अहूँकेँ चोट लागि गेल छल । अहाँ कनैत आँगन गेलहुँ आ हम बाबीक डरे लंक लगा पड़ा गेल रही । केहन सुखद अलमस्तक जीवन छल ओ ! आब तऽ अपन नेनपन स्वप्न सदृश लगैत अछि ।

बाबूजीक रिटायर होयब, मायक बिमारी, भैयाक पढ़वाक खर्चक समस्या सभसँ कठोर वास्तविकताक बोध होइतहि, नेनपन शनैः शनैः पड़ाय लागल । भैया बहुत महत्वाकांक्षी रहथि । एम.ए., बी.एड., एल.एल.बी. अनेकों डिग्रीधारी भैया जखन नोकरी लेल शहरे शहर बौआय लगलाह तऽ माय-बाबूजीक निराशाक सीमा नहि रहल । बाबूकेँ तिलो भरि शंका नहि भेल रहनि जे एतेक खर्च कऽ पढ़ाओल, अनेक डिग्रीधारी बेटा जीवनक संध्याकालमे कोनो आश्रय

नहि दऽ सकत । साल पर साल बितैत गेल । भैया ओहिना 'सर्टिफिकेट' वला फाइल नेन एहि इनटरव्यूसँ ओहि इन्टरव्यू हेतु बौआइत रहलाह ।

किछु समयक बाद माय दिवंगता भऽ गेलीह । मइटुग्गर होयवाक बोध जीवनक प्रति घृणा-भाव भरि देलक । मुदा कृतज्ञ छी भौजीक, जे ओहन समय हमरा सम्हारने छलीह । ओहि समय हम कॉलेजक अन्तिम वर्षक छात्र रही । जीवनक मुख्यतम आवश्यकता रोजगार, बेरोजगार नहि बूझैत छै आ तेँ गामक जमीन बिकायब शुरु भऽ गेल छल । एकटा छोट बहिन कुमारि छल, जकरा अहाँ दुलारसँ 'ननटुनमी' कहल करियैक । ओहो विवाह योग्य भऽ गेल छल । बचल-खुचल जमीनसँ बहिनक कन्यादान सम्पन्न भेल रहय ।

बाबू आँखिसँ आन्हर आ विक्षिप्त भऽ गेल रहथि । गामपर हुनक देख-रेख भौजी आ आँगनक एकटा काकी करथि । सप्ताह भरि दरभंगा, पटना बौअयलाक बाद शनि-रवि कऽ भैया बाबूकेँ देखय गाम आबथि । बाबू विक्षिप्तताक स्थितिमे सभसँ पूछल करथि –लल्लन के नोकरी भेटि गेल ? लल्लन माय कतय छी ? दुर्गाथान मधुर चढ़ा आउ । भोला बाबाकेँ सेहो जल चढ़ा देबनि ।' भैया बाबूजीक प्रलाप सुनि नेना जकाँ कानय लागथि।

ई सभ देखैत-सुनैत हमर युवा मोनक आशा-आकांक्षा धूमिल होबय लागल छल । खयबाकाल माय संग महजरो करयवला नंगटा बेटाक आगू जे सातु, नोन भेटि जाय, से चुपचाप घोंटि लिअय ।

भैया अधिककाल चुप रहल करथि । हुनकर स्थिति देखि हमर आत्मा कानि उठय । कखनो मोन नीक रहनि तऽ लग बजा, पीठ पर हाथ राखि कहथि, 'रतन, तोँ अपन पढ़ाई लिखाइ मोनसँ कर । पढ़बाक बड़ पैघ मोल छै । माय नहि रहलीह, बाबू आन्हर छथि, मुदा हमर हाथ-पैर, आँखि सभ ठीक अछि । तोँ कोनो चिन्ता नहि कर । सभ ठीक भऽ जेतै ।'

भैयाक एहन आश्वासनक आब कोनो प्रभाव मोनपर नहि पड़ैत छल । कोठरीसँ बाहर आबि खूब कानि ली । दिन-प्रतिदिन भैयाक दुर्बल होइत शरीर आ आँखिक चारूकात कारी रेघा हमरा विचलित करैत रहल । मोन होअय जे कोनो व्यवसाय करी, मुदा पूँजी कतयसँ आओत, से सोचि लाचार भऽ जाइ । पैरमे छोट होइत जूत्ता जकाँ बाबूजीक पेंशन सिकस्त भऽ रहल छल ।

भौजी पढ़लि-लिखलि छलीह । एहन समयमे हुनका घरमे हाथपर हाथ

राखि बैसब नहि नीक लगलनि । ओ जनैत छलीह जे भैयाकेँ ई बात नीक नहि लगतनि ।

हुनकर तर्कक आगाँ हमहूँ चुप भऽ गेल रही । ओ गामहिमे चलैत प्राइवेट स्कूलक हेडमास्टरसँ हमरे संग जा गप्प कऽ अयलीह । मात्र तीन सय टाकापर ओहि स्कूलमे कार्य करब स्वीकारि लेने छलीह । हेडमास्टर आ भौजीक बीच पारिश्रमिक लेल होइत मोल-भाव हमर मोनकेँ तीत-अकत कऽ देने छल । हम विवशताक जालमे छटपटाइत रहलहुँ । भैया तक सेहो ई खबरि पहुँचि गेल छल । भौजीक ई नोकरी हुनका कतहु भीतर तक सिहरा देने छलनि । ओकर बाद तऽ ओ गामो आयब-जायब कम कऽ देने रहथि ।

तीन-मास तक भैयाक कोनो खबरि नहि भेटल छल । दृष्टिविहीन, पिताक व्याकुलता सहजहि अनुमान कऽ सकैत छी । भौजी स्कूलसँ आबि भैयाक चिट्ठीक जिज्ञासा करथि आ नकारात्मक उतारा पाबि मुँह केहन धुआँइन भऽ जानि से एखनहुँ ओहिना मोन अछि ।

एकदिन भैयाक एकटा दोस्त मनोज भाइ मधुबनीमे भेटलाह, ओ जे खबरि देलनि, ताहिसँ स्तब्ध भऽ गेल रही । हुनकहिसँ जानकारी भेटल जे 'इन्टरव्यू' देबय लेल भागलपुर जयवाकाल ट्रेनमे भैयाक अटैची चोरी भऽ गेल। कपड़ा-लत्ता तऽ जे गेल, ओहिमे 'सर्टिफिकेट'क फाइल छल । भैयाक स्वास्थ्यक सम्बन्धमे सेहो ओ चिंता व्यक्त कयलनि । ओहिसँ आगाँ किछु सुनबाक सामर्थ्य नहि छल । बेजान सायकिल हँकैत गाम पहुँचल रही आ बौआ ककासँ किछु टाका पैंच लऽ भोरे पटना लेल विदा भऽ गेल छलहुँ । भौजीकेँ किछु कहब उचित नहि बुझायल छल ।

पटना पहुँचि भैयाक पहिलुक डेरा पर गेलहुँ । मकान मालिक जे किछु रूच्छ आ कठोर शब्देँ कहलनि तकर सारांश यैह छल जे तीन मास तक भाड़ा नहि देबाक कारणेँ हुनका डेरा छोड़य पड़ल छलनि । मुदा एतबा कृपा कैलनि जे ओतहिसँ किछु दूरी पर रहैत भैयाक डेराक जानकारी दऽ देलनि । ओतय गेलापर भैयाकेँ जाहि स्थितिमे देखलहुँ से कल्पनो करय जोगर नहि छल । ओ डेरा की एकटा चाह-बिस्कुट दोकान चलबयवालाक दोकानसँ सटले एकचारी खसायल छल । ओकर दू भाग टाटसँ घेरल आ एक भागमे फड़की लागल रहैक । ओहीमे एकटा चौकी लागल रहय । यैह छल भैयाक नवका डेरा । भैया

ककरोसँ गप्प कऽ रहल छलाह । हमरा देखितहि हुलसित भऽ पजिया लेलनि । हमर प्रश्न करवासँ पहिनहि अपन सफाइ देबय लागल रहथि, –रतन, हम तऽ एक-दू दिनमे गाम जाइए लेल छलहुँ । असलमे एकटा कॉलेजमे नोकरीक व्यवस्थाक जोड़-तोड़मे लागल रही । आब तऽ भेले बुझह । भऽ सकैत अछि सप्ताहक भीतरे ज्वाइनो कऽ ली । एही तारतम्यमे गाम नहि जा सकल रही । गामक आओर सभ समाचार ? बाबूजी नीके छथि ने आ ....?'

भैया बजितहि जा रहल छलाह । मोनहि मोन जवाबो देने छलीयनि 'हमरा जुनि परतारू । अहाँ भौजी दऽ चाहियो कऽ नहि पूछि रहल छी मुदा हम सभ जनैत छी ।' प्रगट भऽ कहने रहियनि- 'भैया सभ ठीक अछि । मात्र अहाँक अनुपस्थिति कष्ट दैत अछि । चलू गाम, दुःख-सुख एक संग बितबैत जायब । हमहूँ 'ट्यूसन' करब शुरु कऽ देने छी । दलाने पर दस-पन्द्रह विद्यार्थी भोर-साँझ पढ़य अबैत अछि ।'

हुनका हमरा संग नहि अयवाक छलनि से नहि अयला । दोसर दिन हमरा गाम कऽ विदा करैत कहने छलाह- 'बस, तीन-चारि दिनमे आबि रहल छी । सम्भवतः काल्हिए 'ज्वाइनिंग' पत्र भेटि जायत । बाबूकेँ अयला पर खुशनामा कहबनि । तोँ नहि किछु बजिह ।' नहियो चाहैत हमरा चलि आबय पड़ल छल । हुनका कथनानुसार हुनकर नोकरीक बात गुप्ते रखने रहलहुँ ।

भैयाक अयबाक प्रतीक्षा करय लगलहुँ । दिन पाँखि लगौने उड़ैत रहल । पटनासँ अयला लगभग दस दिन भऽ गेल छल । एगारहम दिन भिनसरेसँ मोन कोनादन करैत रहय । दिनमे ठीक बारह बजे डाकपिउन तार लऽकऽ आयल आ अनलक मर्मांतक पीड़ा । एक दिन पूर्व सड़क पार करैत भैयाक बससँ दुर्घटना भऽ गेल छलनि आ ओ अस्पतालमे भर्त्ती छलाह ।

हमरा आँखिक आगाँ अन्हार भऽ गेल छल । अपनाकेँ नहि सम्हारि सकल रही । आँगनमे बेसुध भऽ खसि पड़लहुँ । लोक सभहक भीड़ लागि गेल रहय । होशमे अयलहुँ तऽ भौजी सेहो स्कूलसँ आबि गेल रहथि । ओ चौकठिसँ पीठ टेकने शून्यमे देखि रहल छलीह । हमरा नहि रहल गेल । झमारि कऽ हुनका होशमे अनलहुँ ।

बाबूजीकेँ बड़की काकी पर छोड़ि, भौजी आ बौआ ककाकेँ लऽ तुरंत पटना विदा भऽ गेल रही । पटना अस्पतालमे भैया जल्दीए भेटि गेलाह । संगमे दू तीन टा मित्र रहथिन । भैया हमरा सभकेँ देखने रहथि मुदा मुँहसँ शब्द नहि निकलि सकलनि । सोनितक बोतल लागल छलनि । आँखिक कोरसँ दू बुंद नोर ढ़बकि गेल रहनि, से हम देखने रही । दुनू हाथेँ हुनकर पयर पकड़ि हम बेसम्हार भऽ गेल छलहुँ । ओतय तैनात नर्स तमसा कऽ हमरा बाहर बैसा आयल छल ।

भौजीक आँखि करजनी सन लाल रहनि मुदा नोरक बूंद नहि । बीच-बीचमे अपन आँचर मुँहमे कोंचि लेथि । –वाह भौजी, की हिम्मत छलनि ! हुनकर सहनशक्तिक आगाँ हम बहुत छोट पड़ि गेल रही । हम बेसुध रही मुदा ओ पूर्ण चेतनमयी आ भैयाक सेवा-सुश्रुषामे तल्लीन । अपन कान आ हाथक एक-एक गहना उतारि बौआ ककाक हाथमे दैत गेलीह, जाहिसँ दवाइ पानिमे कोनो कोताही नहि होअय । मुदा एतबा किछु भेलाक बादो भैया उठि कऽ ठाढ़ नहि भऽ सकलाह । पाँच दिन मृत्युसँ अनवरत संघर्ष करैत ओ परास्त भऽ गेल रहथि । मात्र पिजड़ा 'बेड' पर पड़ल रहि गेल । ओ अपने उड़ि गेलाह... ।

खाली हाथ आ पथरायल मोनक संग गाम आबि गेल छलहुँ । मरल माछ सन निस्तेज आँखि लेने भौजी श्राद्ध कर्ममे अनवरत खटैत रहलीह । सभ किछु सम्पन्न भेलाक बाद पिताक बहुतो आग्रह पर नैहर नहि गेल छलीह । घरक सभ काज कऽ कोठरीमे बन्द भऽ जाथि । स्कूल जायब सेहो छोड़ि देने रहथि । एहन समय अपन कर्त्तव्या-कर्त्तव्य पर मंथन करैत रहलहुँ ।

कतेको मासक अन्तःचिन्तनक पश्चात हम एकटा निर्णय पर पहुँचल रही । वास्तवमे हमरा आगाँ भविष्य हाथ पसारने ठाढ़ छल, मुदा हम सभसँ मुँह मोड़ि भौजीक सिउँथमे एक चुटकी सिनुर भरि देलियै । दू दिन तक भौजी अन्हारघरमे बन्द रहल छलीह । हमरो हुनका दिस तकबाक साहस नहि होइत छल मुदा अपन निर्णय पर अडिग रहलहुँ ।

हम भौजीकेँ छोड़ि कतहु जा बसितहुँ तऽ हुनक निस्तेज आँखि हमर पाछाँ नहि छोड़ैत । हम चैनसँ नहि जीबि सकतहुँ । जानि नहि, हुनकर सून कोर भरि सकत वा नहि मुदा जँ कियो हुनका माय कहयवला भऽ गेल तऽ ओहिदिन हम अपना जीवनकेँ धन्य बूझब ।

अहीं कहू बहिन, भौजीक प्रति हमर सिनेहकेँ दुनियाँक कोनो स्त्री जे हमर पत्नी बनैत, ओ स्वीकार कऽ पबैत ? अनेकानेक उपालम्भक प्रहार होइत

रहैत । दोसर ई जे जीवनक तीख बाट पर हुनका एसगर छोड़ब उचित होइत ? एहि लेल हमरा सामाजिक प्रताड़ना कम नहि भेटल अछि । कतेक दोस्त-महिम आँखि मोड़ि लेलनि । दियादवादक टेढ़ मुँह नुकायल नहि रहैए । मुदा हमरा सभ बर्दाश्त अछि । अपन भैयाक आत्माक शांति लेल..... भौजीक संतोष लेल ...... ।

बहिन, आब न्याय-तुला अहाँक हाथ अछि । अहाँक कोनो दण्ड हम स्वीकार करब । विश्वास अछि अहाँक पत्र हमरा जल्दीए भेटत ।

अहींक छोट भाय,

-रतन (टुनमा)



बाटे बिलायल पानि....

देवकी बाबू सन्न रहि गेलाह । अपन बेटाक श्रीमुखसँ जे किछु सुनय पड़लनि, ओहिपर विश्वास नहि भऽ रहल छलनि । यावत होशमे आबथि तावत परिमल कानमे 'वाकमैन' लगा कोनो प्रिय गीत सुनबामे व्यस्त भऽ गेल छल । ओ कुर्सीपर बैसि गेल छलाह ।

पत्नी भानसघरमे हुनकहि लेल चाह बनबऽ गेल छलीह । बेटाक शब्द-वाण हुनको कानमे गेल छलनि आ ओ झटसँ बाहर आबि पति दिस टुकुर-टुकुर ताकि रहलि छलीह । हुनकर मुँहपर पीड़ाक स्पष्ट रेख झलकि रहल छल । आब शंकाक कोनो गुंजाइश नहि जे एखन तुरंत घटल घटना एकदम सत्य रहय ।

देवकी बाबू गुम-सुम भेल घरक छतपर दृष्टि टिकौने छलाह । लगलनि जेना छत कतहुसँ चनकि गेल हो । एखन तक तँ ओ यैह बुझैत छलाह जे तीनू बच्चाक पालन ओ बड़ यत्नसँ कयलनि अछि । एहि बातक गर्वो छलनि हुनका । हुनक इष्ट मित्र जखन हुनक धीया-पुताक प्रशंसा करथि तँ हुनकर छाती सूप सन भऽ जाइनि ।

पैघ दुनू बेटी रहनि । बड़की बेटी 'यूनिवर्सीटी टॉपर' रहनि आ जमाय बैंकक अफसर । दोसर बेटी मेडिकलक अन्तिम वर्षमे छलनि । ओकर विवाह पछिला वर्ष डॉक्टर लड़कासँ कऽ ओ निश्चिन्त भेल छलाह । बेटा परिमल बी. कॉम. कऽ कम्पिटीशनक तैयारी कऽ रहल छल । बेटी-बेटाक पालन-पोषणमे कतहु ओ कोनो भेद-भाव नहि कयलनि । सीमित साधन रहितहुँ ओकर सभक आवश्यकतामे कोनो प्रश्नचिह्न नहि लगाबथि ।

हुनका सदैव अपन बालपन मोन पड़नि । पिताक आर्थिक अभावक

कारण ओ स्नातकसँ आगाँ नहि पढ़ि सकलाह । आगाँक शिक्षा लेल दोसर शहर जाय पड़ितनि । ओतेक खर्च करबाक सामर्थ्य हुनक पिताकेँ नहि रहनि आ तेँ ओहि अभावकेँ सहजतासँ स्वीकार कऽ लेने रहथि । ओ तँ ईश्वरक कृपा जे बैंकमे नोकरी लागि गेल छलनि, जाहिसँ अपन छोट गृहस्थीक गाड़ीकेँ सहजतापूर्वक चलबैत रहलाह ।

पत्नी सेहो सही अर्थमे जीवनसंगिनी भेटल रहथिन । जीवनक सभ उतार-चढ़ावमे समान भावसँ संग पुरैत रहलीह । ओना, एक दू बेर दबल स्वरेँ परिमल हेतु कतहु बाहरक उच्च शिक्षाक इच्छा व्यक्त कैने रहथि, मुदा अपन आर्थिक स्थितिक बाहर बात बूझि शांत भऽ जाथि । देवकी बाबू बुझौथिन जे दुनू बेटीकेँ कतऽ पठौलहुँ ? एतहि रहि नीकसँ नीक शिक्षा ग्रहण कयलक । तहिना परिमल सेहो मेहनति करत, तँ अवश्य नीक करत ।

किछु दिनसँ देवकी बाबू अनुभव कऽ रहल छलाह जे परिमल उद्विग्न रहैत छथि । बात-बातपर झझकब एवं पढ़ाइक प्रति अरुचि स्पष्ट लक्षित होइत छल । घरसँ बेसी काल निकलल रहब चिंताक कारण भऽ गेल छलनि । मोन पड़ि अयलनि हुनकर माय जे दोसर पोतीक जन्म भेला पर बहुत दुःखी भेल रहथिन। कारण पुछलापर कहने छलीह- बौआ, तोँ एखन की बुझबहक ? बेटीक जन्मसँ पृथ्वी डेढ़ हाथ नीचाँ धसि जाइत छथि, आ बेटाक जन्मसँ डेढ़ हाथ ऊपर भऽ जाइत छथि ।' अपन एहि दुःखकेँ तावत तक बेर-कुबेर बजैत रहलीह, यावत कि परिमलक जन्म नहि भऽ गेल । हुनका हिसाबेँ पृथ्वी डेढ़ हाथ ऊँच भऽ गेल छलीह ।

आइ अपन मायक ओहि जोड़-घटावकेँ ध्यान करैत लगैत छनि जे पृथ्वीक जे भेल हो, हुनक अपन पैर तरक धरती जेना धँसल जाइत हो । आखिर कोना ने होइनि, दादी ओ समस्त परिवारक दुलरुआ, आँखिक दीप परिमल केहन चोखगर शब्द-वाण करेजपर चला गेल रहनि- हमरा सम्बन्धमे किछु नहि सोचू । हमर कहिया चिंता रहल ? की कयलहुँ हमरा लेल ? पाँच हाथक एकटा घर नहि बनबा सकलहुँ । झूठ सहानुभूति नहि देखाउ । हम अपना लेल स्वयं सोचि लेब ।'

होशमे अयलापर सभसँ पहिने देवकी बाबू घरक खिड़की बन्द कयलनि, एहन सन जेना परिमलक कथन दोसर घरक लोक ने सुनि लिअय । की कहत

लोक ! एही बेटाक गुण-गान करैत फिरैत छलाह देवकी बाबू ! नहि-नहि ओ अपन कोनो सन्तानक निंदा नहि सुनि सकैत छथि । अपनाकेँ अपनहि भरोस देबऽ लगलाह । परिमल एना नहि बाजि सकैछ । निश्चित कोनो उद्दंड संगी कान फूकि देलकनि अछि अथवा अवसादक स्थितिमे बजा गेलनि । यैह बाते अछि । अकस्मात् जेना तामस आ दुःख ढ़हि गेल होइनि । कुर्सीसँ उठैत भानसघर दिस विदा भेलाह, 'चाह नहि अनलनि ।'

बाहर आबि देखलनि, मालती खिड़कीसँ सटलि ठाढ़ि छथि आ कपक चाह सेरा कऽ पानि भेल अछि । पत्नी मालती, जनिका दुलारसँ कखनो कऽ 'मालो' कहथि, हुनका दिस तकैत जेना क्षण भरि लेल लज्जित भऽ गेलाह । ओहि समय मालती केहन असहाय सन लागल छलीह जेना जीवन भरिक पूजी केओ चोरा लऽ गेल हो । मुदा एतेक शीघ्र ओ हारि नहि मानि सकैत छथि । एहि घटनाकेँ दुःस्वप्न सन बुझैत, एक हाथे सेरायल चाहक कप उठौलनि आ दोसर हाथे मालतीक हाथ पकड़ैत कहलनि, 'किएक ठाढ़ि छी ? दोसर कप चाह बनाउ ने, इलायचीवला ।'

मालती सहज होयबाक प्रयास करैत भानसघर दिस बढ़ि गेलीह । देवकी बाबू घरक आगू लगाओल फूलक जड़ि कोड़ऽ लगलाह । गाछ सभ मुरझायल छल, आइ ओकरा निश्चित पटओताह । मालती चाहक कप लेने आबि गेलि छलीह । देवकी बाबू खुरपी छोड़ि बरंडापर आबि गेल छलाह । मालतीकेँ सेहो कुर्सी पर बैसबाक संकेत कयलनि ।

पत्नीक उतरल मुँहपर दृष्टि गड़बैत बुझौने छलाह, 'मालो, ई समयक प्रभाव अछि । बढ़ैत भौतिक सुख-सुविधा, महत्त्वाकांक्षा आ रोजगारक अभाव आजुक युवावर्गकेँ दिगभ्रमित कयने अछि । प्रायः अपन असफलता नुकयबा लेल ओ अभिभावकेपर दोषारोपण करैत छथि । बहुत कम लोक एहन परिस्थितिमे संतुलित रहि पबैछ । मुदा अहाँ चिन्ता जुनि करू । ....हम सोचै छी, काल्हिए बैंकसँ 'लोन' हेतु आवेदन दऽ दी । नोकरीक बाद तँ आखिर एकटा घर चाहबे करी ।'

ओहि दिनसँ देवकी बाबू साँझ कऽ बिलम्बसँ घर घुरथि । मालतीक पुछलापर कहलनि जे जमीन देखब एवं ओहिसँ सम्बन्धित अन्य कार्य-कलापमे समय लागि जाइछ ।

भिनसर नौ बजे दुनू बाप-पूत संग जलखै करैत छलाह, मुदा एम्हर ओ

व्यवस्था बदलि गेल अछि । परिमलक जलखै आ भोजनक कोनो निश्चित समय नहि रहि गेल । मालती एहि सभ स्थितिसँ क्षुब्ध रहऽ लगलीह ।

काल्हिए दिनक दू बजे परिमल घर अयलाह तँ मालती भोजन गर्म करय लगलीह । परिमल चूल्हि लग सहटि आयल छलाह- जनै छी माँ, ई युग व्यापारक थिक, नोकरीमे की राखल अछि ! नोकरी तँ बाबुओजी कयलनि । की कऽ सकलाह जीवनमे ? हमर ओ मित्र राकेश, अहाँ चिन्हैत छी ने ? ओहो यैह कहैत अछि आ तेँ ओकर पिता पाँच लाखक पूँजी दऽ रहल छथि । ओ 'हिन्दुस्तान लीवर' क 'एजेन्सी' लऽ रहल अछि । हमरो कहैत अछि, मुदा हम कोन बलपर सोचब, हजार दू हजारक लेल तँ मास दिनुक बाट ताकऽ पड़ैत अछि । कतेक लचार छी हम सभ ....!'

मालती सभ किछु गट-गट सुनैत रहलीह । ओ की बाजथु ! पाँच लाख ओ एना बाजि रहल छलाह जेना पाँच हजारक बात । ई की भऽ गेलनि परिमलकेँ ? गर्दनि पकड़ि खीर आ मालपूआक फरमाइश करऽवला परिमल कतऽ भुतिया गेलाह ! मालतीक माथमे किछु घिरनी जकाँ नाचि उठल । जीवनक साँझमे हिनके तँ सहारा छल, से ई कोन अन्हड़ उठि गेल !

दोसर दिन परिमलक अनुपस्थितिमे देवकी बाबूकेँ सभ किछु सुनौने छलीह मालती । चाहक कपसँ उठैत भाफ पर दृष्टि गड़ौने ओ सभ किछु सुनने छलाह.... आ मोने मोन किछु निर्णय लेने रहथि ।

मकानक आवश्यकताक संग-संग व्यवसायक हेतु पाँच लाख टाका ? एहि दुनूक व्यवस्था ओ कोना कऽ सकैत छथि ? माय-बापक सिनेहक प्रमाण की एहीसँ भेटैछ जे ओ बेटा लेल मकान आ पूजीक हेतु किछु लाख बैंक बैलेंस राखथि ! जनिकासँ ई सम्भव नहि, ओ की पिता होयबाक अधिकार नहि रखैत छथि ? एहि युगक यैह शिक्षा अछि ? ई नव पीढ़ीक रीढ़ एतेक कमजोर किएक अछि ? पहिलुक पिता तँ जेठ बेटा पर छोट भाइ बहिनक जिम्मेदारी छोड़ि जाथि, जकरा कि पूर्ण श्रद्धाक संग ओ निर्वाह करैत छलाह । ओ स्वयं पिताक मृत्युक पश्चात् एक बहिनक विवाह पूर्ण मान-सम्मानक संग कयने रहथि । हुनक पिता तँ किछु जमा पूजी नहि छोड़ि गेल छलाह, एहि लेल ओ कहाँ कहियो खिन्न भेल रहथि । अपन छोट आमदनीमे परिवारक संग प्रसन्न रहथि । बेटियो सभसँ कहियो कोनो समस्या नहि भेल छलनि, मुदा ई परिमल कोन पढ़ाइ पढ़ि लेलनि !

मायक आँखिक दीप परिमल माइयोसँ खीचल-तनल रहऽ लगलाह । साँझ कऽ थाकल हारल देवकी बाबू आबथि तँ मालतीक धैर्यक बान्ह टुटि जाइनि, आँखिसँ नोरक धार बहबैत कहलनि– आइयो परिमल दिनुका भोजन करऽ नहि अयला । नहि जानि कतऽ रहैत छथि ? सोचने रही जे परिमलक विवाह-दान कऽ पुतोहु आ पोता-पोतीक संग सुख-चैनसँ रहब, मुदा ओ तँ जेना हमरा सभसँ दूरे-दूरे रहऽ चाहैत छथि । सभ आशा-आकांक्षा जेना बाटेमे बिला गेल ।....किछु अधलाहक आशंकासँ हम बेचैन रहैत छी । अहाँ किछु दिनुका छुट्टी लऽ घरेमे रहू...।'

ओहि दिन देवकी बाबू बैंकसँ अयलाह तँ आन दिनुक अपेक्षा मोन फड़िच्छ रहनि । मुँहपर तनावक रेखा कम छल ।–' मालो कतऽ छी ? भगवान हमर सभक सुनि लेलनि ।' मालती आँगनसँ झटकल लग आबि ठाढ़ भऽ गेलि छलीह ।

सरकारी नियम आयल अछि जे रिटायर होयबासँ पूर्व यदि 'रिटायरमेन्ट' लऽ ली, तँ बेस मोट जमा पूजी भेटत । परिमलक दुख ओहिसँ मेटाओल जा सकैछ । ओकर बाद हम दुनू प्राणी गामे जा कऽ रहब ।'

मालतीक हुलसित मोन अकस्मात् 'धक'सँ रहि गेलनि । देवकी बाबूकेँ बुझबामे भांगठ नहि रहल । पत्नीक हाथ अपना हाथमे लऽ लेने रहथि । –'देखू ने, बाबूकेँ गेलाक बाद गामक घर, खेत-पथार सभ उजड़ल स्थितिमे अछि । हमरा लोकनि जँ ओकरा फेरसँ आबाद कऽ सकी तँ हुनकर आत्माकेँ बहुत शांति भेटतनि आ गाम-घरमे अपन लोक, समाज ....।'

मालती मुहँ ऊपर उठौने छलीह । आँखिसँ खसैत नोरक बुंद देवकी बाबू आँगुरपर उठा लेने रहथि ।

– मालो, एना नहि, अहाँ हमर अर्द्धांगिनी छी । सुख -दुखक सहचरी । अहाँक सहमति बिना हम किछु नहि कऽ सकैत छी । सन्तान तँ आत्माक अंश होइत अछि । ओकर खुशी लेल हमही सभ ने सोचब । बदलैत युगक संगहि चलब धर्म अछि । बाजू की कहैत छी ?

मालती सहमतिमे मूड़ी हिलौने छलीह । देवकी बाबूक मोन हल्लुक भऽ उठल छलनि । मोन पड़लनि बेटीक विवाह निश्चित भेलापर एहने अनुभव कयने रहथि ।

●

अपराजिता

कॉलेजमे वार्षिक प्रतियोगिता चलि रहल छल । एकटा कऽ 'आइटम' प्रत्येक दिन राखल जाइत रहय । पहिल दिन 'बैडमिंटन', दोसर दिन 'लूडो', तेसर दिन 'शतरंज' आ ओहि दिन 'कैरम' चलि रहल छल । प्रायः ओहि चारू दिनक प्रतियोगितामे भाग लैत एकटा खास आकृति पर हमर नजरि ठमकि जाइत रहय । नमगर, सुगठित देह, सुंदर मुखाकृति आ ओहि पर आमक फाँक सन दू टा कानकेँ छुबैत आँखि । पछिला तीनू दिनक प्रतियोगितामे तँ ओ कोनो स्थान नहिएँ आनि सकलि, ओहू दिनक प्रतियोगितामे तेहने सन क्रम छल । ओकर हारब, नहि जानि किएक हमरा नीक नहि लगैत छल ।

एक-एक दलक खेलाड़ी लग दू गोट प्राध्यापिकाक 'ड्यूटी' लगैत छल । एकटा बंगाली प्राध्यापिका आ हमर 'डयूटी' ओही टेबुलपर रहय, जतऽ हमर ओ अनभुआर प्रिय छात्रा खेलाइत छलि । हँ, अनभुआरे कहक चाही, कारण एक तँ कॉलेजमे अयना गोटेक मास भेल छल, दोसर ओतेक बेसी छात्राक जमातिमे सभक नामो-ठेकान जानब असम्भव । तेँ ओहि छात्राक सम्बन्धमे हम किछु नहि जनैत रही, मात्र एतबे जे ओ हमरा नीक लगैत छलि ।

ढील-ढाल कुर्त्ता, ओहिसँ मेल खाइत सलवार आ ओढ़नी ओकरा देहपर बहुत छजि रहल छलै । कान्हपर लटकैत कारी बैग आ कानमे पैघ-पैघ बाली बड़ आकर्षक लगै । नमगर आ घनगर केशकेँ हाथसँ उनटा कऽ खोपा बनौने रहय, जे खेलयबाक क्रममे बेर-बेर खुजि जाइक । केश खुजि कऽ पीठपर छिड़िया जाइक आ किछु लट मुँहपर आबि मुखशोभाकेँ द्विगुणित कऽ दैक । हमरा लागय जेना उज्जर दप-दप चन्द्रमापर कतहुसँ कोनो मेघक टिक्कड़ आबि गेल हो ! ओ सहज भावेँ 'एक मिनट' कहैत, दुनू हाथेँ

ओहि ढीठ केशकेँ खोपाक रूप दऽ दैक । मेघक टिक्कर छटलासँ जेना कोठली दपदपा उठय ।

'आउट' - एहि स्वरसँ तन्द्रा भंग भेल तँ देखलहुँ जे हमर ओ अज्ञातप्रिया हारि चुकल छलि । हमरा भीतर जेना कोनो भुकभुकाइत 'दीप' भक् दऽ मिझा गेल हो, मुदा ओकरा देखि अचम्भित रहि गेलहुँ । ओकरा मुँहपर पहिलुके स्निग्धता आ मुस्कान विद्यमान रहैक । खेलमे ओकर हारि ओकरा कोनो रूपेँ पराजित नहि कऽ सकलै । हमर सहकर्मी फुसफुसाइत कहलनि, 'अजीब लड़की अछि ! सभ दिन हारैछ, मुदा भाग लेबे करत । लाजो नहि होइत छै ।'

हुनकर एहन आलोचना हमरा नीक तँ नहिएँ लागल आ इहो भेल जे कतहु ओ सुनि वा बुझि तँ ने गेलि ? मुदा, ओकर कान छुबैत आँखिसँ भला किछु नुकायल रहि सकैत छल ! ओढ़नी ठीक करैत, सोझाँ आबि दुनू हाथ जोड़ि कहलक– दीदी माफ करब, स्कूलमे हमर एकटा संगी छल, ओहो जीतैत तँ कथूमे नहि छल, मुदा भाग सभ प्रतियोगितामे लैत रहय । ई अवगुण हम ओकरहिसँ सिखलहुँ । अहूँसभकेँ नीक नहि लागल हैत, तेँ क्षमाप्रार्थी छी ।'

ओकर स्वाभिमानी व्यक्तित्व आ आत्मविश्वाससँ भरल वक्तव्य क्षण भरि लेल बौक बना देलक । बंगाली प्राध्यापिकाक मुँहक रंग विवर्ण भऽ गेल छलनि । हम सहज होयबाक प्रयास करैत कहने छलिऐ– अहाँ तँ बड़ पैघ गुण अपन संगीसँ सिखने छी । जैह हारैत अछि, सैह जितितो अछि । एहिमे क्षमाक कोन बात ! हँ, अहाँक नाम की अछि ?' खेलक परिणाम लिखऽबला कागज हमरा हाथमे छल । मधुर मुस्कानक संग उत्तर भेटल 'यशोधरा सिंह, फोर्थ इयर' आ पुनः एक बेर हाथ जोड़ैत कोठलीसँ बाहर भऽ गेलि ।

मातृत्व ओ वीर रसक, केहन अद्‌भुत साम्य छल ओकर नाममे ! ठीके, ओहने साम्य तँ ओकर व्यक्तित्वोमे छल । सहज मुद्रामे नारीक प्रेमिका आ मातृत्व रूपकेँ साकार करय तँ दोसर रूपेँ अपन शांत आ गम्भीर मुद्रामे कोनो वीरांगनाक प्रतिमूर्त्ति सन लागय । सम्भवतः यैह रूप 'यशोधरा' नाम लेल हृदयक कोनो कोनमे बहुत पहिने बैसल छल, जाहि कारणेँ ममियौत छोट बहीनक नाम यैह रखबाक आग्रह मामीसँ कयने रहियनि । मामी अपन बेटीक नाम यैह रखबो कयलनि, परञ्च दिनपर दिन पैघ होइत ओहि यशोधरामे हमरा

ओ किछु नहि भेटि सकल जकर खोज हमरा छल । दिन बितैत गेल । जीवनक अनेक झंझावातसँ सामना होइत रहल । किछु छुटैत गेल, किछु भेटबो कयल, मुदा हमर ओ 'यशोधरा' एना जीवनक कोनो मोड़पर भेटि जायत, से कहाँ कहियो सोचने रही ?

'कविता पाठ'क प्रतियोगितामे सेहो ओ भाग लेने छलि । कवितामे ओहन किछु नहि रहय मुदा ढंगसँ ओकरा व्यक्त करबामे ओ पूर्णतः सफल भेलि रहय । हम धैर्यक संग परिणाम घोषित होयबा धरि बैसल रहलहुँ । आयोजिका पूरा लिस्ट पढ़ि गेलीह, मुदा ओ नाम कतहु नहि आयल, जकर हमरा प्रतीक्षा छल ।

कोठलीसँ बाहर अयलहुँ तँ बरंडापर दू-तीन संगीक संग खिलखिलाइत यशोधरापर नजरि पड़ल । मूड़ी नीचाँ कयने आगाँ बढ़ चाहलहुँ ।

'प्रणाम दीदी.........' स्वर पैरकेँ जकड़ि लेलक । नजरि उठौलहुँ तँ यशोधरा निर्मल दंतपंक्तिक संग आगाँ ठाढ़ि छलि । मुहँपर बलजोरी हँसी आनि ओकर पीठ थपथपौने रही– 'वाह, खूब नीक 'परफारमेन्स' रहल ।' एहिसँ बेसी किछु कहबाक स्थिति नहि छल । ओकर दुनू हाथ ओढ़नीक छोरकेँ आँगुरपर लपेटबाक क्रममे व्यस्त रहय । हम आगाँ बढ़ि गेलहुँ ।

आइ पहिल बेर ओकर नाम हमरा नीक नहि लागि रहल छल । ओकर नाम तँ 'अपराजिता' होयबाक चाहैत छलैक । ओकर हारि हमरा बेर-बेर विचलित कऽ दैत रहय, मुदा ओकरा लेल धन-सन । प्रतियोगिता आरम्भ होयबासँ पूर्व ओकर मुहँक मुस्की ओकर हारिक बादो पूर्ववत् बनल रहैक । कतहु कोनो कसरि नहि । यशोधरा नहि 'अपराजिता' ओकरा लेल सार्थक नाम छलै ।

अंतिम दिनुक प्रतियोगितामे लोकगीतक आयोजन कयल गेल छलै । ओना गीत-संगीतक अभिरुचि शुरूएसँ रहल अछि, परञ्च ओहि दिन निश्चित कयने रही जे ओहि आयोजनमे सम्मिलित नहि होयब । पुस्तकालयसँ निकलि मैदान टपबाक उपक्रममे रही, तावत एकटा सहकर्मी जोरसँ हाक देलनि । हुनकर हाकपर घुमबाक परिणाम भेल जे ओ हमर हाथ पकड़ने ओहि हॉल दिस बढ़ि गेलीह, जतऽ प्रतियोगिताक आयोजन चलि रहल छल । आजुक ओहि हॉलक सजाबटि किछु दोसरे छल । सुन्दर कालीन पर रंग-बिरंगक वाद्ययंत्र राखल

रहय । कालीनक एक भागमे रंग-बिरंगक पोशाक लगौने बैसल रहथि प्रतियोगी सभ । हॉलक तीन दिशामे पंक्तिबद्ध रहथि संगीतमे रुचि रखनिहारि प्रध्यापिकागण आ एक दिशामे सुसज्जित टेबुल लग निर्णायकगण लेल तीनटा कुर्सी लागल रहय ।

हम चारू भर नजरि खिरौलहुँ, हमर अपराजिता दृष्टिगोचर नहि भेलीह । किछु कचोट सन भेल । आइ किएक नहि ? केओ किछु कहि तँ ने देलकै ? तखनहि मुख्य द्वार लग गाड़ी रुकल आ ओहिसँ उतरलाह संगीत-विज्ञजन, जे ओहि प्रतियोगिताक निर्णायक छलाह । ओ लोकनि हॉलमे आबि अपन स्थान ग्रहण कयलनि ।

आयोजन शुरू भेल । प्रतियोगी छात्रा एक-एक कऽ निर्धारित स्थानपर आबि अपन-अपन कलाक प्रदर्शन करैत जाथि । अकस्मात् मुख्य द्वार दिस नजरि गेल आ यशोधराकेँ देखि विस्मित रहि गेलहुँ । हमर 'अपराजिता' धानी रंगक नूआ आंगीमे सजलि विद्यापतिक 'अभिसारिका' सन लागि रहल छलीह । अजन्ताक कोनो मोहक चित्रकेँ सजीव करैत ओकर देहक गढ़निकेँ पातर रेशमी नूआ नुकयबामे असमर्थ छल । हम सम्मोहित भेल ओकरा दिस तकैत रहलहुँ । पैघ-पैघ दुनू आँखिमे आइ काजरक रेखा सेहो छल आ कानमे छल मोतीक बुंदी लागल झुमका ।

चप्पल मुख्य द्वारपर राखि नहुँ-नहुँ डेगेँ यशोधरा कालीन केर एक कात भऽ बैसि गेलि । कतेकक ठोर पर एकटा विद्रूप हँसीक रेखा चमकल छल। हमरा कने ओकरापर तामस भेल । किएक ओ बेर-बेर असफल प्रयास कऽ हास्यास्पद बनैत अछि ? मोन भेल जे ओकरा डेन पकड़ि बाहर जाय कही, मुदा हम किछु नहि कऽ सकलहुँ । किछु नहि कऽ सकबाक यंत्रणाकेँ अनुभव करैत मूक भेल बैसलि रहलहुँ ।

एक दू-छात्राक कार्यक्रम भेलाक बाद यशोधराक नाम बाजल गेल । यशोधरा अपन स्थानसँ उठि, ओहि स्थानपर आबि गेलि, जतऽ प्रतियोगी सभकेँ बैसबाक छल । हारमोनियम मास्टर आ तबलावादक सहयोग देबाक उपक्रममे छलाह, मुदा ओ किछु मूड़ी डोलाय कहलकनि, तात्पर्य एहन बुझना गेल जे ओकरा सहयोगक आवश्यकता नहि छलै । दुनू तबलाकेँ अपनहिसँ आगाँ घीचि ओहिपर थाप दऽ जाँच कयलक । एकटा ठीक नहि बुझना गेलै तँ ओकरा

घुसका तेसर घीचि लेलक । ओकरा मुहँपर पसरल छलै आत्मविश्वास आ हमरा कोंढ़मे पैसल छल धुकधुकी ।

तखनहि यशोधराक स्वर-लहरी वातावरणकेँ शान्त कऽ देलक । सभक नजरि ओकरापर केन्द्रित भऽ चुकल छलै । गीतक बोल रहय- 'लाख टकाके मोरी बिंदिया............' आ नूआक रंगसँ मेल खाइत नाइलॉनक झिलमिल करैत ओकर टिकुली वास्तवमे हमरा तखन लाख टकाक लगैत छल । तबलापर पड़ैत ओकर हाथक थाप, गीतक सुन्दर बोल, स्पष्ट मुखाभिव्यक्ति, सभ किछु मिला-जुलाकऽ हमरा आह्लादित कऽ देने रहय । ओकर गीतपर बेर-बेर थपड़ी पड़ि रहल छल । हमर आनन्दक सीमा नहि रहय । आइ जँ ओ सहकर्मी हाक नहि देने रहितथि तँ हम कतेक पैघ खुशीसँ वंचित रहि जइतहुँ !

लोकगीतक प्रतियोगितामे यशोधराकेँ प्रथम होयबाक घोषणा कऽ निर्णायकगण जाइत गेलाह । खुशीसँ हमर आँखि भरि गेल रहय । हॉल धीरे-धीरे खाली भऽ रहल छल । हम कुर्सीपर मूर्तिवत् बैसल रहलहुँ । संगीसभसँ घेरायल यशोधरा हमरे दिस बढ़ल अबैत छलि ।

-दीदी, आइ तँ अहाँ प्रसन्न भेल होयब ने ? सभ दिन हम हारिते रही ।' वाक्य पूर्ण करैत ओकर स्वर आर्द्र भऽ उठल छलै । ओकर हाथकेँ अपन तरहत्थी बीच लैत भावविह्वल भऽ उठल छलहुँ, 'नहि यशोधरा, अहाँ कहियो नहि हारलहुँ, आ ने जीवनमे कहियो हारब, से हमरा विश्वास अछि ।'

कॉलेज बसक 'हार्न' बेर-बेर सुनबामे आबि रहल छल । यशोधरा हमरासँ विदा लऽ झटकल डेगेँ बस लग पहुँचलि आ लपकि कऽ बसपर चढ़ि गेलि । हम अपलक दृष्टिएँ ओकरा बसपर जाइत देखैत रहलहुँ । आइ मोन बड़ हल्लुक लागि रहल छल । 'यशोधरा' लेल हमर राखल नाम 'अपराजिता' आइ पूर्णत: सार्थक जे भेल रहय !

●



कमला चौधरी

- जन्म – 1953 इ०, बिरसायर, पण्डौल(मधुबनी) ।
- पिता – श्री कृष्ण कान्त झा
  अधिवक्ता, लहेरियासराय, दरभंगा ।
- माता – श्रीमती श्यामला झा
  भवानीपुर, पण्डौल(मधुबनी) ।
- पति – स्व. (इंजीनियर) कन्हैया चौधरी
  बसहा-मिर्जापुर, दरभंगा ।
- शिक्षा – एम.ए., पी-एच.डी.
- वृत्ति – अध्यापन, महंत दर्शन दास महिला महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।
- सम्प्रति – अध्यक्ष, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग,
  बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।
- प्रकाशन – **मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली**
  (शोध-प्रबंध/2008)
  समय-संकेत
  (कथा-संग्रह/2010)
- सम्पादन – **स्वाती** (त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका)
  (1984-85)

अभिलाषा प्रकाशन
दरभंगा